ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2016-17 अंक-8

ज्ञान महाविद्यालय

अलीगढ़ - 202 002 (उ.प्र.)

ज्ञान पुष्प : 2016-17

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण

श्रीमती आशा देवी	अध्यक्षा
श्री अवि प्रकाश मित्तल	उपाध्यक्ष
श्री दीपक गोयल	सचिव
श्री असलूब अहमद	कोषाध्यक्ष
डॉ. मधु गर्ग	सदस्य
श्री अनिल खण्डेलवाल	सदस्य
श्री इन्द्रेश कुमार कौशिक	सदस्य

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) का विशेष अध्ययन केन्द्र

ज्ञान महाविद्यालय आगरा रोड, अलीगढ़

इग्नू के RSD Notification No. : 00371G/RSD/Estt./LSC/Notification/2014/ 2960 Dated 8 Dec., 2014 के द्वारा ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ {कोड नं. 47036 (डी)} में निम्नांकित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है :

क्रमांक	कार्यक्रम	प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता	अवधि
1.	बैचलर ऑफ प्रोपेटरी प्रोग्राम	औपचारिक शिक्षा आवश्यक नहीं, न्यूनतम आयु 18 वर्ष	6 माह
2.	मास्टर ऑफ आर्टस इन सोशियोलॉजी	स्नातक	2 वर्ष
3.	मास्टर ऑफ आर्टस इन इकोनोमिक्स	स्नातक	2 वर्ष
4.	मास्टर ऑफ आर्टस इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	2 वर्ष
5.	पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	1 वर्ष
6.	डिप्लोमा इन बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग फाइनेंस एण्ड एकाउण्टिंग	अंग्रेजी विषय सहित कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों से 12वीं पास	1 वर्ष
7.	सर्टीफिकेट इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	6 माह
8.	सर्टीफिकेट इन टीचिंग इन इंग्लिश	स्नातक या 10+2 (2 वर्ष के अध्यापन अनुभव सहित)	6 माह
9.	सर्टिफिकेट इन एनवायरमेंटल स्टडीज	10+2	6 माह
10.	सर्टिफिकेट इन गाइडेन्स	मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक या मैट्रिकलेशन/एस.एस.सी. उत्तीर्ण या इग्नू से बी.पी.पी.	6 माह

उपर्युक्त कार्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक व्यक्ति विशेष अध्ययन केन्द्र के समन्वयक **श्री आर. के. शर्मा** (विभागाध्यक्ष बी.टी.सी.) ज्ञान महाविद्यालय, मो. 9219419405 आगरा रोड, अलीगढ़ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मोबाइल : 9837574326 (श्री आर. के. शर्मा), **मोबाइल :** 9219419405 (ज्ञान महाविद्यालय)

ज्ञान पुष्प

अंक 8

2016-17

संरक्षक

डॉ. वाई. के. गुप्ता
प्राचार्य

मुख्य सम्पादक

डॉ. ललित उपाध्याय

सह सम्पादक :

श्री आर. के. शर्मा
श्रीमती शिवानी सारस्वत
डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह
डॉ. एच.एस. चौधरी

परामर्शदाता :

श्री मनोज यादव
डॉ. हीरेश गोयल
डॉ. रत्न प्रकाश
डॉ. आभाकृष्ण जौहरी

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

(डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से सम्बद्ध)

Mobile : 9219419405 **E-mail :** gyanmv@gmail.com

Website : www.gyanmahavidhyalaya gyanparivar

जिनकी मधुर स्मृति आज भी उत्प्रेरक है

संस्थापक

स्व.डॉ. ज्ञानेन्द्र जी गोयल

22.09.1923 – 11.06.2002

समाज सेविका

स्व.श्रीमती स्वराज्य लताजी गोयल

22.09.1927 – 20.10.2011

श्रद्धांजलि

अज्ञान का जहाँ पर हो अँधेरा,
वहाँ ज्ञान का दीपक सदा जलता रहे।
चाँद-तारों तले चमकती रहे यह वाटिका,
यह मधुवन फूलों-सा दिन-रात सदा खिलता रहे।
हर बसंत में मोर-पपीहा करते रहेंगे सत्कार।
हम वन्दन, अभिनन्दन करें उनका बारम्बार।
श्रद्धांजलि दे और करें शत्-शत् नमन बारम्बार।

हवाएँ इस मधुवन की कलियों को,
कभी तोड़-मरोड़ सकती नहीं।
इस हरे-भरे पुलकित वैभवशाली भवन में,
ज्ञान की ऋतु महकना छोड़ सकती नहीं।
ज्ञान की पगडंडियाँ भी महक कर जताएँ आभार।
हम वन्दन, अभिनन्दन करें उनका बारम्बार।
श्रद्धांजलि दे और करें शत्-शत् नमन बारम्बार।

प्रातः स्मरणीय, वन्दनीय, पूज्यनीय गोयल साहब एवं उनकी धर्मपत्नी को शत्-शत् नमन्।

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह

ज्ञान पुष्प : 2016-17

माँ सरस्वती वन्दना

संगीत की देवी सरस्वती, साधो स्वर साज हमारा,
माँ मैंने तुम्हें पुकारा......................
बहरा भी श्रोता बन जाए, जिस पर हो कृपा तुम्हारी,
वाणी पुस्तक हाथ में सोहे, करती हो हंस सवारी।।
तार से तारो इस तन को, लाखों भक्त को तारा।।
माँ मैंने तुम्हें पुकारा......................
मुझे ताल स्वरों का ज्ञान नहीं, किस्मत मेरी चमका दो,
दीप जला दो आप ज्ञान का, वाणी मधुर बना दो।।
भक्तों ने माँ तुम्हें पुकारा, आकर दे दो सहारा।।
माँ मैंने तुम्हें पुकारा......................
ज्योति सी जलज के बीचों बीच में, अवतार तुमने पाया,
माँ शारदे सार आपका, जग न जान पाया।।
भटक रहा हूँ भवसागर में, दिखला दो आज किनारा।।
माँ मैंने तुम्हें पुकारा......................

शुभ संदेश

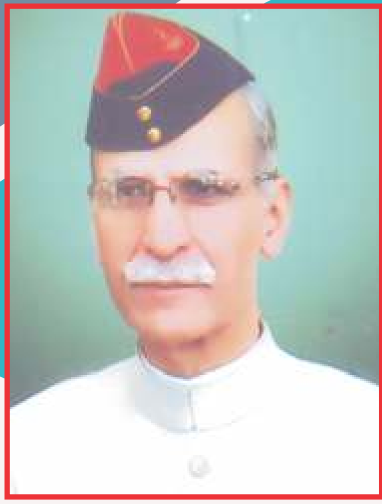

जमीर उद्दीन शाह
कुलपति
अ.मु.वि. अलीगढ़

Aligarh Muslim University
ALIGARH - 202002 (U.P.) India

Lt. Gen. Zameer Uddin Shah (Retd.)
PVSM, SM, VSM
Former Deputy Chief of Army Staff &
Member, Armed Forces Tribunal
Vice-Chancellor

Ph.: Off. +91-571-2700994/2702167
(Res) +91-571-2700173
Fax: (Off) +91-571-2702607
(Res) +91-571-2700087
Email: vcamu@amu.ac.in

दिनांक : 05.01.2017

1. मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ शीघ्र ही अपनी वार्षिक पत्रिका ``ज्ञान पुष्प'' के 2016–2017 अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।
2. छात्र–छात्राओं की लेखन कला एवं बौद्विक क्षमता के विकास एवं उनकी योग्यताओं को निखारने में कॉलेज एवं स्कूलों की वार्षिक पत्रिकाओं का बड़ा योगदान है।
3. मुझे आशा है कि उक्त पत्रिका द्वारा नवयुवकों की साहित्यिक क्षमताओं में वृद्धि होगी और इनमें से कई छात्र व छात्राएँ आगे चल कर साहित्य जगत में अपने लिए विशेष स्थान बनाएँगे।

ज़मीर शाह
05/1/17

(लेफ्टिनेन्ट जनरल ज़मीर उद्दीन शाह)

ज्ञान पुष्प : 2016-17

शुभकामना संदेश

सतीश चन्द्र जैन

MANGALAYATAN
U N I V E R S I T Y

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय

Prof. Satish Chandra Jain
Vice-Chancellor

Mobile No. +919690275275, 09837015466
E-mail: sc.jain@mangalayatan.edu.in
vc@mangalayatan.edu.in

महोदय,

हमें यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि आपके महाविद्यालय में विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करने के उद्देश्य से वार्षिक पत्रिका ``ज्ञान पुष्प'' का प्रकाशन किया जा रहा है। आपके इस सराहनीय प्रयास से युवा लेखकों, रचनाकारों तथा पाठकों को प्रेरणा मिलेगी।

हम आपके इस सराहनीय प्रयास की अपार सफलता की कामना करते हैं।

ससम्मान्

भवदीय

(सतीश चन्द्र जैन)

शुभकामना सन्देश

सतीश कुमार गौतम
संसद सदस्य (लोकसभा)
अलीगढ़

सतीश कुमार गौतम
संसद सदस्य (लोकसभा),
अलीगढ़
सदस्य, श्रम सम्बंधी स्थायी समिति
सदस्य, रेलवे समिति
सदस्य, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (कोर्ट)

14-सी, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन : 011-23355404
कार्यालय : 204, वैष्णो टॉवर, विद्यानगर,
रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ. प्र.)
मो. : 9457762404, फोन : 0571-2742425
ईमेल : satishgautambjp@gmail.com

दिनांक : 31.12.2016

महोदय,

आपके शिक्षण संस्थान द्वारा 'ज्ञान पुष्प 2016–17' वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि इस पत्रिका का नियमित वार्षिक प्रकाशन होता है। पत्रिका द्वारा शिक्षार्थियों की लेखन कला का विकास बहुत ही सरल एवं सुगम तरीके से होता है।

मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि इसी प्रकार से विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति उत्साह एवं उनके ज्ञान को और अधिक प्रकाशमयी बनाने के लिए ``ज्ञान पुष्प'' का प्रकाशन आप निरन्तर करते रहें। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अग्रिम बधाई।

शुभकामनाओं सहित!

(सतीश गौतम)

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमती आशा देवी
अध्यक्षा
ज्ञान महाविद्यालय सोसाइटी

हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका ज्ञान पुष्प 2016–17 का प्रकाशन कर रहा है। वार्षिक पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करने के साथ–साथ वर्ष के दौरान महाविद्यालय में हुयीं गतिविधियों का अभिलेखन करना भी है। इस वर्ष महिला उत्पीड़न पर गोष्ठी आयोजित कर सभी छात्राओं, प्राध्यापिकाओं तथा महिला कर्मचारियों को उनके कर्तव्य तथा अधिकारों के बारे में विश्लेषणात्मक चर्चा की गयी।

महाविद्यालय में आयोजित इंटैक हैरिटेज क्विज प्रतियोगिता – 2016 में अलीगढ़ जिले के 11 सीनियर सैकेण्डरी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर हमारी सांस्कृतिक विरासत को महत्व दिया। पी.एस.आर. आई. नयी दिल्ली ने महाविद्यालय में दो निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया, इससे महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गाँवों के मरीजों के साथ–साथ अन्य दूरस्थ क्षेत्रों के मरीजों ने भी नयी दिल्ली से आये चिकित्सा विशेषज्ञों की निःशुल्क सेवाओं का लाभ लिया। महाविद्यालय में महिलाओं के रोजगार हेतु अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किये गये है। कुल मिलाकर महाविद्यालय अपने संस्थापक डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी के आदर्शों के अनुरूप विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा देने के साथ–साथ रोजगारपरक कौशल भी प्रदान कर रहा है।

`ज्ञान पुष्प' के इस अंक की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीमती आशा देवी

हार्दिक शुभकामनाएं

दीपक गोयल
चेयरमेन
ज्ञान महाविद्यालय सोसाइटी

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि महाविद्यालय इस वर्ष अपनी वार्षिक पत्रिका ``ज्ञान पुष्प'' 2016–17 का प्रकाशन कर रहा है। इस वर्ष डिजिटल इण्डिया क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से अनेक विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन पुरस्कार स्वरूप दिए गए, इससे विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक अपनाने में प्रोत्साहन मिला है। महाविद्यालय में नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (एन.एस.डी.सी.), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलैक्ट्रोनिक इन्फोरमेशन एण्ड टेक्नोलॉजी (एन.आई.ई.आई.टी.) तथा कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, ये कार्यक्रम युवाओं को रोजगार के योग्य बनाने में सफल होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

रोजगार हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं तथा साक्षात्कार में सफल होने के लिए विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रक्तदान, वृक्षारोपण तथा मतदाता जागरूकता जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में प्रतिभाग करके हमारे विद्यार्थी तथा प्राध्यापकगण सराहनीय कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय की सामाजिक सरोकार समिति व राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यों में प्रतिभाग करके विद्यार्थी सामाजिक कार्यों को अपने जीवन का अंग बना रहे हैं। इसी प्रकार महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के 10वें वर्ष पर जिला, मण्डल एवं प्रदेश स्तर पर पर एन.एस.एस. टीम को सम्मानित किया गया, यह ज्ञान परिवार की संस्कृति `सेवा सर्वोपरि' को परिलक्षित करती है।

`ज्ञान पुष्प' के इस अंक की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

दीपक गोयल

प्राचार्य की डेस्क से

डॉ. वाई. के. गुप्ता
प्राचार्य
ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

आजादी के 70 वर्ष बाद भारत सरकार ने 8 नवम्बर, 2016 को एक बहुत महत्वपूर्ण आर्थिक कदम **'नोट बन्दी'** का उठाया और सरकार ने नकली करेन्सी की रोकथाम के लिए 'Cash less' व्यवस्था को अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। इसके अन्तर्गत महाविद्यालय ने भी एप्प डाउनलोड कराया एवं महाविद्यालय में भी जो नकद भुगतान होते थे, उनका भुगतान चैक या ई बैंकिंग से किया जा रहा है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में कदम से कदम मिलाते हुए **'ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट'** को प्रारम्भ किया गया। समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए अतिथि व्याख्यान, शैक्षिक भ्रमण, शिक्षा सम्बन्धी समाधान कक्षाएं, मौखिक साक्षात्कार, स्वच्छ लेखन प्रतियोगिता आदि शैक्षणिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, ज्ञानार्जन हेतु आयोजित की जाती हैं। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों के जनक महाविद्यालय के चेयरमैन श्री दीपक गोयल जी हैं और इन कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन हमारे ऊर्जावान, क्षमतावान डा. गौतम गोयलजी एवं प्रबन्धक श्री मनोज यादव जी के अप्रतिम सहयोग द्वारा ही हुआ सम्भव हुआ है।

शिक्षा समाज का ह्रदय है, जो एक पीढ़ी से होकर दूसरी पीढ़ी को जाता है और यह शिक्षा ही सत्य व असत्य और ठीक व गलत को अलग करने में हमारी सहायता करती है। शिक्षा के द्वारा ही एक मिट्टी रूपी बच्चे को संस्कारित और शिक्षित कर सुदृढ़ नागरिक बनाया जा सकता है। शिक्षा के इसी महत्व को अंगीकार करते हुए डा. ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वर्ष 1998 में अलीगढ़ शहर की आबादी के बाहर ग्रामीण क्षेत्र में आगरा रोड पर एक पौधा लगाया, जो प्रबन्ध समिति के समस्त पदाधिकारियों की सतत् लगन एवं स्टॉफ की कड़ी मेहनत से सींचकर आज विशाल बगिया का रूप ले चुका है। महाविद्यालय की इस बगिया में 'ज्ञान पुष्प' नामक आठवां पुष्प अपनी पूरी खुशबू और सौन्दर्य के साथ खिलखिला रहा है, जिसे पुष्पित और पल्लवित करने में विद्वान शिक्षकों के साथ-साथ गैर शिक्षणेत्तर वर्ग व उत्साही छात्रों का भी भरपूर योगदान रहा है।

महाविद्यालय के सुगमतापूर्वक व सफलतापूर्वक संचालन के लिए मैं महाविद्यालय प्रबन्ध समिति की मृदुभाषी, सहृदयी अध्यक्षा आदरणीय श्रीमती आशा देवी एवं कुशल पथ प्रदर्शक, विवेकवान सचिव आदरणीय श्री दीपक गोयल जी को हृदयाभार देना मेरा प्रथम कर्तव्य है। महाविद्यालय को प्रगति पथ पर ले जाने में ज्ञान परिवार के सभी सदस्यगणों का आशा से भी अधिक अपरिमित सहयोग मुझे मिला है, इसके लिए सभी का हृदय की गहराइयों से कृतज्ञ हूँ।

डॉ. वाई. के. गुप्ता

सम्पादकीय

डॉ. ललित उपाध्याय
मुख्य सम्पादक 'ज्ञान पुष्प'
ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

आज जहाँ विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है, वहीं शिक्षा की गुणवत्ता भी छीजती जा रही है। आधुनिक शिक्षाविदों ने नये शिक्षा सिद्धान्तों, शिक्षा-प्रशिक्षणों एवं नयी शिक्षा पद्धतियों से इसमें सुधार करने की पुरजोर कोशिश की किन्तु ये सब अपर्याप्त साबित हुए हैं, फिर भी हम आशा करते हैं कि आने वाला बेहतर कल इन्हीं शिक्षार्थियों के परिश्रम और मेहनत से निर्मित होगा। इन्हीं में से कुशल चिकित्सक, योग्य शिक्षक, दक्ष अभियन्ता, श्रेष्ठ लेखक, कवि, न्यायविद्, ईमानदार नेता एवं अभिनेता बनेंगे। ये ही देश एवं प्रदेश को चहुँमुखी विकास की ओर ले जायेंगे। इसलिए हम शिक्षकों का यह परम कर्त्तव्य है कि अपने पेशे के प्रति ईमानदार रहें तथा पाठशालाओं से चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करें।

आज के इस दौर में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की यह बात महत्वपूर्ण है कि युवाओं को नौकरी मांगने वाले की जगह नौकरी देने वालों की भूमिका में आना होगा। इस कड़ी में ज्ञान परिवार द्वारा नव स्थापित कौशल विकास केन्द्र युवाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगारोन्मुखी दिशा प्रदान करने की ओर अग्रसर हैं। छात्रों को आगामी परीक्षाओं में सफलता की शुभकामनाओं के साथ यह बात कहना प्रासंगिक होगी कि ......

सपने देखो और उसे पूरा कर दिखाओ, अपनी तमन्नाओं के पर फैलाओ।
चाहे लाख मुसीबतें रास्ता रोकें तुम्हारा, उम्मीदों के सहारे आगे बढ़ते जाओ।।

कुशल प्रबन्ध तंत्र द्वारा लगातार चौथी बार मुझे पत्रिका की जिम्मेवारी देकर मुझमें जो विश्वास व्यक्त किया है उससे मैं अत्यन्त रोमांचित हूँ ।`ज्ञान पुष्प' के अष्टम संस्करण के प्रकाशन की चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकारते हुए उसे अपनी पूरी क्षमता व लगन से पूर्ण करने का प्रयास किया है। महाविद्यालय का अष्टम अंक `ज्ञान पुष्प' को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्षानुभति हो रही है, जिसमें प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व विद्यार्थियों की कलम से निकले आलेख व रचनाएं सम्मिलित हैं, विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर की गई सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, शैक्षिक भ्रमण, अतिथि व्याख्यान, स्थापना दिवस, वार्षिकोत्सव, रक्तदान, मतदाता जागरूकता अभियान, कौशल विकास एवं मेधावी छात्र सम्मान आदि विभिन्न सहभागी क्रियाकलापों को पत्रिका में समाहित किया गया है।

संपादक मंडल व परामर्शदाता के समस्त सदस्यगणों की मेहनत व पूर्णनिष्ठा `ज्ञान पुष्प' को मूर्त रूप देने में सार्थक सिद्ध हुई है। मैं सम्पादक मण्डल एवं शिक्षकगणों के अपरिमित सहयोग के लिए हृदय की गहराईयों से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस ज्ञान के पुष्प को खिलाने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

महाविद्यालय के इस नवीन अंक को पुष्पित व पल्लवित करने में प्रबंध समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी, दूरदृष्टा व योग्य सचिव श्री दीपक गोयल, ज्ञान प्राईवेट आई.टी.आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल, प्रबन्ध समिति की सदस्या श्रीमती रितिका गोयल, प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता, प्रबंधक श्री मनोज यादव व प्रबन्ध समिति का योगदान मेरे लिए प्रेरणादायी रहा है। संपादन में विशेष सहयोग के लिए श्री विजय प्रकाश नवमान को भी हार्दिक धन्यवाद है।

(डा. ललित उपाध्याय)

प्राचार्य के साथ समस्त संकायों के प्राध्यापकगण

प्राचार्य के साथ शिक्षणेत्तर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीगण

विषय-सूची
(लेख)

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पद/विभाग/कक्षा	पृ.सं.
1.	राष्ट्रभाषा हिन्दी : अन्तराष्ट्रीय संदर्भ	डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह	प्रवक्ता, हिन्दी विभाग	1
2.	प्रतिभा पर आयु का सीमाबंधन नहीं	डॉ. विवेक मिश्रा	सहा. प्रोफेसर, समाजशास्त्र	7
3.	बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षक	डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा	अध्यक्ष, वाणिज्य संकाय	8
4.	विद्यार्थी जीवन एवं अनुशासन	डॉ. हीरेश गोयल	उप-प्राचार्य	9
5.	हिन्दी पत्रकारिता : कल और आज	डॉ. बीना अग्रवाल	सहायक प्रो., हिन्दी विभाग	11
6.	सत्य है पर कड़वा है	......	......	12
7.	धर्म के नाम पर चित्र-विचित्र परम्पराएँ	विनोद कुमार वर्मा	सहा. प्रो., राजनीतिशास्त्र	13
8.	खुशियाँ पाने के लिए लक्ष्य की आवश्यकता	रवि कुमार	प्रवक्ता, बी.टी.सी. विभाग	15
9.	बालक की तार्किक क्षमता महत्वपूर्ण	डॉ. ललित उपाध्याय	सहा. प्रो., समाजशास्त्र	16
10.	लक्ष्य के लिए जरूरी है अनुशासन	डॉ. ललित उपाध्याय	सहा. प्रो., समाजशास्त्र	16
11.	एकाग्रता आपके कार्यों में शक्ति भर देता है	रवि कुमार	प्रवक्ता, बी.टी.सी. विभाग	17
12	सफलता के नियम	रवि कुमार	प्रवक्ता, बी.टी.सी. विभाग	18
13.	वचन	....	....	18
14.	ज्ञान महाविद्यालय	रामबाबू लाल	कार्यशाला अधिकारी,आई.टी.आई.	19
15.	विकास के इंतजार में तंग गलियाँ	टीकम सिंह	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	20
16.	सच्चा बालक	विवेक कुमार	बी. एस-सी (तृतीय वर्ष)	21
17.	संगति का फल	विवेक कुमार	बी. एस-सी (तृतीय वर्ष)	21
18.	माँ की ममता	दीपांशु वार्ष्णेय	बी. एस-सी (द्वितीय वर्ष)	22
19.	खतरे	राखी कुमारी	बी. एड. (द्वितीय वर्ष)	22
20.	क्या आप जानते हैं ?	अंजली तौमर	बी. एस-सी (तृतीय वर्ष)	23
21.	जरा इन्हें भी जानिए	....	....	23
22.	इतने शुभ वचन मैंने कभी नहीं सुने	सचिन कुमार	बी.एड. (द्वितीय वर्ष)	24
23.	संसार के सोलह सत्य	मानिक वर्मा	आई. टी. आई. फिटर (प्र.वर्ष)	25
24.	मेरी सोच,	संचित पाठक	बी. सी. ए. (चतुर्थ सेमिस्टर)	25
25.	पैसा और इंसान	संचित पाठक	बी. सी. ए. (चतुर्थ सेमिस्टर)	25
26.	सच बनाम झूठ	पंकज कुमार	आई. टी. आई. इलैक्ट्रीशियन	26
27.	मेरे लघु जीवन के अनुभव	भोला सिंह	आई. टी. आई. इलैक्ट्रीशियन	27
28.	पिता का स्मरण	अनस मजीदी	बी. टी. सी.	28
29.	अवसर व समय	श्रद्धा माथुर	बी.ए. (प्रथम वर्ष)	29
30.	प्रमुखा देशों के शिक्षक दिवस	नवीन कुमार	बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)	29
31.	बेटे का गुस्सा और माँ का किस्सा	तनु रानी	बी.ए. (तृतीय वर्ष)	30
32.	मेहनत का फल	भूपेन्द्र कुमार	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	31
33.	क्या इंग्लिश एक हऊआ है ?	प्रिंस सक्सैना	बी.कॉम (द्वितीय वर्ष)	32
34.	बूझो तो जाने	रूबी	बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)	33
35.	संख्या का ज्ञान	सोनम	बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)	34
36.	जुनून न छोड़ें	तनु अग्रवाल	बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)	35

37.	स्वयं पर विश्वास करना सीखें	बिन्दु कुमारी	बी.ए. (प्रथम वर्ष)	35
38.	भारत में प्रथम	याशिका गुप्ता	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	36
39.	सबसे अनमोल तोहफा	याशिका गुप्ता	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	37
40.	जिसके हम मामा है!	रेनू शर्मा	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	38
41.	कंजूसी की हद	....	....	38
42.	पिता और पुत्र	तनु कुमारी	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	38
43.	सत्साहस	रेनू शर्मा	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	39
44.	डरना नहीं जिन्दगी से	किरन	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	39
45.	पढ़ाई और संगीत	शिवानी वार्ष्णेय	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	40
46.	कौन क्या है ?	पूजा सागर	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	40
47.	मेरे बेटे	आरती	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	40
48.	ज्ञान की बातें	....	....	43

पद्य

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पद/विभाग/कक्षा	पृ.सं.
1.	माँ	....	....	21
2.	थोड़ा-सा सम्मान	कविता	बी.ए. (द्वितीय वर्ष)	29
3	सुनो बन्धुओ, सुनो साथियो, आजादी की...	खजान सिंह	कम्प्यू. ओप. बी.टी.सी. विभाग	41
4.	शायरी	सचिन कुमार	बी.एड. (द्वितीय वर्ष)	42
5.	गज़ल	लोकेश कुमार	बी.कॉम (तृतीय वर्ष)	43
6.	हार कर मत बैठौ!	संगीता कुमारी	बी.एड. (तृतीय वर्ष)	43
7.	सोच को बदलो, सितारे बदल जायेंगे	आशू शर्मा	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	44
8.	किसान की दुर्दशा	आशा कुमारी	बी.ए. (तृतीय वर्ष)	44
9.	हिन्दी दिवस पर विशेष	कविता राजपूत	बी.एड.	44
10.	शिक्षक दिवस 'खास'	कविता राजपूत	बी.एड.	45
11.	बेटियों का घर	योगेश कुमार	बी.एस-सी. (प्रथम वर्ष)	46
12.	बेटियाँ बचाओ	राधा	बी.एस-सी.	46
13.	वक्त नहीं	अंजली तौमर	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	47
14.	मिटने का अधिकार	चिंकू तौमर	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	47
15.	एक नन्हा प्राणी चींटी	मोनिका सिंह	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	48
16.	मैं भारत में जन्मा हूँ...	गौरव कुमार पाठक	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	48
17.	नफरत की लाठी	कुमारी किरन धनगर	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	49
18.	आओ नया समाज बनाएँ	सिमरन आलम	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	49
19.	बेटी का दुःख	आकाश राघव	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	50
20.	मेरी अभिलाषा	गोलू कुमार	बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)	50
21.	उत्पीड़न या अत्याचार	आलोक नाथ राहुल	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	51
22.	देखा है एक ख्वाब!	शिवानी गुप्ता	बी. कॉम. (द्वितीय वर्ष)	51
23.	बेटियाँ	याशिका गुप्ता	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	52
24.	अहंकार	गौरव कुमार	बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)	53
25.	यादों के सहारे	लता कुमारी	बी.कॉम (द्वितीय वर्ष)	53
26.	प्यारी माँ	अंजली गौतम	बी.ए. (प्रथम वर्ष)	54
27.	भ्रष्टाचार	अंजली गौतम	बी.ए. (प्रथम वर्ष)	54
28.	माँ	पूजा यादव	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	55
29.	मेरी माँ	पूजा यादव	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	55

30.	नारी	प्रियंका रानी	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	56
31.	हिन्दी का मान	श्रद्धा माथुर	बी.ए. (प्रथम वर्ष)	56
32.	गुरु की महिमा	दीपेश कुमार	बी.ए. (तृतीय वर्ष)	57
33	भाई का इंतजार	संध्या सिंह	बी.ए. (तृतीय वर्ष)	57
34.	यादों का मेला	पुष्पराज शुक्ला	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	58
35.	भ्रष्टाचार	आकांक्षा कुमारी	बी.एड. (द्वितीय वर्ष)	59
36.	आतंकी को कैसे मिलता है साहस	पुष्पेन्द्र कुमार	बी.एड.	59
37.	बेटी की पुकार	प्रेम शंकर	आई.टी.आई. फिटर (प्रथम वर्ष)	60
38.	भूखा गरीब	दिशू कुमार शर्मा	बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)	61
39.	दिल की बात	फिरोज खान	आई.टी.आई. (प्रथम वर्ष)	62
40.	दोहा	फिरोज खान	आई.टी.आई. (प्रथम वर्ष)	62
41.	बाप	अनस मजीदी	बी.टी.सी.	63
42.	चाहते हो तो	रामबाबू लाल	कार्या. अधीक्षक, आई.टी.आई.	63
43.	भारत माता की जय	....	....	63

व्यंग

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पद/विभाग/कक्षा	पृ.सं.
1.	हंसो–हँसो	....	....	6
2.	चुटकुले	कृष्ण पचौरी	छात्र, आई. टी. आई.	18
3.	चुटकुले	रवेन्द्र कुमार	बी. ए. (तृतीय वर्ष)	28
4.	हंसी के ठिठोले	सोनम	बी. कॉम (प्रथम वर्ष)	34
5.	चुटकुला	....	....	44
6.	हँसो हँसाओ	....	....	56
7.	हास्य	....	....	60
8.	हास्य मन्जूषा	....	....	62

ENGLISH

S.No.	Article	Author's Name	Post/Deptt./Class	P. No.
1.	An Awareness About Snakes and its Poison (Venom)	Dr. Jyoti Singh	Ass. Prof., Zoology Deptt.	65
2.	Meaning of Mathematics	Arshad Khan	B. Sc. III years	66
3.	What is Mathmatics ?	Pushpendra Kumar	B. Sc. III Years (PCM)	66
4.	Do You Know ?	Radha	B. Sc. (ZBC)	67
5.	Appropriate use of Opportunity	Sonam Dubey	B. T. C. (2015)	68
6.	Life's Account	Shivani Gupta	B. Com. II Year	68
7.	Importance of Affection	Prince Saxena	B. Com. II Year	69
8.	Oh! This Examination	Neetu Kumari	B. T. C. IV Semester	69
9.	Key to Successful Students	-------------	---------------	69
10.	How can a Students Pass ?	Varsha Singh	B. Com. I year	70
11.	A Few Words	-------------	----------------	70

ज्ञान महाविद्यालय एक नजर में

1. इग्नू विशेष अध्ययन केन्द्र 64
2. महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति 71
3. महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्टें :
   ☛ वाणिज्य संकाय 73
   ☛ विज्ञान संकाय 73
   ☛ कला संकाय : 74
      ◆ हिन्दी विभाग
      ◆ अंग्रेजी विभाग
      ◆ समाजशास्त्र विभाग
      ◆ भूगोल विभाग
      ◆ अर्थशास्त्र विभाग
      ◆ मनोविज्ञान विभाग
      ◆ राजनीति शास्त्र विभाग
      ◆ गृह विज्ञान विभाग
      ◆ शिक्षा शास्त्र विभाग
   ☛ Department of Technology 76
   ☛ Department of Management 76
   ☛ शिक्षक-शिक्षा विभाग 76
   ☛ बी. टी. सी. विभाग 77
4. पुस्तकालय विभाग 79
5. राष्ट्रीय सेवा योजना 80
6. छात्र कल्याण समिति 82
7. शोध एवं प्रकाशन समिति 83
8. अनुशासन समिति 84
9. स्वराज्य स्वावलम्बी योजना 84
10. स्वराज्य ज्ञान योजना 84
11. अनुसूचित जाति- अनुसूचित जनजाति कल्याण समिति 86
12. रोजगार सलाहकार समिति 86
13. आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन समिति 86
14. खेल विभाग 87
15. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का विशेष अध्ययन केन्द्र 87
16. हैल्थ केयर सेन्टर 88
17. ज्ञान महिला कल्याण एवं शिकायत प्रकोष्ठ 88
18. साहित्यिक समिति 88
19. सांस्कृतिक समिति 89
20. ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट 89
21. ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान 91
22. विजिटर्स व्यू 95
23. ज्ञान महाविद्यालय – अखबारों की नजर से 96
24. सत्र 2016-17 में महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम : एक नजर में 99

लेख

राष्ट्र भाषा हिन्दी : अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ

✍.........
डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह
प्रवक्ता : हिन्दी विभाग

लगभग पचपन-साठ करोड़ लोगों की मातृ भाषा 'हिन्दी' विश्व में दूसरे नम्बर की भाषा है जो 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर आज अपने 'हक' का विनम्र दावा पेश करती है।

भाषा-वैज्ञानिकों के अनुसार दुनियाभर में 7,100 ज्ञात भाषाएँ हैं, पर इनमें से ज्यादातर भाषाओं का दायरा बहुत सीमित ही है। इन 7,100 भाषाओं में से महज 23 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संख्या पाँच करोड़ से अधिक है। संख्या में वे भाषाएँ भले ही कम हों, मगर इनका प्रभाव कम नहीं है। सर्वे के मुताबिक हिन्दी कुल बोलने वालों के लिहाज से तीसरी और मातृभाषा के लिहाज से दूसरी सबसे बड़ी भाषा है, जो कई देशों में लिखी-बोली जाती है।

जिस तरह हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होते हुए भी केवल आधे भारतीय ही हिन्दी जानते हैं, वही स्थिति चीन में चीनी की है और इंग्लैंड में अंग्रेजी की। अंग्रेजी संसार के मात्र पाँच देशों की भाषा है। इंग्लैंड में यानी ब्रिटेन में अंग्रेजी के साथ-साथ वेल्स, स्काटिश और आयरिश भाषा-भाषी भी हैं। कनाड़ा में अंग्रेजी के समानान्तर फ्रेंच भाषा भी चलती है। अमेरिका में सर्वत्र अंग्रेजी का ही वर्चस्व है, यह धारणा भी व्यर्थ है। वहाँ स्पेनिश भाषियों की संख्या करोड़ों में है। विश्व के मानचित्र में जहाँ हिन्दी तथा अंग्रेजी अथवा चीनी की यह स्थिति है, वहाँ भारत में अंग्रेजी की स्थिति और भी विस्मयकारी है। आंकड़ों के विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में हिन्दी जानने वालों की संख्या, कुल जनसंख्या का पचास प्रतिशत है, तो अंग्रेजी जाानने वाले केवल .58% मात्र ही हैं। अर्थात् एक प्रतिशत भी पूरा नहीं है।

गत 68 वर्षों में हिन्दी की शब्द-संख्या में जितना विस्तार हुआ है, उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ है। आज शब्द व जानने वालों की संख्या की दृष्टि से यह संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक मानी जाती है। अंग्रेजी जिसे महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का गौरव प्राप्त है, उसके मूल शब्द जहाँ मात्र 15 हजार हैं वहाँ हिन्दी के ढाई लाख से भी अधिक हैं।

विश्व में बिखरे हुए हिन्दी जानने वालों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वे देश जहाँ भारतीय श्रमिक दासों के रूप में, लगभग सौ-डेढ़-सौ साल पहले गए थे और आज वहाँ के प्रमुख नागरिकों के रूप में जिनकी गणना होती है। फीजी, मारिशस, गियाना सूरीनाम, त्रिनीडाड आदि। भोजपुरी, अवधी भाषी ये लोग आज भी वहाँ बहुत बड़ी संख्या में हैं।

दूसरे ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, नीदरलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, जर्मनी, नार्वे आदि। इसमें केन्या, यानी दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के अप्रवासियों को भी शामिल किया जा सकता है। दक्षिण-पूर्व एशिया में, यानी म्यांमार (वर्मा), थाइलैंड, सिंगापुर, मलेशिया में बसे हिन्दी-प्रेमी 'भारतीय मूल' के लोगों को भी। नेपाल की आधी से अधिक आबादी हिन्दी से परिचित है, यद्यपि शासन के स्तर पर, वहाँ सदैव हिन्दी की उपेक्षा की जाती रही है। थाईलैण्ड में हिन्दी जानने वालों की संख्या लगभग एक लाख है। इनमें अधिकांश लोग दूसरे विश्व युद्ध के समय वहाँ स्थायी रूप से बस गए थे। वर्मा में भारतीय मूल के लोग लाखों की संख्या में हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार से होने के कारण हिन्दी के प्रति इनका विशेष लगाव है।

जिन-जिन देशों या द्वीपों में भारतवंशीय बसे हैं, वहाँ हिन्दी को जीवित रखने में 'आर्य समाज' सनातन धर्म तथा अन्य धार्मिक संगठनों का विशेष योगदान रहा है। अपने घर की भाषा भोजपुरी, अवधी आदि को उन्होंने अपनी अस्मिता से जोड़े रखा, जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दी भी किसी न किसी रूप में अनेकों झंझाबातों के बावजूद वहाँ जीवित रही।

सन् 1910 में मॉरीशस में 'आर्य समाज' की स्थापना के पश्चात् हिन्दी को उस द्वीप में एक नई दिशा मिली। अपनी सभी पाठशालाओं में 'आर्य समाज' ने

हिन्दी को एक अनिवार्य विषय के रूप में मान्यता दिलाई। 1935 में जब भारतीय मूल के लोगों ने अपने आगमन की यहाँ शताब्दी मनाई तो हिन्दी के शिक्षण पर विशेष बल दिया गया। हिन्दी को अस्मिता के साथ-साथ अस्तित्व से भी जोड़ा गया, जिसका परिणाम है कि आज वहाँ अनेक संस्थाएँ सक्रिय हैं और हिन्दी एक नई दिशा-दृष्टि के साथ आगे बढ़ रही है। नन्हें से इस द्वीप ने कई प्रतिभाशाली लेखक हिन्दी को दिए। स्वर्गीय सोमदत्त बखोरी, उपन्यासकार अभिमन्यु अनंत, रामदेव धुरंधर आदि कई प्रतिभाएँ हैं, जिन्होंने हिन्दी की श्री वृद्धि में अपना विशेष योगदान ही नहीं दिया, बल्कि फ्रान्सीसी व अंग्रेजी के प्रबल प्रभाव के बीच हिन्दी के वर्चस्व को बनाए रखने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया।

आस्ट्रेलिया के निकट एक ओर छोटा सा द्वीप-फीजी है। जहाँ हिन्दी को हमेशा प्रतिष्ठा मिली। अनेक पत्र-पत्रिकाएँ वहाँ से प्रकाशित होती रही हैं। वहाँ के बाजारों में, दुकानों पर नामपट्ट अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखे रहते हैं। सड़कों के नाम भी दो भाषाओं में लिखे हैं। सरकार द्वारा भी हिन्दी को मान्यता मिली है। सन् 1916 में भारतीयों ने यहाँ अपनी पहली पाठशाला स्थापित की थी, जिसे आज एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। यद्यपि इधर वर्षों से वहाँ की राजनीति भारतीय मूल के लोगों के प्रतिकूल रही है, फिर भी हिन्दी-शिक्षण का कार्य एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह चल रहा है।

इण्डोनेशिया की भाषा तो 'इण्डोनेशियाई' है, परन्तु उनकी भाषा के 13 प्रतिशत से अधिक शब्द संस्कृत अथवा हिन्दी के हैं। वहाँ के रास्तों में 'डेंजर' या 'खतरा' नहीं, 'भय' लिखा रहता है। वहाँ की तीनों सेनाओं का जो समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहा है, उसका नाम 'त्रिशक्ति' है। सारा का सारा इण्डोनेशिया किसी न किसी रूप में भारतमय यानी हिन्दीमय लगता है।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मूल के लोगों का अपना विशिष्ट स्थान है। वहाँ का अधिकांशतः व्यवसाय भारतीयों के पास है। इसलिए हिन्दी तथा गुजराती भाषाओं को, अंग्रेजी-साम्राज्यवादी के बावजूद भी वहाँ पनपने का पर्याप्त अवसर मिला। पिछले अनेक वर्षों से जौहान्सवर्ग विश्वविद्यालय में हिन्दी के पूर्ण प्रशिक्षण का प्रबन्ध है। नेलसन मण्डेला प्रकाशन के पश्चात् वहाँ भारतीयों के विकास के अनेक द्वार खुले हैं। वहाँ की पाठ्शालाओं में हिन्दी पठन-पाठन की व्यवस्था की जा रही है। सन् 1908 में यहाँ प्रथम हिन्दी पाठशाला खुली थी, पर आज इस क्षेत्र में अनेक पाठशालाएं सक्रिय हैं। अफ्रीकी महाद्वीप के ही केन्या, उगाण्डा, जैम्बिया आदि अनेक देशों में रचतिली भाषा के माध्यम से, हिन्दी ही नहीं, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाएँ पढ़ाई जा रही हैं। कम्पाला, तंजानियाँ, नाइजीरिया में लाखों की संख्या में भारतीय हैं, जो आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध हैं। उनके द्वारा संचालित धार्मिक संस्थाएँ भी इस कार्य में सक्रिय हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के विकास में विद्यालयों/विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभागों का योग-दान कुछ कम नहीं। इस समय विदेशों के 136 विश्वविद्यालयों में हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था है। इनके अलावा छोटे-बड़े अनेक स्तरीय संस्थान हैं, वर्षों से हिन्दी सेवा के कार्य में संलग्न है।

अकेले जापान में 8 विश्वविद्यालय एवं संस्थान हिन्दी की पढ़ाई में जुटे हैं। लगभग तीन सौ जापानी छात्र हिन्दी सीख रहे हैं। जापान में हिन्दी का शिक्षण सर्वप्रथम अब से लगभग साठ साल पूर्व तोक्यो विश्वविद्यालय में प्रो. क्योंयो दोई ने आरम्भ किया था। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. ही नही, पी.एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की थी। उन्होंने 'गोदान' का मूल हिन्दी से जापानी में अनुवाद किया था, जिसकी पाँच लाख प्रतियाँ बिकी थी। जापान में 'आकाशवाणी' से नियमित रूप से हिन्दी के समाचार ही नहीं, अन्य साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रसारित होते हैं। ओसाका विश्वविद्यालय में भी उच्च स्तर पर हिन्दी के शिक्षण की व्यवस्था है। लगभग 20 वर्ष से जापान में 'सर्वोदय' नाम की एक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। अभी जापान में अप्रवासी भारतीयों ने अपने प्रयासों से एक नई हिन्दी मासिक पत्रिका 'जापान भारतीय' का प्रकाशन आरम्भ किया है। कुछ वर्ष से जापान हिन्दी-सेवा योशियाकि सुजुकि ने 'ज्वालामुखी' नामक पत्रिका प्रकाशित की थी, जिसमें छपने की शर्त यह थी कि केवल जापानी ही इसमें लिखेंगे और केवल हिन्दी में लिखी रचनाओं को स्थान मिलेगा। अभी हिन्दी कहानियों का जापानी में एक संकलन आया है।

लगभग दो सौ कोरियाई छात्र इन दिनों हिन्दी

सीख रहे हैं। सियोल स्थित विदेशी भाषाओं का विश्वविद्यालय हांकुक इस कार्य में प्रमुख रूपसे सक्रिय है। एम.ए. तक हिन्दी पढ़ाने की इसमें व्यवस्था है कोरियाई भाषा में हिन्दी कृतियों के अनुवाद का भी कुछ कार्य चल रहा है।

चीन में जहाँ पेइचिंग रेडियो प्रतिदिन हिन्दी के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है, वहाँ गत तीस वर्षों से 'सचित्र चीन' का हिन्दी संस्करण निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। भारतीय वाङ्मय के प्रति चीन में बड़ा आदर-भाव है चीनी इस सत्य को आज भी सहर्ष स्वीकार करते हैं कि चीनी भाषा के निर्माण में पाणिनी के व्याकरण का विशेष योगदान है। अनेक अन्तर्विरोधों के बावजूद चीन आज भी कहीं भारत लगता है।

श्री लंका के तीनों विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर तक हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। पाकिस्तान में पंजाब विश्वविद्यालय के साथ-साथ कराँची विश्वविद्यालय में भी हिन्दी पढ़ाई जाती है। हिन्दी-उर्दू में बहुत अन्तर होने के कारण व अनेकों अवरोधों के पश्चात् भी हिन्दी-उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी वहाँ खूब बोली जा रही है। पाकिस्तान के 'लोक सेवा आयोग' की परीक्षाओं में हिन्दी एक वैकल्पिक विषय है। वहाँ के कई शायर अपनी नज्मों में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शब्दों का प्रयोग खुले आम करते हैं। आखिर हमारी साझी संस्कृति का प्रभाव कहीं तो रहेगा।

सम्पूर्ण पश्चिमी दुनिया में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विश्वविद्यालयों का उल्लेखनीय योगदान है। यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया का शायद ही कोई स्तरीय विश्वविद्यालय हो जहाँ आज हिन्दी के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था न हो।

फिनलैंड के हेलसिंकी विश्वविद्यालय में गत अनेक वर्षों से हिन्दी पढ़ाई जा रही है। वहाँ के प्राध्यापक प्रो. बातिन तिक्के ने 'गोदान' का 'फिनिश' भाषा में रूपान्तर ही नहीं किया, बल्कि 'हिन्दी-फिनिश' शब्द कोष भी तैयार किया है। स्वीडन में सन् 1968 से हिन्दी-विभाग प्रारम्भ हुआ। वहाँ के प्राचीन विश्वविद्यालय उपशाला में स्टाकहोम विश्वविद्यालय में भी भारतीय विद्या का एक अलग समृद्ध विभाग है, जिसमें संस्कृत, तमिल, बांग्ला तथा हिन्दी साथ-साथ पढ़ाई जा रही है। इसी तरह नार्वे के ओस्लो विश्वविद्यालय में भी हिन्दी की विशेष व्यवस्था है। वहाँ हिन्दी तथा ईरानी परिवार की सभी भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। वहाँ के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. कुनुट क्रिनुट क्रिस्टियांसन फारसी, अरबी, पश्तू, बलूच, सिंधी, नेपाली के साथ भारत की प्रायः सभी भाषाएँ जानते हैं। विश्व में आज वह अकेले व्यक्ति हैं, जो इतनी भारतीय तथा अन्य भाषाओं के जानकार हैं।

युगोस्लाविया के जाग्रेव व बेल्ग्रेड विश्वविद्यालयों में गत 25 वर्षों से हिन्दी अध्ययन का कार्य चल रहा है। वुल्गारिया, हंगरी में हिन्दी का कार्य और भी बड़े पैमाने पर चल रहा है। हिन्दी साहित्य का प्रचुर मात्रा में अनुवाद भी हुआ है। पौलेंड इस दिशा में और भी आगे है। पोलैण्ड के भारत स्थित वर्तमान राजदूत प्रो. मारिया क्रिस्तोफ वृष्की संस्कृत और हिन्दी के जाने माने विद्वान हैं। पोर्नोवस्की ने 'गोदान' का अनुवाद पोलिश भाषा में किया था। 'प्राच्य विद्या संस्थान' की डॉ. दानूता स्टाशिक का योगदान भी अविस्मरणीय है। चेक गणराज्य का भारतीय साहित्य के प्रति विशेष मोह रहा है। **प्राग** स्थित चार्ल्स विश्वविद्यालय में गत सौ वर्ष से भी अधिक समय से संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था है आधुनिक-युग में हिन्दी के अनेक विद्वान ही नहीं, हिन्दी के सुप्रतिष्ठित कवि भी हैं। हिन्दी में लिखे आठ काव्य संग्रह इनके प्रकाशित हो चुके हैं। प्रो. वृष्की की तरह, ये भी इन दिनों भारत में चेक गणराज्य के राजदूत हैं।

डॉ. स्मेकल ने जहाँ 'गोदान' का चेक भाषा में अनुवाद किया, वहाँ डॉ. सारका लितविनोवा तथा डॉ. दागमार मारकोवा ने जैनेन्द्र, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, मोहन राकेश की कई कृतियों का अपनी भाषा में अनुवाद किया। रोमानिया के बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में भी हिन्दी का एक स्वतन्त्र विभाग हैं। वहाँ स्नातक स्तर तक हिन्दी का पाठ्यक्रम है। अनुवाद का भी कुछ कार्य हुआ है। गत तीस वर्षों में इस विभाग के माध्यम से अनुक रोमानियन छात्रों ने हिन्दी में महारत हासिल की। हिन्दी से रोमानियन में अनुवाद का भी कार्य चल रहा है।

फ्रांस में कुछ प्रबुद्ध अप्रवासी भारतीय इन दिनों एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं; जिसका उद्देश्य यह है कि यदि फ्रांस के लोग रोमन के स्थान पर देवनागरी लिपि अपनी भाषा के लिए अपना लें तो उन्हें कितनी सुविधा होगी। आज वे लिखते 'गाइडे माउपासण्ट' है, और पढ़ते है – 'गोद मोपाशा'। देवनागरी लिपि से उनकी ये सारी समस्याएँ सुलझ जाएगी। जैसे – लिखेंगे, उसे उसी तरह उच्चारित भी कर पायेंगे। आसान नहीं है, यह सब पर

एक सार्थक प्रयास तो है ही। फ्रांस के सौवन विश्वविद्यालय में पिछले अनेक वर्षो से हिन्दी पढ़ाई जा रही है। 'गोदान', 'मैला आँचल', 'त्यागपत्र' आदि कृतियों के फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद भी छपे हैं।

क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से बेलजियम छोटा सा देश है, परन्तु गत 35 वर्षों से वहाँ के घेंट, ल्युवेन और ल्येज विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन की व्यवस्था है। इटली का भारतीय साहित्य एवं दर्शन के प्रति विशेष आकर्षण रहा है। वहाँ के नेपल्स तथा वैनिस विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में अनेक इटालियन छात्र हिन्दी के अध्ययन में संलग्न है।

कभी अंग्रेजों का साम्राज्य था सारे विश्व में आज अंग्रेजी का है। किन्तु हिन्दी ने जो कीर्तिमान यहाँ स्थापित किए हैं, वह ऐतिहासिक महत्व का है। यह कम आश्चर्य की बात नहीं कि जिस हिन्दी की अपने ही देश में हम उपेक्षा करते हैं, आज सारे इंग्लैण्ड में अंग्रेजी के पश्चात् जो भाषा सबसे अधिक बोली जा रही है, वह हिन्दी ही है। केम्ब्रिज, यॉर्क तथा लंदन विश्वविद्यालयों में उच्चतम स्तर तक हिन्दी के पढ़ाए जाने की पूर्ण व्यवस्था है। लन्दन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी–हिन्दी प्राध्यापक डॉ. रूपर्ट स्नेल, हिन्दी के ही नहीं, ब्रजभाषा के भी अनन्य भक्त हैं। ब्रज भाषा में कविताएँ लिखते हैं। इन दिनों ब्रजभाषा के एक प्राचीनतम काव्य का अंग्रेजी में पद्यबद्ध अनुवाद कर रहे हैं। हिन्दी की कई कहानियों के अंग्रेजी रूपान्तर इन्होंने विश्व प्रसिद्ध पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए हैं। हिन्दी का ध्वज लन्दन तक फहराने का श्रेय इन्हें जाता है।

आधुनिक यूरोपीय भाषाओं में जर्मन सबसे अधिक संगत भाषा है, इसका कारण है, जर्मन भाषा के व्याकरण पर संस्कृत का गहरा प्रभाव। जर्मनी में संस्कृत तथा भारतीय भाषाओं के प्रति सदैव आदर का भाव रहा है। संस्कृत वहाँ अब से नहीं, डेढ़–दो सौ साल से विधिवत् पढ़ाई जा रही है। जर्मनी 17 विश्वविद्यालयों में आज हिन्दी के स्वतंत्र विभाग हैं। जर्मनी का रेडियो–कोलोन संसार का एकमात्र केन्द्र है, जहाँ संस्कृत में समाचार ही नहीं, प्रति सप्ताह नियमित रूप से संस्कृत में शोध पूर्ण आलेख भी प्रसारित किए जाते हैं।

डेनमार्क, स्विटजरलैंड, आस्ट्रिया, यूरोप के प्रायः सभी देशों में अनेक माध्यम से हिन्दी पढ़ाई जा रही है।

हिन्दी शिक्षण पर सोवियत संघ कभी अपना विशिष्ट स्थान रखता था। रूस सहित उसके सभी गणराज्यों में 34 से भी अधिक संस्थानों एवं विश्व–विद्यालयों में हिन्दी के पाठ्यक्रम चलते थे। सोवियत संघ के अतिरिक्त मंगोलिया, रोमानिया, आस्ट्रिया, पौलेंड आदि पूर्वी यूरोपीय देशों के छात्र उच्च हिन्दी शिक्षा के लिए लेनिनग्राद अथवा मास्को विश्वविद्यालयों में आते थे। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् हिन्दी पढ़ाने वाले संस्थान अभी भी उतने ही हैं, परन्तु राजनैतिक उथल–पुथल के कारण फिलहाल उनकी प्राथमिकताएँ बदल रही हैं। रूसी में हिन्दी पुस्तकों का जितना अनुवाद प्रकाशित हुआ, उतना शायद ही संसार की किसी भी भाषा में हुआ, परन्तु आजकल यह कार्य भी पूर्णरूपेण स्थगित–सा ही है। हाँ मध्य एशियाई देशों से भारत का व्यापार बढ़ रहा है, इससे आशा बंधती है कि हिन्दी शिक्षण का कार्य भी उन देशों में कुछ तीव्र गति से होगा।

कनाडा में भारतीय अप्रवासी कुछ कम संख्या में नहीं। पंजाब से गए लोग पंजाबी के साथ–साथ हिन्दी का भी प्रयोग करते हैं। वहाँ से हिन्दी में दो स्थानीय समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। वैंकवर, टोरंटो, मैगलिक, विडसर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग है। टोरंटो में आधुनिक ही नहीं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य भी वर्षों से पढ़ाया जा रहा है। इनके अतिरिक्त 'वैदिक–सभा', 'आर्य समाज', 'शान्ति निकेतन कल्वर कॉउन्सिल' आदि अनेक धार्मिक तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ हैं जो हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से संलग्न हैं। आस्ट्रेलिया के दो विश्वविद्यालय हिन्दी पढ़ा रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। वहाँ के 28 विश्वविद्यालय तथा अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से जुटी हैं। यों तो संस्कृत का अध्यापन वहाँ सन् 1815 से प्रारम्भ हो गया था, परन्तु उसका क्षेत्र पुरानी भाषा होने के कारण इतना व्यापक एवं विस्तृत नहीं था। सन् 1875 में अमेरिका में हिन्दी का व्याकरण तैयार किया गया था, जो आज भी अपनी उपयोगिता बनाए हुए हैं। गत अनेक वर्षों से मैक्सिको तथा अनेक लातिनी अमेरिकी देशों में हिन्दी विस्तार बढ़ा है। क्यूबा बेनेजुएला, कोलंबिया, पेरू, अर्जेन्टीना, चीली आदि इसके जीवन्त उदाहरण हैं।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् विश्वभर में हिन्दी को जो मान्यता मिली, वह विश्व की अनेक

भाषाओं के लिए दुर्लभ है। हिन्दी के इस जगत व्यापी प्रचार-प्रसार में चलचित्रों की भी अहम्-भूमिका रही है। हिन्दी फिल्मों के कारण हिन्दी भारत भर में ही नहीं फैली, बल्कि इसे कई सारे संसार में प्रबल आधार भी मिला है। जो लोग हिन्दी नहीं जानते, किसी भी भारतीय भाषा से परिचित नहीं -अनेक सागरों के पार एक दूसरी दुनिया में बसे हैं, उन्हें भी हिन्दी फिल्में रिझाती रही हैं। यह एक और विस्मय की बात है।

फीजी, मौरीशस, केन्या, युगाण्डा या मध्य पूर्व यानी मिडिल ईस्ट के देशों में तो हिन्दी चलचित्र खूब देखे जाते हैं, क्योंकि यहाँ भारतीय मूल के लोग रहते हैं, परन्तु लॉतीनी-अमेरिकी देशों में, जहाँ भारतीय संस्कृति का विशेष प्रभाव नहीं है, न ही भारतीय भाषाओं का ही किंचित ज्ञान है, वहाँ लाखों दर्शक स्पेनिश सब टाइटिल्स के साथ और कभी-कभी बिना सब टाइटिल्स के भी बडे चाब से देखते हैं।

पेरू में थोड़े से परिवार हैं अप्रवासी सिंधी व्यापारियों के उनके अनेकों छवि गृह हैं, जिनमें नियमित रूप से हिन्दी फिल्में दिखलाई जाती हैं।

दक्षिण पूर्व एशिया में भी हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता कुछ कम नहीं। इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, हाँगकाँग, मलेशिया में हिन्दी-फिल्मों के लिए अच्छा बाजार है। रूस मध्य एशियाई देश भी कम दीवाने नहीं। सुप्रसिद्ध रूसी विद्वान डॉ. प.अ. वारान्निकोव आजकल रूसी भाषा में हिन्दी-फिल्मों पर एक समाचार-पत्र निकाल रहे हैं, उसी से उनकी रोजी रोटी चल रही है। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् बहुत कुछ बदल गया है, परन्तु हिन्दी फिल्मों के लिए लगाव अभी तक बना हुआ है।

जर्मनी के हाईडल वर्ग शहर में रविवार को छवि गृहों में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की फिल्में प्रदर्शित की जाती हैं। अमेरिका के केलीफोर्नियां दूरदर्शन पर हर शनिवार को 'सिनेमा-सिनेमा' कार्यक्रम के अन्तर्गत नियमित रूप से हिन्दी फिल्में दिखलाई जाती हैं। इंग्लैण्ड के बी.बी.सी. दूरदर्शन पर 'महाभारत' इतना लोकप्रिय हुआ कि भारतीय ही नहीं, अन्य देशों के अप्रवासी ही नहीं, स्वयं ब्रिटेन के तरूण-वृद्ध भी अतीत के भारत की इस शौर्य गाथा पर मुग्ध हो गए थे। लोकप्रियता के इसने कई कीर्तिमान स्थापित किए थे।

सूरीनाम के दूरदर्शन पर दो बार इसका प्रदर्शन हुआ। जापानी दर्शकों ने इस धारावाहिक के संवादों को जोड़कर जापानी में 'महाभारत' की एक अलग पुस्तक तैयार कर डाली, जो बहुत लोकप्रिय हुई। तुर्की, ईराक, सउदी अरब, मिस्र, लीबिया, अल्जीरिया आदि इस्लामी देशों का भी हिन्दी फिल्मों के प्रति विशेष आत्मभाव रहा।

मिस्र के राष्ट्रपति नासिक एक बार भारत की यात्रा पर आए हुए थे। एक सायं उन्हें भारतीय फिल्म दिखाने का कार्यक्रम तय हुआ। नेहरू जी के सुझाव पर 'मदर इंडिया' का प्रदर्शन 'राष्ट्रपति-भवन' के सभागार में रखा गया। नेहरू जी ने कह तो दिया 'मदर इंडिया' के लिए, परन्तु उनके मन में किंचित संदेह था कि क्या पता राष्ट्रपति नासिक को पसन्द भी आए या न आए। सिनेमा समाप्त हुआ तो नेहरू जी ने यों ही औपचारिकतावश पूछा 'हमारी यह फिल्म आपको कैसी लगी ?' राष्ट्रपति नासिर ने हँसते हुए कहा 'बहुत अच्छी'। इससे पूर्व काहिरा में इसे मैं तीन बार देख चुका हूँ। यह चौथी बार है।' यह है हिन्दी फिल्मों की अपार लोकप्रियता।

दृश्य और श्रव्य-माध्ययों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए लिपि सीखने की आवश्यकता नहीं होती। देखकर सुनकर ही बहुत कुछ समझ में आ जाता है। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज तक ले जाने में हिन्दी सिनेमा, दूरदर्शन तथा रेडियो की विशेष भूमिका रही। उसे और अधिक व्यापक एवं विस्तृत बनाने में 'कैसेट कल्चर' का योगदान और भी उल्लेखनीय रहा है।

यह देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहा जाता कि इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, मॉरीशस, फीजी, त्रिनिडाड, मलेशिया, सिंगापुर, हाँगकाँग, जहाँ-जहाँ भारतीय, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी या नेपाली मूल के लोग रहते हैं, वहाँ भारतीय, पाकिस्तानी, तुर्की, ईरानी सभी की दुकानों में, सभी के लिए हिन्दी फिल्मों के कैसेट समान रूप से उपलब्ध रहते हैं। क्योंकि कैसेट जाति-धर्म या देशों की राजनीतिक सीमाओं पर विश्वास नहीं रखते, यानी पूर्ण रूप से धर्म-निरपेक्ष हैं, इन्हें बिना भेदभाव के सब देखते हैं।

हिन्दी फिल्में जो पर्दे तक सीमित थीं, अब करोड़ों लोगों के ड्राइंग रूम तक पहुँच गई हैं। सेटेलाइट के चैनलों ने इन्हें और सहज बना दिया है। सारी दुनियाँ में जितनी फिल्में आज हिन्दी की देखी जा रही हैं, उतनी ही शायद ही किसी भाषा की हों। 'हम आपके हैं कौन' फिल्म

की जितनी टिकटें खिड़की से बिकीं, उतनी आज तक संसार भर में किसी भी फिल्म की नहीं। हिन्दी की विश्वव्यापी लोकप्रियता के ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

जो दुर्दशा, उसी का प्रतिबिम्ब है यहाँ। वहाँ हिन्दी का मान बढ़ाइए, यहाँ स्वयं उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

इतना विशाल देश है हमारा 'संसाधन भी कम नहीं। हिन्दी को राष्ट्रसंघ की भाषा हम भी बना सकते थे– अरबी भाषा की तरह अपना अनुदान देकर। परन्तु हमारी प्राथमिकता में हिन्दी रही कब है? हिन्दी भाषियों का ही जब हिन्दी के प्रति उपेक्षा भाव है, तब औरों को दोष क्या दे? हम हिन्दी भाषी लगभग 46 करोड़ लोग हैं। हम ही सही रूप में हिन्दी अपना लें, तो राजभाषा, राष्ट्रभाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा स्वतः बन जाएगी। पर उस दिशा में हम सचेष्ट कहाँ हैं ?

धीरे-धीरे एक परिवर्तन आ रहा है अब विश्वभर में अपनी पहचान के प्रति लोग अधिक सचेत हो रहे हैं। भारत के बाहर भी एक भारत है, अनेक देशों में बिखरा। उसमें एक नई चेतना उभर रही है। जितनी अधिक भारतीयता, भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों में आज झलक रही है, उतनी हम रहने वाले भारतीयों में नहीं लगती। नार्वे, स्वीडन, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि अनेक देशों में आज अनेक हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। अनेक देशों के दूरदर्शन/ आकाशवाणी हिन्दी को प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं, जिससे हिन्दी की गरिमा बढ़ रही है।

हाँ थोड़ा-थोड़ा आत्म गौरव भी अब हम हिन्दी वालों में भी आने लगा है। स्वयं को भारतीय कहते हुए अब हम गौरव अनुभव करने लगे हैं। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की पहचान कराते हुए अब हममें वैसी हीन-भावना नहीं दीखती। हिन्दी की सबसे बड़ी शक्ति का आधार है इसका वैज्ञानिक आधार। यह आने वाले विश्व की भाषा वही बनेगी, जिसका आधार विज्ञान संगत होगा, जो कम्प्यूटर की भी भाषा होगी। इस दृष्टि से हिन्दी संसार की इनी-गिनी भाषाओं में से एक है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार विघ्न बाधाओं के बावजूद निरन्तर हो रहा है। दूब की तरह है हिन्दी। मिट मिटाकर भी पनपने की जिसमें अद्‌भुत श्रमता है। भाषा-विज्ञानियों का अनुमान है कि आने वाले समय में दुनियाँ में हिन्दी से भी अधिक प्रसार होगा- देवनागरी लिपि का। 21 वीं शताब्दी भारत की हो या न हो पर हिन्दी की अवश्य होगी।

हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के सम्बन्ध में युग दृष्टा विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था- 'जिस हिन्दी-भाषा के खेत में, भावों की ऐसी सुनहली फसल रही है, वह भाषा भले ही, कुछ दिन यों ही उपेक्षित पड़ी रहे, पर उसकी स्वाभाविक उर्बरता अक्षुण्ण रहेगी। वहाँ फिर हरीतिमा के दिन आएंगे और पौष मास में फिर 'नवान्न उत्सव' आयोजित होगा।

इस 'पावन-पर्व' पर इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ। ❑

हँसो-हँसो

- सीधा-साधा मोनू अपने मित्रों के साथ शादी की पार्टी में गया। वहाँ खाने की प्लेट में हाथ पोंछने के लिये कागज का रूमाल रखा था, उसने सोचा यह खाने की चीज़ है। जैसे ही वह खाने वाला था उसके सारे दोस्त जोर से हँसते हुए बोले – ये मत खा, फीका है।'
- **पति पत्नी से :** तुम बाहर जाती हो तो मुझे डर लगा रहता है।

  पत्नी : मैं जल्दी आ जाऊँगी।

  पति : मुझे बस इसी बात का तो डर लगा रहता है।

लेख

प्रतिभा पर आयु का सीमाबन्धन नहीं

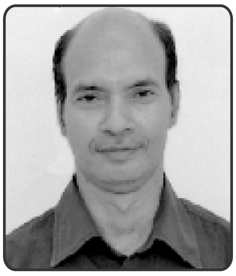

✍.........
डॉ. विवेक मिश्रा
असि.प्रो. समाज शास्त्र

सामान्य धारणा है कि प्रौढ़ावस्था में शरीर के साथ–साथ मनुष्य का मस्तिष्क भी ढलने लगता है और चिन्तन तन्त्र काम करना कम कर देता है, कल्पना शक्ति कमजोर पड़ जाती है व दिमाग की रचनात्मक सामर्थ्य क्षीण हो जाती है, पर वस्तुतः ऐसा नहीं है। संसार में अनेक महत्वपूर्ण कार्य लोगों ने ढलती आयु में सम्पन्न किये हैं। कई लोगों ने जीवन के इस पढ़ाव पर अनेक ऐसी रचनाएँ कीं, जो उन्हें अमर बना गईं।

ऐसे महापुरुषों में कुछ हैं – महान दार्शनिक सन्त सुकरात, प्लेटो पाइथोगोरस, होमर, आगस्टस, खगोलशास्त्रीय गैलीलियों, प्रसिद्ध कवि हेनरी बर्डसवर्थ, वैज्ञानिक थामस अल्वा ऐडीसन, वैज्ञानिक निकोलस, कोपर निकस, न्यूटन, सिसरो, अलवर्ट आइन्सटीन, टेनिसन तथा महात्मा टालस्टाय।

सुकरात ने साठ वर्ष पार करने के उपरान्त यह अनुभव किया कि बुढ़ापे की थकान और उदासी को दूर करने के लिये संगीत अच्छा माध्यम हो सकता है। अतः उन्होंने गाना सीखना प्रारम्भ किया और बजाना भी। यह क्रम उन्होंने मरते दम तक जारी रखा। वे साठ वर्ष की उम्र में अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्वदर्शन की विशद व्याख्या करने में जुटे हुये थे। यही बात प्लेटो के सन्दर्भ में भी। वे अपनी अस्सी की आयु तक बराबर कठोर परिश्रम करते रहे। 81 वर्ष की अवस्था में हाथ में कलम पकड़ हुए उन्होंने मृत्यु का आलिंगन किया।

टेनिसन ने 80 वर्ष की अवस्था में अपनी सुन्दर 'क्रासिंग द वार' दुनिया को प्रदान की। राबर्ट ब्राउनिंग अपने जीवन के सन्ध्याकाल में बहुत सक्रिय बने रहे। उन्होंने 77 साल की उम्र में मृत्यु से कुछ पहले ही दो सर्व सुन्दर कविताएँ ''रेवेरी और एवीलॉग टू आसलेण्डी'' लिखी। एच.जी. वेल्स ने 70 वर्ष की अपनी वर्षगांठ के उपरान्त भी पूरे चुस्त एवं कर्मठ रहते हुये एक दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना की। सिसको ने अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व 63 वर्ष की आयु में अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक ''ट्रीटाइज ऑन ओल्डएज'' की रचना की। कीरों ने 80 साल की उम्र में ग्रीक भाषा सीखी थी। प्लटार्क यूनान के माने हुये साहित्यकार हुये, उन्होंने 75 वर्ष की आयु के बाद लैटिन भाषा पढ़ना प्रारम्भ की। दार्शनिक फ्रेंकलिन की विश्वव्यापी ख्याति है, वे 50 वर्ष की आयु तक दर्शन शास्त्र से अपरचित रहे। इसके प्रति रूझान बाद में ही जन्मा और वह उन्हें विश्वविख्यात बनाकर ही रहा।

संसार में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हुये हैं, जिन्हें जीवन के पूर्वार्द्ध में विज्ञान का अक्षर–ज्ञान भी नहीं पता था, पर जीवन यात्रा के उत्तरार्द्ध में उन्होंने विज्ञान को अपनी बहुमूल्य सेवाएँ दी और मूर्धन्य विज्ञानी बने।

अनेक भारतीय मनीषियों ने भी जीवन के अन्तिम पड़ाव में ऐसी ही प्रतिभा का परिचय दिया है। बाणभट्ट ने अपनी अमर कृति 'कादम्बरी' का सृजन जीवन के अन्तिम दिनों में ही प्रारम्भ किया और उसे अधूरा छोड़कर चल बसे थे। इसके बाद उनके बेटे ने उस कार्य को पूरा किया। कालीदास की रुचि जीवन के उत्तरार्द्ध में साहित्य क्षेत्र में बढ़ी थी। आदि कवि कहलाने का सौभाग्य महर्षि बाल्मीकि ने अपनी प्रौढ़ावस्था में ही प्राप्त किया था। छायावाद के जनक कहलाने वाले कवि जयशंकर प्रसाद की जब मृत्यु हुई थी, तब वे 'इरावती' उपन्यास लिखने में जुटे हुए थे। जीवन के अन्तिम चरण में विनोवा भावे चीनी भाषा सीख रहे थे। संस्कृत के पारंगत सातवलेकर जब 75 वर्ष के थे तब उन्होंने वेदों का भाष्य प्रारम्भ किया और सारे आर्षग्रन्थों का सटीक अनुवाद कर ''जीवेम् शरदः शतम्'' की उक्ति सार्थक की।

पश्चिम एवं भारत के ये कुछ ऐसे मनीषी, विद्वान, वैज्ञानिक थे, जिन्होंने अपने बुढ़ापे में भी बड़े महत्वपूर्ण

शैष पृष्ठ 10 पर

बदलते सामाजिक परिवेश में शिक्षक की भूमिका

डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा
अध्यक्ष, वाणिज्य संकाय
ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसीलिए वह स्वभाव से गतिशील होता है। आज का सामाजिक परिवेश तीव्रगति से परिवर्तित हो रहा है। परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत सत्य है। अतः मानव समाज में सदैव परिवर्तन होता रहता है। मैकादवर एण्ड फेज ने सत्य ही कहा है कि ''समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है जो सदैव बदलता रहता है।'' कोई भी व्यवस्था किसी भी समाज में समय के परिवर्तन के अनुसार ही आवश्यक है। समय के साथ ही परिवर्तन के प्रति मनुष्य सजग नहीं रहता है तो वह भविष्य में अपना अस्तित्व खो देता है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, चरित्र, आचरण, मनोवृत्ति, भावनाओं आदि में परिवर्तन होते हैं। उनके कारण व्यक्ति सुसंस्कृत एवं सुन्दर जीवन व्यतीत करने की क्षमता के विकास के साथ-साथ विकासोन्मुखी समाज का भी निर्माण करता है। शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है जिससे मनुष्य अपने को परिवर्तनशील सामाजिक वातावरण में समायोजित करने में सक्षम होता है। परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश में अध्यापक की भूमिका निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक ही वह व्यक्ति है, जो अपने प्रयासों से किसी भी शिक्षा व्यवस्था एवं उसके उद्देश्यों को सफल बनाता है। वह समाज का नवसृजनकर्ता होता है। विद्यार्थी के विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों और संस्कारों को परिवर्तन एवं समय सापेक्ष बनाने का दायित्व शिक्षक के कंधों पर ही होता है। अतः बदलते सामाजिक परिवेश में विशेषकर निम्नलिखित सन्दर्भ में शिक्षक की भूमिका नितान्त महत्वपूर्ण है –

1. एक आदर्श मानव की संरचना में।

2. मानवमूल्यों व कार्यकुशलता के निर्माण में।

3. सामाजिक समरसता बनाए रखने में।

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति इस बात की गवाह रही है कि शिक्षक के अथक प्रयासों से आदर्शवादी शिक्षा द्वारा अपने शिष्यों के किये गये कल्याण से हमारा समाज प्रेरित है, भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका समय प्रवाह के साथ-साथ परिवर्तनशील रही है। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। इस प्रकार जो संस्कार व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाते हैं, उसे संस्कृति के नाम से जाना जाता है। गर्भाधान से लेकर मानव के पुनर्जन्म तक विविध संस्कार निर्मित होते हैं। माता के विचार तथा संस्कारों का प्रभाव गर्भस्थ बालक पर पड़ता है। जन्म होने पर नामकरण संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह संस्कार इत्यादि विविध संस्कार हैं। संस्कार ही व्यक्ति को मर्यादा में रखकर पूर्ण सामाजिक बनाते हैं।

आज स्थिति यह है कि हम न तो अपनी प्राचीन संस्कृति पर विश्वास करते हैं और न हम नवीन संस्कृति से परिचित हैं, परिणाम स्वरूप भारतीय नागरिक न नया है और न पुराना। उसकी कोई संस्कृति नहीं, वह भटकता रहता है। सांस्कृतिक संकट के इस काल में मार्गदर्शक की मुख्य भूमिका विशेष रूप से शिक्षक को ही निभानी होगी, जिससे आदर्श मानव की संरचना हो सकेगी।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से बालक अन्य प्राणियों की तरह पाशविक प्रवृत्तियों व विशिष्ट जैविक विरासत के साथ जन्म लेता है। उसे सामाजिक बनाना समाज का ही प्रमुख कार्य है। जो बालक सभ्य समाज का सानिध्य प्राप्त नहीं कर पाता है, वह मनुष्य होते हुए भी पशुवत जीवन व्यतीत करता है। शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है जो व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाती है। हारबर्ट ने सच ही कहा है, ''शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सद्गुणों की प्राप्ति होती है।''

अतः परिवर्तनशील परिवेश में शिक्षक की भूमिका से ही शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति तथा समाज की प्रमुख धारा निर्धारित होती है। शिक्षक चूँकि समाज एवं प्रकृति का सच्चा प्रतिनिधि है अतः उसे दोनों के लिए दायित्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, आतंकित विचारों एवं कुप्रभावों के स्थान पर वैज्ञानिक विचारधारा को विकसित करने में शिक्षक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ❑

ज्ञान पुष्प : 2016-17

College Topper's 2015-16

Akshay Kulshrestha

Busi. Admi. Group (A)
M.Com. (F)

Karishma Agrawal

Accounts & Law Group (B)
M.Com. (F)

Rameshwar Dayal Gautam

Busi. Admi. Group (A)
M.Com. (P)

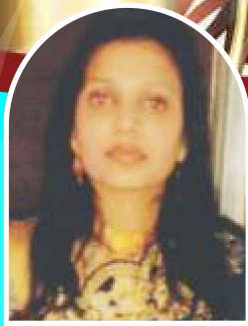

Richa Agrawal

Accounts & Law Group (B)
M.Com. (P)

Shobhina Varshney

B. Com. III

Deeksha Rathi

B. Com. II

Prince Saxena

B. Com. I

Babita Rani

B. A. III

Vijay Laxmi Gupta

B. A. II

Km. Neelam

B. A. I

Param Jyoti

B.T.C. Sem. IV
Batch 2013

Rupali Maheshwari

B. Ed.
2014-15

Shivam Varshney

B.C.A. IInd Year
2014-17

Anjali

B.C.A. Ist Year
2015-18

College Topper's 2015-16

Sarita Yadav
M. Sc. (P) Chemistry

Umashankar Sharma
M. Sc. (P) Chemistry

Yogesh Kumar
M. Sc. (P) Math's

Pankaj Chauhan
B.Sc. III (PCM)

Neha Saraswat
B.Sc. II (PCM)

Km. Neha Tomar
B.Sc. I (PCM)

Vidisha Sharma
B.Sc. III (ZBC)

Alok Nath Rahul
B.Sc. II (ZBC)

Monika Singh
B.Sc. I (ZBC)

Jai Prakash Sharma
B.B.A. IInd Year
2014 - 17

Prashant Upadhyay
B.B.A. IInd Sem.
2015 - 18

Jaya Gupta
B.B.A. Ist Sem.
2015 - 18

वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्ज्वलित कर
उद्घाटन करते हुए अतिथिगण

मुख्य अतिथि डा. अंजना बंसल (प्राचार्या, धर्म समाज महाविद्यालय)
का स्वागत करती बी. एड. विभागाध्यक्षा डा. ए. के. जौहरी

वार्षिकोत्सव में उपस्थित मंचासीन अतिथिगण,
छात्र–छात्राएं व प्राध्यापकगण

वार्षिकोत्सव पर छात्राओं द्वारा रंगारंग प्रस्तुति

मुख्य अतिथि डा. अंजना बंसल व अध्यक्ष श्रीमती आशा देवी
बी.ए. तृतीय वर्ष के टॉपर नरेन्द्र कुमार को सम्मानित करते हुए

विशिष्ट अतिथि द्वारा बी.एस–सी. के छात्र को सम्मानित करते हुए

'ज्ञान पुष्प' पत्रिका के सप्तम अंक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि डा. अंजना बंसल (प्राचार्या डी.एस. कालिज), वि. अतिथि डा. बीना अग्रवाल, श्री दीपक गोयल, श्रीमती आशा देवी, श्री अनिल खंडेलवाल, प्राचार्य डा. वाई.के. गुप्ता, प्रबंधक श्री मनोजयादव, डा. ललित उपाध्याय, डॉ. एस. एस. यादव

अतिथियों द्वारा प्रतिभावान छात्र–छात्राओं का सम्मान

ज्ञान महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि डा. अंजना बंसल व अध्यक्ष श्रीमती आशा देवी,
सचिव दीपक गोयल द्वारा प्रतिभाशाली छात्रा का सम्मान

मुख्य अतिथि डा. अंजना बंसल (प्राचार्या धर्म समाज कालिज)
को प्रतीक चिन्ह देते श्री दीपक गोयल व डा. वाई.के. गुप्ता

वार्षिकोत्सव में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा रंगारंग प्रस्तुति

अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी व रितिका गोयल, डा. गौतम गोयल ने
विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रतिभा शर्मा को सम्मानित किया

बी.टी.सी. के छात्रों को सम्मानित करते हुए
विशिष्ट अतिथि प्रतिभा शर्मा व अन्य

अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी ने प्रबंध समिति के सदस्य
श्री अनिल खंडेलवाल का सम्मान किया

विद्यार्थी जीवन एवं अनुशासन

डॉ. हीरेश गोयल
उप–प्राचार्य,
ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

विद्यार्थी का अनुशासन से गहरा सम्बन्ध है। विद्यार्थी का अर्थ, विद्या+अर्थी = विद्या चाहने वाला, अर्थात् विद्या प्राप्ति की जिज्ञासा रखने वाले को ही विद्यार्थी की संज्ञा दी जाती है। विद्यार्थी जीवन वह जीवन है, जिसमें छात्र ज्ञानार्जन करता है। उसके इस जीवन पर ही सम्पूर्ण जीवन आधारित होता है। अतः छात्र जीवन सम्पूर्ण जीवन का स्वर्णिम प्रभात है। जिस प्रकार प्रभात का समय सुन्दर सुखद होता है, उसी प्रकार छात्र जीवन भी आनन्द से परिपूर्ण होता है।

विद्यार्थी को अनुशासन नहीं भूलना चाहिये। अनुशासन अनु उपसर्ग पूर्वक शासन शब्द से निर्मित है, जिसमें किसी अन्य का शासन न होकर स्वयं का शासन होता है। अनुशासित विद्यार्थी का यह समय अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बनाने का उत्तम समय माना जाता है।

किसी कवि ने कहा है –

''मानव जीवन सफल बनाने का यह उत्तम साधन।
ठीक बिताये नियमपूर्वक छात्र अगर निज जीवन॥''

अनुशासन में रहकर ही विद्यार्थी को विद्याध्ययन करना चाहिये। प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरू के आश्रम में रहता था और विद्याध्ययन करता था। विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताये गये हैं –

''काक चेष्टा, वको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैवच।
अल्पहारी, गृह त्यागी विद्यार्थी पञ्च लक्षणम्॥''

अनुशासन में रहकर इन गुणों को अपने जीवन में उतारना ही विद्यार्थी का परम कर्तव्यहोना

चाहिये, सुख चाहने वाले विद्यार्थी को विद्या प्राप्त करना उसी प्रकार कठिन है जिस तरह धनवान का स्वर्ग जाना कठिन कहा गया है –

''यतो विद्या कुतो सुखम्।
यतो सुखम्, कुतो विद्यां॥''

विद्यार्थी जीवन ही ऐसा जीवन है जिसको पार करके ही मनुष्य व पशु में अन्तर होता है अर्थात् विद्या ही वह धन है, जो मनुष्य को पशु से अलग करता है –

''येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृर्त्ये लोके भुविभार भूता
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति॥''

विद्वान पुरुष का हर जगह सम्मान होता है। विद्वान राजा से बढ़कर होता है। राजा की अपने देश में पूजा होती है परन्तु विद्वान सभी जगह पूजा जाता है।

''राजा स्वदेशे पूज्यते, विद्वान सर्वत्र पूज्यते॥''

विद्यार्थी जीवन वह जीवन है जिसमें मनुष्य अपने भावी जीवन की तैयारी करता है। सुख और विद्या आपस में विरोधी हैं परन्तु विद्या सुख की जननी है।

''विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनात् धर्म ततः सुखम्॥''

अनुशासन व्यक्ति को महान बनाता है। निषाद पुत्र धनुर्धर एकलव्य के अनुशासन एवं गुरू के प्रति श्रद्धा भाव से विद्वान जगत एवं साधारण जगत अपरिचित नहीं है। कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं है जिसमें विद्वानों ने अनुशासन का महत्व नहीं बतलाया हो, अनुशासन वह महान पर्व है जिसमें सहभागिता करके विद्यार्थी अपने जीवन को सफल बनाता है। अनुशासन के बिना जीवन असम्भव है। सदाचारी ही दीर्घायु, धनवान एवं यशवान बनता है।

''आचाराल्लभते वृपापुराचारल्लते जियम्।
आचारत् कीर्ति मप्नोति पुरूष प्रन्यचह च॥''

अनुशासन विद्यार्थी को सफल बनाता है और

अनुशासनहीन विद्यार्थी का जीवन अन्धकारमय होता है। अनुशासनहीनता का मुख्य कारण हमारी शिक्षा प्रणाली का दोषपूर्ण होना है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थी का जीवन निर्माण एवं चरित्र निर्माण करना होना चाहिये, लेकिन आज की शिक्षा केवल कागज (अभिलेखों) तक ही सीमित है, आधुनिक शिक्षा में अनुशासन केवल नाम के लिये रह गया है।

वर्तमान युग में विद्यार्थियों की अनुशासन-हीनता बढ़ने के अनेक कारण हैं। सबसे पहला कारण अभिभावक वर्ग की उदासीनता, दूसरा कारण विद्यार्थी का राजनीति में प्रवेश तथा तीसरा कारण चलचित्रों एवं प्रौद्योगिकी का गलत उपयोग है, जिससे फैशन-परस्ती एवं आपराधिक कृत्यों में विद्यार्थियों की संलिप्तता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

विद्यार्थी में अनुशासन की भावना पैदा करने के लिये शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन आवश्यक है। यदि अनुशासन की इसी तरह उपेक्षा होती है तो हमारी भावी पीढ़ी का सही निर्माण नहीं हो सकता है। नेहरू जी ने कहा था –

''छात्र की अतिरिक्त शक्ति को यदि दूसरी ओर मोड़ दिया जाये तो अनुशासनहीनता समाप्त हो सकती है''

इस कथन से उनका तात्पर्य रचनात्मक शिक्षा से था, परन्तु देश की विषम परिस्थितियों के कारण वे भी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान न दे सके। वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी अनुशासन पर विशेष बल देकर कहा है कि अनुशासन ही किसी देश को महान बना सकता है।

अनुशासन ही जीवन का सार है। विद्यार्थी इस तत्व को भलीभाँति समझ लें तो उनका जीवन सफल हो जायेगा। इस प्रकार विद्यार्थी जीवन और अनुशासन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अनुशासन ऐसी सुन्दर भावना है जो विद्यार्थी के चरित्र को ऊँचा बनाती है। विद्वानों का यह मत ठीक ही है कि – बिना अंकुश का हाथी और अनुशासन रहित विद्यार्थी विनाश की ओर जाता है। विद्यार्थियों में अनुशासन पैदा करने के लिये आतंक तथा बल प्रयोग नहीं करना चाहिये, यह तो आत्म नियंत्रण व स्वेच्छा से ही सम्भव है। ❑

पेज 7 का शेष ....

एवं उपयोगी काम करके मानवता की अपूर्व सेवा की। देश-विदेश में ऐसी प्रतिभाएँ सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में ही पैदा नहीं हुई। राजनीति के क्षेत्र में भी अनेक ऐसे नक्षत्र जन्में, जो वृद्धावस्था के बावजूद राजनीति में अपना वर्चस्व बनाए रहे। महात्मा गांधी, विन्स्टन चर्चिल, वैन्जामिन फ्रेंकलिन डिजरैली, ग्लेडस्टोन आदि ऐसे ऐतिहासिक पुरुष हैं, जो अपनी वृद्धावस्था की चुनौतियों के बावजूद बहुत सक्रिय बने रहे और अपने देश की अमूल्य सेवा में वे अनवरत रूप से लगे रहे।

ये सारे उदाहरण इन बातों के साक्षी हैं कि आयु मनुष्य की रचनात्मक क्षमता में तनिक भी बाधक नहीं। ईश्वर ने हममें असीम क्षमताओं का समावेश किया है। हम उसका आधा ही उपयोग कर पाते हैं। इसे हमारी भूल ही कहनी चाहिये जो हम मान बैठते हैं कि समय के साथ-साथ हमारी मानसिक क्षमताओं का ह्रास होने लगता है। यदि इस भ्रान्ति से बच सकें तो हर व्यक्ति जीवन पर्यन्त अपनी मानसिक शक्ति का उपयोग कर लाभान्वित होता रह सकता है। ❑

लेख

हिन्दी पत्रकारिता : कल और आज

✍.........
डॉ. वीना अग्रवाल
सहा. प्रो. हिन्दी विभाग

मानव जीवन में पत्रकारिता का बड़ा महत्व है। भारतीय पत्रकार हिन्दी व अन्य भाषाओं के पत्रकार के रूप में अपनी देशभक्ति के लिए बड़े विख्यात थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने अपूर्व त्याग व बलिदान दिया था। देश की स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीयता का प्रचार करना वे अपना कर्तव्य समझते थे।

जनसंचार के लिए सबसे प्रबल कड़ी पत्र–पत्रिकाएँ ही रहीं, जिसमें प्रिंट मीटिया का महत्व सदैव बना रहेगा। आज चाहे प्रिन्ट मीडिया रेडियो, टेलीविजन अथवा इंटरनेट या किसी भी माध्यम से खबरों के संचार को पत्रकारिता कहा जाता है, किन्तु शुरू में सिर्फ प्रिंट माध्यमों के जरिये समाचारों के आदान–प्रदान को ही पत्रकरिता कहा जाता था और लोगों तक सूचनाओं को पहुँचाने का काम किया जाता था। विश्व में अखबारी पत्रकारिता के अस्तित्व को आये हुए 400 वर्ष से अधिक हो गये हैं, किन्तु, भारत में इसकी शुरूआत **'जेम्स ऑगस्ट हि को'** के बंगाल गजट 1780 से हुई, जो कोलकाता से निकलता था, लेकिन हिन्दी का प्रथम साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' भी सन् 1826 में कोलकाता से पं. जुगल किशोर शुक्ल के सम्पादन में निकला था। हिन्दी भाषा के विकास में शुरूआती समाचारों व पत्रिकाओं ने काफी भूमिका निभाई, जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

मुद्रित अर्थात प्रिंट माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे प्राचीन है। वास्तव में आधुनिक युग की शुरूआत ही छपाई के आविष्कार से हुई है।

पिछले पच्चीस वर्षों में बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। पत्रकारिता का समीकरण बदला है। कल तक जो विशेषज्ञ या पत्रकार हिंदी बोलने में अपमान महसूस करते थे, वे आज टी.वी. पर फटाफट हिन्दी बोलते हैं। अन्य भारतीय भाषाओं की प्रिंट मीडिया में भी बदलाव आया है। तथ्यों को वस्तुगत ढंग से सामने रखने की प्रक्रिया भले ही न बदली हो, पर कागज कलम के लिए पुराना दौर काफी बदल गया है क्योंकि प्रेस कॉन्फ्रेंस में कैमरा, वीडियो कैमरा, टेप रिकार्डर का बोलवाला हो गया है।

नई पीढ़ी के लिए इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता तथा साइबर पत्रकारिता एक आदत बन गयी है। जो लोग इंटरनेट के आदी हो गये हैं, उन लोगों को कागज पर छपे हुए समाचार उतने अच्छे नहीं लगते, क्योंकि उनको अपने को अपडेट करने की आदत बढ़ती जा रही है।

इन्टरनेट पर समाचारों का प्रकाशन अथवा अखबारों का आदान–प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता मानी जाती है। इंटरनेट पत्रकारिता की शुरूआत का पहला दौर 1982 से 1992 तक चला। 1993 से 2001 तक दूसरा दौर रहा। तीसरा दौर 2002 से चल रहा है। आज पत्रकारिता की नज़र में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' हिन्दुस्तान, पायनियर, आई. बी. एन., जी–न्यूज आदि साइटे हैं, जो नियमित रूप से अपडेट होती हैं। भारत में सच्चे अर्थों में अगर कोई वेब पत्रकारिता है तो वह डॉटकॉम, रीडिफ, इंडिया इंफोलाइन और सीफी है। रीडिफ को भारत की प्रथम साइट कहा जाता है।

इन बदलावों के कारण लोगों के दिलों में एक क्रान्ति सी जगी है। सारी दुनिया की खबरें मिलना इतिहास के किसी भी दौर में सम्भव न था। लेकिन आजकल हम घर बैठे कुछ भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, पहले हर पाँच साल में या दस साल में कोई नई तकनीक आती थी, लेकिन आज पत्रकारिता काफी बदली है– प्रभाव, पैसा तथा पावर तीनों कारण से । इन सारी खूबियों और बदलावों ने नौजवानों (लड़के – लड़कियों) को अपनी और आकर्षित किया है और प्रतिद्वन्दिता को बढ़ावा दिया है।

हिन्दी पत्रकारिता का प्रारम्भ 1868 में **'वृतांत**

दर्पण' नाम पत्रिका के साथ हुआ। हिन्दी पत्रकारिता में इलाहाबाद का पहला बड़ा योगदान 1871 में **'हिन्दी प्रदीप'** के प्रकाशन के साथ हुआ। भारतेन्दु जी ने इसकी स्थापना हिन्दी प्रचार को बढ़ाने के लिए की। **हिन्दी प्रदीप** में छपे सभी लेखों में उत्तेजना के स्वर होते थे, इसलिए 1978 में **वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट** पारित होने के बाद इस पत्र को प्रकाशित करने में परेशानियाँ बढ़ गईं और हिन्दी प्रदीप को बंद करने का निर्णय लिया गया। श्री बालकृष्ण भट्ट ने हिन्दी प्रदीप पत्र का सम्पादन कार्य 31 वर्षों तक सम्भाला।

सन् 1900 में हिन्दी पत्रकारिता के द्वारा एक नए युग का आरम्भ हुआ, जिसमें सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा को संस्कारित किया गया। इसके प्रकाशन का प्रारम्भ चिंतामणि घोष, देवनागरी प्रचारिणी सभा ने किया। 1901 में बाबू श्यामसुन्दर दास सरस्वती पत्रिका के सम्पादक बनाये गये। इस पत्रिका का स्वर्ण युग जब प्रारम्भ हुआ, तब इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी को दिया गया।

पं. सुन्दर लाल ने महात्मा अरविन्द घोष के **'कर्मयोगी'** और लोकमान्य तिलक के **'केसरी'** पत्रों से प्रेरणा लेकर 1901 में कर्मयोगी पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्रिका पाक्षिक थी। इस पत्रिका के द्वारा राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना और भारतीय समाज के उत्थान की आकांक्षा झलकती थी। इस पत्रिका की दिनों-दिन लोकप्रियता बढ़ती गयी। कर्मयोगी पत्रिका ने अपनी निर्भीकता के कारण हिन्दी पत्रकारिता में नए प्रतिमान स्थापित कर दिए थे।

इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिकाओं के सम्बन्ध में **'चाँद'** पत्रिका का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। रामरख सहगल ने इस पत्रिका का प्रकाशन महिलाओं के विषयों को केन्द्र में रखकर किया। यह पत्रिका जल्दी ही सामाजिक सरोकारों की पत्रिका बनकर हिन्दी जगत में लोकप्रिय हुई। इस पत्रिका का शेयर जारी किया गया, जिससे वित्तीय संसाधन जुटाये जा सकें। इस पत्रिका में श्रीमती महादेवी वर्मा जी का योगदान सराहनीय है। सन् 1940 में कहानियों की दो पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। नई कहानियाँ और मनोरंजक कहानियाँ। नई कहानियाँ चाँद प्रेस से निकली। इन पत्रिकाओं में कहानियाँ छपती थीं। वे सत्य कथाओं पर आधारित थी। धीरे-धीरे पत्रिकाओं का प्रकाशन बढ़ता गया और हर क्षेत्र में पत्रिकाएं प्रकाशित होती रहीं।

साहित्यिक पत्रकारिता के रूप में इलाहाबाद शहर की अग्रणी भूमिका रही। यहाँ से हिन्दी की ढेर सारी साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं। इन पत्रिकाओं ने साहित्य के क्षेत्र में कई प्रतिमान स्थापित किए। 1969 में मार्कण्डेय द्वारा सम्पादित कथा पत्रिका निकली। यह पत्रिका आज भी प्रकाशित हो रही है। आज भी कई पत्रिकाएँ हैं, जिनका प्रकाशन इलाहाबाद से हो रहा है। ❑

सत्य है! पर कड़वा है

वृद्धाश्रम में माँ–बाप को देखकर सब लोग बेटों को ही कोसते हैं। लेकिन दुनिया वाले ये कैसे भूल जाते हैं कि वहाँ भेजने में किसी की बेटी का भी अहम रोल रहा होता है। वरन् लोग अपने माँ–बाप को अपनी शादी से पहले ही वृद्धावस्था क्यों नहीं भेजते?

संस्कार बेटियों को भी दें ताकि कोई केवल बेटों को न कोसे।

यह कड़वा सत्य है।

लेख

धर्म के नाम पर चित्र-विचित्र परम्पराएँ

✍.........
डॉ. विनोद कुमार वर्मा
सहा. प्रो. राजनीति शास्त्र विभाग

धर्म का तात्पर्य शालीनता, सदाचरण, नीतिमत्ता एवं कर्तव्यपरायणता से है। परन्तु उन विकृतियों एवं भ्रांतियों को क्या कहा जाये, जिनके धर्म क्षेत्र में प्रवेश पा जाने और गहरी जड़ें जमा लेने के कारण आज भी मानव-समुदाय न्याय और औचित्य की तुलना में परम्पराओं से चिपके रहने के लिए बाध्य हैं। इस वैज्ञानिक युग में भी जहाँ तर्क, तथ्य और प्रमाणों के आधार पर किसी भी वस्तु की वास्तविकता को जाँचने, परखने और कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही उस वस्तु को अपनाया जाता है, वहाँ धर्म के सम्बन्ध में ऐसी बात देखने को नहीं मिलती।

धर्म के क्षेत्र में जितने मतभेद एवं मतान्तर देखने में आते हैं उतना और किसी विषय में शायद ही मिल सकें। यह अन्तर अज्ञानियों में ही नहीं, समझदार और उन्नत-प्रगतिशील लोगों में भी देखने में आता है। हिन्दू गौ को पवित्र मानते हैं और उसका एक रोम भी दूध के साथ पेट में चले जाने पर घोर पाप समझते हैं, वही अन्य सम्प्रदाय वाले उसी गाय को खुदा के नाम पर काटकर खा जाने में बड़ा पुण्य मानते हैं। ईसाई बिना पाप-पुण्य के झगड़े में पड़े नित्य ही उसके मांस को एक साधारण आहार की तरह ग्रहण करते हैं। यहूदी भगवान की प्रार्थना करते समय मुँह के बल लेट जाते हैं, कैथोलिक ईसाई घुटनों के बल झुकते हैं, प्रोटेस्टैन्ट ईसाई कुर्सी पर बैठकर प्रार्थना करते हैं। मुसलमान की नमाज में कई बार उठना-बैठना पड़ता है और हिन्दुओं की सर्वोच्च प्रार्थना वह है जिसमें साधक ध्यानमग्न होकर अचल हो जाये। यदि यह कहा जाय कि इन सबमें एक ही उपासना विधि ठीक है और दूसरी अन्य सभी बेकार हैं, तो भी काम नहीं बनता। धार्मिक क्षेत्र के इन्हीं घोर विचारधाराओं को देखकर मूर्धन्य लेखक एस. बैरिंग गोल्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ओरीजिन एण्ड डेवलपमेंण्ट ऑफ रिलिजियस बिलीफ में लिखा है कि, " संसार में समस्त प्राचीन युगों से अगणित ऐसे धार्मिक विश्वास पाये गये हैं, जो एक-दूसरे से सर्वथा विपरीत हैं और जिनकी रस्मों तथा सिद्धान्तों में जमीन-आसमान का अन्तर है। एक प्रदेश में मन्दिर का पुजारी देवमूर्ति को मानव रक्त से स्नान कराता है और दूसरे ही दिन अन्य धर्म के अनुयायी वहाँ आकर उसे तोड़कर गंदे कूड़े के ढेर में फेंक देता है। जिनको एक धर्म वाले भगवान मानते हैं, उन्हीं को दूसरे धर्मानुयायी शैतान कहते हैं। एक धर्म वालों की देवमूर्ति सौन्दर्य का आदर्श होती है और दूसरे धर्म वालों की वीभत्स और कुरूप! इंग्लैण्ड में प्रसव के समय जननी को एकान्त स्थान में रहना पड़ता है, पर अफ्रीका की 'बास्क' जाति में सन्तान होने पर पिता को कम्बलों से ढककर अलग रखा जाता है और 'लपनी' खिलायी जाती है। अधिकांश देशों में माता-पिता की सेवा-सुश्रूषा करके उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट की जाती है, पर कहीं-कहीं पर श्रद्धा की भावना से ही उनको कुल्हाड़े से काट दिया जाता है। अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के उद्देश्य से फिजी द्वीप का निवासी उनके मांस को खौलाता है, जबकि एक यूरोपियन इसी उद्देश्य से एक सुन्दर समाधि बनाता है।

विभिन्न धर्मों और मतों के धार्मिक विश्वासों में अत्यधिक अन्तर होने का यह बहुत ही अल्प विवरण है। इन धार्मिक रीति-रिवाजों एवं प्रथा-परम्पराओं ने धीरे-धीरे कैसे हानिकारक और निकम्मे अन्ध-विश्वासों का रूप धारण कर लिया है, गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार करने से चकित रह जाना पड़ जाता है।

अपने देश में अब भी बहुत से लोग स्त्रियों के पर्दा त्याग करने के बहुत विरूद्ध हैं और जो लड़की विवाह-शादी के मामले में अपनी इच्छानुसार विवाह करने पर जोर देती है, उसे निर्लज्ज, कुलक्षणी आदि कहकर पुकारा जाता है; परन्तु, उत्तरी अफ्रीका के 'टौगर्स' प्रदेश में पुरुष बुर्का डालकर रखते हैं और स्त्रियाँ खुले मुँह फिरती हैं। वहाँ पर स्त्रियाँ ही विवाह के लिए पुरुष ढूँढती है, प्रेम प्रदर्शित करती हैं और उसे विवाह

धर्म का तात्पर्य शालीनता, सदाचरण, नीतिमत्ता एवं कर्तव्यपरायणता से है। परन्तु उन विकृतियों एवं भ्रांतियों को क्या कहा जाये, जिनके धर्म क्षेत्र में प्रवेश पा जाने और गहरी जड़ें जमा लेने के कारण आज भी मानव-समुदाय न्याय और औचित्य की तुलना में परम्पराओं से चिपके रहने के लिए बाध्य हैं। इस वैज्ञानिक युग में भी जहाँ तर्क, तथ्य और प्रमाणों के आधार पर किसी भी वस्तु की वास्तविकता को जाँचने, परखने और कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही उस वस्तु को अपनाया जाता है, वहाँ धर्म के सम्बन्ध में ऐसी बात देखने को नहीं मिलती ।

धर्म के क्षेत्र में जितने मतभेद एवं मतान्तर देखने में आते हैं उतना और किसी विषय में शायद ही मिल सकें। यह अन्तर अज्ञानियों में ही नहीं, समझदार और उन्नत-प्रगतिशील लोगों में भी देखने में आता है। हिन्दू गौ को पवित्र मानते हैं और उसका एक रोम भी दूध के साथ पेट में चले जाने पर घोर पाप समझते हैं, वही अन्य सम्प्रदाय वाले उसी गाय को खुदा के नाम पर काटकर खा जाने में बड़ा पुण्य मानते हैं। ईसाई बिना पाप-पुण्य के झगड़े में पड़े नित्य ही उसके मांस को एक साधारण आहार की तरह ग्रहण करते हैं। यहूदी भगवान की प्रार्थना करते समय मुँह के बल लेट जाते हैं, कैथोलिक ईसाई घुटनों के बल झुकते हैं, प्रोटेस्टैन्ट ईसाई कुर्सी पर बैठकर प्रार्थना करते हैं। मुसलमान की नमाज में कई बार उठना-बैठना पड़ता है और हिन्दुओं की सर्वोच्च प्रार्थना वह है जिसमें साधक ध्यानमग्न होकर अचल हो जाये। यदि यह कहा जाय कि इन सबमें एक ही उपासना विधि ठीक है और दूसरी अन्य सभी बेकार हैं, तो भी काम नहीं बनता। धार्मिक क्षेत्र के इन्हीं घोर विचारधाराओं को देखकर मूर्धन्य लेखक एस. बैरिंग गोल्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ओरीजिन एण्ड डेवलपमेंण्ट ऑफ रिलिजियस बिलीफ में लिखा है कि, '' संसार में समस्त प्राचीन युगों से अगणित ऐसे धार्मिक विश्वास पाये गये हैं, जो एक-दूसरे से सर्वथा विपरीत हैं और जिनकी रस्मों तथा सिद्धान्तों में जमीन-आसमान का अन्तर है। एक प्रदेश में मन्दिर का पुजारी देवमूर्ति को मानव रक्त से स्नान कराता है और दूसरे ही दिन अन्य धर्म के अनुयायी वहाँ आकर उसे तोड़कर गंदे कूड़े के ढेर में फेंक देता है। जिनको एक धर्म वाले भगवान मानते हैं, उन्हीं को दूसरे धर्मानुयायी शैतान कहते हैं। एक धर्म वालों की देवमूर्ति सौन्दर्य का आदर्श होती है और दूसरे धर्म वालों की वीभत्स और कुरूप! इंग्लैण्ड में प्रसव के समय जननी को एकान्त स्थान में रहना पड़ता है, पर अफ्रीका की 'बास्क' जाति में सन्तान होने पर पिता को कम्बलों से ढककर अलग रखा जाता है और 'लपनी' खिलायी जाती है। अधिकांश देशों में माता-पिता की सेवा-सुश्रूषा करके उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट की जाती है, पर कहीं-कहीं पर श्रद्धा की भावना से ही उनको कुल्हाड़े से काट दिया जाता है। अपने माता-पिता के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के उद्देश्य से फिजी द्वीप का निवासी उनके मांस को खौलाता है, जबकि एक यूरोपियन इसी उद्देश्य से एक सुन्दर समाधि बनाता है।

विभिन्न धर्मों और मतों के धार्मिक विश्वासों में अत्यधिक अन्तर होने का यह बहुत ही अल्प विवरण है। इन धार्मिक रीति-रिवाजों एवं प्रथा-परम्पराओं ने धीरे-धीरे कैसे हानिकारक और निकम्मे अन्ध-विश्वासों का रूप धारण कर लिया है, गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार करने से चकित रह जाना पड़ जाता है।

अपने देश में अब भी बहुत से लोग स्त्रियों के पर्दा त्याग करने के बहुत विरूद्ध हैं और जो लड़की विवाह-शादी के मामले में अपनी इच्छानुसार विवाह करने पर जोर देती है, उसे निर्लज्ज, कुलक्षणी आदि कहकर पुकारा जाता है; परन्तु, उत्तरी अफ्रीका के 'टौगर्स' प्रदेश में पुरुष बुर्का डालकर रखते हैं और स्त्रियाँ खुले मुँह फिरती हैं। वहाँ पर स्त्रियाँ ही विवाह के लिए पुरुष ढूँढती है, प्रेम प्रदर्शित करती हैं और उसे विवाह करके लाती हैं। 'बिली' नाम की जाति में कुमारी कन्याओं को मन्दिर के पुजारियों को दान कर दिया जाता है, जिनका वे उपभोग करते हैं। हमारे यहाँ दक्षिण भारत के मन्दिरों में प्रचलित 'देवदासी' प्रथा भी लगभग ऐसी ही है। मलाया में जिस लड़की को कोई प्यार करता है, वह उसके पदचिन्ह के स्थान की धूल को उठाकर लाता है और उसे आग पर गर्म करता है। उसका विश्वास होता है कि ऐसा करने से उसकी प्रेमिका का हृदय पिघलेगा और वह उसकी पत्नी बनने को राजी हो जायेगी। इस प्रकार विश्व भर में धर्म के नाम पर अगणित अंधविश्वास, हानिकारक और घृणित प्रथाएँ प्रचलित हैं। मानवता के उद्धार के लिए उनका हटाया व मिटाया जाना अति आवश्यक है।

बिहार के सखी सम्प्रदाय के अनुयायी ईश्वर भक्ति

लेख

खुशियाँ पाने के लिए लक्ष्य की आवश्यकता

✍.........
रवि कुमार
प्रवक्ता : बी. टी. सी. विभाग

जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ रहें, इसके लिए जरूरी है अपने लक्ष्यों का निर्धारण करना। सुख-समृद्धि और प्रगति पर इंसान की नजरें हमेशा लगी रहती हैं। ये गलत बात भी नहीं है, मगर ये तभी सम्भव है जब लक्ष्य को बाँटा जाये। जीवन को खुशहाल बनाने के लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा। लक्ष्य को भेदना चाहते हैं तो एकाग्र होना जरूरी है। मनुष्य को जीवन में लक्ष्य का निर्धारण करना अति आवश्यक है, तभी व्यक्ति का जीवन सार्थक हो सकता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करता है, वही अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। यदि किसी पुश को भोजन करना है तो वह भी अपने भोजन का लक्ष्य निर्धारित करता है और भोजन उसे प्राप्त हो जाता है क्योंकि भोजन प्राप्त करना ही उसका लक्ष्य है।

लक्ष्य ही पहुँचाएगा मंजिल तक : लक्ष्य बिना जीवन ऐसा है, जैसे हम रास्ते में कहीं जा रहे हैं और हमसे कोई पूछता है कि आप कहाँ जा रहे हो? हम उसका उत्तर देते हैं, मालूम नहीं, तो पूछने वाला व्यक्ति हम पर हँसता है। हम लोग आगे बढ़ते हैं, लेकिन हमें रास्ता मालूम नहीं और हम भटकते हैं, दु:खी होते हैं। ठोकरें खाते हैं- जिनका जाने का रास्ता निश्चित व उद्देश्य पूर्ण होगा वो व्यक्ति पूछते जाते ठोकरें खाकर अपनी मंजिल तक पहुँच ही जाता है। हमें इस जीवन रूपी रास्ते को कहाँ पहुँचाना है, इसका लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

सकारात्मक सोच से मिलेगी सफलता :

हर सपने को अपनी साँसों में रख,
हर मंजिल को अपनी बाँहों में रख,
हर जीत चूमेगी तेरे कदम तू बस,
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रख।

मनुष्य को बचपन से ही जीवन को सफल बनाने के लिए एक उच्च लक्ष्य रखना चाहिए। मानव के जीवन का लक्ष्य संकुचित न हो कर व्यापक होना चाहिए। स्वार्थ पूर्ण न होकर परमार्थ के लिए होना चाहिए। जिस प्रकार हमारी जो जनता अभी गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर कर रही है, हम उन्हें किस प्रकार ऊँचा उठायें, ये हमारे जीवन का उच्च लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि देश की जनता के ऊँचा उठने पर देश ऊँचा उठता है। देश के ऊँचा उठने पर हम सबका स्वाभिमान व गौरव भी ऊँचा उठता है।

अहंकार को त्यागें :

लक्ष्य निर्धारित करना स्वाभाविक गुण : सुखी जीवन जीने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना स्वाभाविक गुण है हर व्यक्ति जीवन में कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है। सभी मनुष्यों की इच्छाएँ अलग-अलग होती हैं। मगर कुछ लोग ही अपने सपनों को पूरा कर पाते हैं।

उत्साह का संचार करता है लक्ष्य : लक्ष्य का निर्धारण व्यक्ति के भीतर उमंग व उत्साह का संचार करता है। शुरू में ही लक्ष्य का निर्धारण कर लेने से जीवन की जड़ता समाप्त होती है, प्रगति के नये मार्ग प्रशस्त होते हैं। बालकों के भीतर छोटे-छोटे लक्ष्यों को निर्धारित करके आगे बढ़ने को प्रेरित करना चाहिये। ❑

क्या दोष है लड़कियों का, क्यों उन्हें जन्म से पहले ही बोझ समझा जाता है।
क्यों जकड़ते हैं हम उन्हें, पाबन्दियों की बेड़ियों में...
जब उन्होंने आज़ाद देश में जन्म पाया है। क्यों वो उस आज़ादी की हकदार नहीं,
जो लड़कों को दी जाती है। क्यों नहीं बँटती मिठाईयाँ घरों में, जब लड़कियाँ जन्मी जाती हैं।

संस्कारशाला

✍.........डॉ. ललित उपाध्याय *असि.प्रो.: समाजशास्त्र विभाग*

बालक की तार्किक क्षमता महत्वपूर्ण, साधन-अभाव गौण

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा था – मेरी दृष्टि में मानव मुक्ति शिक्षा से ही संभव है। बच्चे की तार्किक क्षमता को पहचानें व साधन के अभाव में भाग्य को दोष न दें क्योंकि अब संविधान में भी 6–14 वर्ष की आयु समूह वाले सभी बच्चों को अनिवार्य और निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा का अधिकार अनुच्छेद 21ए में दिया गया है। अनुच्छेद 39 एम में बालकों को समान अवसर व सुविधा का अधिकार जो उन्हें स्वतन्त्र एवं प्रतिष्ठापूर्ण माहौल प्रदान करने व उनके स्वस्थ रूप से विकसित करने पर बल दिया है।

बालकों के बेहतर हित, भेदभाव रहित जीवन और बच्चों के विचारों का सम्मान के सिद्धान्त पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भी कहा गया है कि माता–पिता बच्चों के स्वस्थ विकास व उन्नति में तर्क के आधारपर बढ़ रहे बालक हेतु वातावरण को बनाएँ और सरकारें भी साधनों के अभाव में बालकों की प्रतिभा को रुकने न दें, उन्हें हर संभव मदद करें।

बालक अधिक संवेदनशील होते हैं, उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। बालकों को बड़े होकर समाज में अपने योगदान देने के लिए उसके दिमाग, तर्कशक्ति, व्यक्त करने के विचार व अपनी पसन्द को चुने जाने का विकल्प, व निर्णय लेने की क्षमता में माता–पिता के साथ शिक्षक की अहम भूमिका होती है। बालकों को प्रोत्साहित करें, साधन हेतु सरकारी व गैर सरकारी सहायता के विकल्प तलाशें। हमें यह भी याद रखना होगा कि गुदड़ी के लाल पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री लालबहादुर शास्त्रीजी हों या मिसाइलमैन पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जिन्होंने साधन हीनता को कभी हावी नहीं होने दिया बल्कि अपनी प्रतिभा, अभिभावकों व शिक्षकों के मार्गदर्शन से तार्किक रूप से अपेक्षाओं को खरा साबित कर देश व समाज का नाम रोशन किया। बच्चों के विकास व उपलब्धि में उसकी तार्किक क्षमता व प्रतिभा महत्वपर्ण है, जबकि साधन गौण। प्रतिभाशाली बालक साधन की राह स्वयं बनाने का माद्दा रखता है। बस माता–पिता व शिक्षक उसे सही मार्गदर्शित करते रहें। ❑

लक्ष्य के लिए जरूरी है अनुशासन व मेहनत

छात्र को श्रेष्ठ नागरिक एवं मन चाहे पद पाने के लिए स्वयं की क्षमताओं के साथ लक्ष्य का निर्धारण अनिवार्य है। छात्रों में चिन्तन की उत्कृष्टता, चरित्र की प्रमाणिकता और न्यायोचित प्रवृत्तियों को जूनियर वर्ग की कक्षाओं से ही प्रभावी बनाया जाना चाहिए। यही अवस्था संस्कार ग्रहण करने की अवस्था है।

सभी अभिभावक अपने बच्चे से अपेक्षा रखते हैं कि उनका बालक सफलता प्राप्त कर जीवन निर्वाह करे किन्तु सफलता के लिए कब, क्या व कैसे करना है, यह महत्वपूर्ण है। इन प्रश्नों के उत्तर ही लक्ष्य निर्धारण में निहित है। लक्ष्य उसी तरह है जिस तरह किसी मकान की छत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियों का प्रयोग करना। जिस प्रकार चित्रकार किसी चित्र को बनाने में कल्पना कर मन मस्तिष्क में रखते हुए कागज पर रंगों से उकेरता है, कुम्हार मिट्‌टी से बर्तनों व मूर्तियों को आकार देता है, ठीक उसी तरह छात्रों द्वारा लक्ष्य को स्पष्टता के साथ निश्चित करना चाहिए।

कक्षा आठवीं में पढ़ने वाले मोहन ने डॉक्टर बनने का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को पाने के लिए मोहन को अनुशासित होकर नियमित अध्ययन के साथ रोज मेहनत करनी होगी। मोहन की रुचि भौतिक, रसायन व जीव विज्ञान विषयों में गहनता से है, यह लगन उसके डॉक्टर बनने में मुख्य भूमिका निभाएगी। विद्यालय में पढ़ाई के साथ नियमित स्वाध्याय की आदत भी मोहन का मजबूत पक्ष है। विज्ञान प्रदर्शनी में मॉडल बनाना, विज्ञान विषयों पर प्रश्नोत्तरी व निबन्ध प्रतियोगिता आदि में भाग लेना मोहन के विज्ञान के प्रति बढ़ते रूझान को लक्षित करता है। कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर मोहन अपने स्वास्थ्य, खान–पान व शारीरिक व्यायाम का भी नित्य ध्यान रखता है। मोहन अपने माता–पिता, शिक्षकों से डॉक्टर बनने हेतु क्या आवश्यक है, इसकी जानकारी भी मार्गदर्शन के रूप में लेता रहता है। यह सभी गुण मोहन को भविष्य में डॉक्टर बनने के अपने स्पष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ा रहे हैं।

अतः कहा जा सकता है कि अपने तय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छात्रों को जूनियर वर्ग की कक्षाओं से ही तीव्र इच्छाशक्ति, सकारात्मक विचार, मजबूत विश्वास, दूर–दृष्टि, कडी मेहनत व लगन के साथ समय प्रबन्ध को अभिभावक व शिक्षकों के निर्देशन में सीखना चाहिए। ❑

ब्रजभूमि सेवा संस्थान द्वारा आयोजित मेधावी छात्र सम्मान समारोह में मंचासीन अतिथिगण

कक्षा 12वीं (सी.बी.एस.ई. बोर्ड) की जनपद टॉपर निहारिका भारद्वाज को अभिभावक के साथ सम्मानित करते हुए सचिव, प्राचार्य

मेधावी छात्र–छात्राओं ने समारोह में ध्यान योग किया

प्रेसवार्ता में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए श्री दीपक गोयल

मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रतीक चिन्ह व प्रमाण पत्र देकर सम्मान करते हुए मुख्य अतिथि जिला उद्यान अधिकारी डा. कौशल कुमार, विशिष्ट अतिथि डा. अब्दुल वहीद (प्रोफेसर समाजशास्त्र ए.एम.यू.), यूथ फॉर नेशन के डा. गुणाकर व उड़ान सोसाइटी के पदाधिकारी

जनपद अलीगढ़ के टॉपर्स कु. निहारिका भारद्वाज, परम सहगल, विपुल अग्रवाल, अभय बंसल को अभिभावकों के साथ सम्मानित करते हुए ब्रज भूमि सेवा संस्थान, यूथ फॉर नेशन व उड़ान सोसाइटी के पदाधिकारी

योग शिविर

एन. एस. एस. द्वारा आयोजित योग दिवस पर योगाभ्यास करते हुए
डा. गौतम गोयल (निदेशक ज्ञान आई. टी. आई.), रितिका गोयल, प्राध्यापकगण व छात्र–छात्राएँ

योग प्रशिक्षकों को सम्मानित
करते हुए प्राचार्य डा. वाई.के. गुप्ता

आगरा से पधारे समाजसेवी श्री अशोक जी को
सम्मानित करते सचिव श्री दीपक गोयल

काव्य गोष्ठी

शिखर संस्था के सहयोग से काव्य गोष्ठी में कवियत्री को
सम्मानित करते हुए प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता

संगोष्ठी को संबोधित करते प्राचार्य
डा. वाई. के. गुप्ता एवं मंचासीन कविगण

न्यूरो सर्जन डा. संजीव शर्मा ने लकी ड्रा विजेता
डा. सुहैल अनवर को उपहार भेंट किया

प्रबन्धक श्री मनोज यादव ने काव्य गोष्ठी
के पदाधिकारियों को सम्मानित किया

स्काउट/गाइड शिविर

स्काउट गाइड शिविर में बी.एड. प्रशिक्षु छात्र–छात्राओं ने गौरैया संरक्षण जागरुकता में सामूहिक शपथ ली

मतदाता जागरूकता रैली में बी.एड. प्रशिक्षुओं ने सक्रिय सहभागिता की

बी.एड. के स्काउट व गाइड शिविर में उपस्थित प्रशिक्षु

इन्टैक क्विज

इन्टैक द्वारा आयोजित 'इण्डिया हैरिटेज क्विज 2016' की प्रतियोगिता में भाग लेते छात्र–छात्राएँ

इन्टैक द्वारा आयोजित इण्डिया हैरिटेज क्विज '16 की विजेता टीम श्री डॉट सेवा मार्ग सी.सै. स्कूल को सम्मानित करते सचिव व प्राचार्य

हैरिटेज क्विज 2016 की उपविजेता टीम डी. पी. एस. के छात्र–छात्राएँ

क्विज प्रतियोगिता के समापन पर उपस्थित आमंत्रित सीनियर सैकेण्डरी स्कूलों के शिक्षकगण व ज्ञान परिवार

स्थापना दिवस पर स्व. डा. ज्ञानेन्द्र गोयल के चित्र पर पुष्प अर्पित करते पूर्व सांसद श्री बिजेन्द्र सिंह

सचिव श्री दीपक गोयल का स्वागत करते हुए भूगोल विभागाध्यक्ष डा. सोमवीर सिंह

मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र सिंह (पूर्व मुख्य सचिव दिल्ली सरकार) का स्वागत करते हुए प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता

विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद श्री बिजेन्द्र सिंह को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए श्री दीपक गोयल (सचिव)

प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार कौशिक का स्वागत करते हुए श्री आर. के. शर्मा (विभागाध्यक्ष बी.टी.सी.)

आई.टी.आई. के छात्र को सम्मानित करते ज्ञान निजी आई.टी.आई. के प्रधानाचार्य श्री मनोज वार्ष्णेय

स्थापना दिवस पर उपस्थित अतिथिगण

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि के साथ छात्र–छात्राएँ व प्राध्यापकगण

विशिष्ट अतिथि चौ. बिजेन्द्र सिंह (पूर्व लोकसभा सांसद) का स्वागत करते हुए उप प्राचार्य डा. हीरेश गोयल

डा. सुहैल अनवर (विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान) अतिथि श्रीमती कौशिक का स्वागत करती हुई

वरिष्ठ पत्रकार श्री चन्द्रशेखर व अतिथिगण का स्वागत करते हुए डा. डी. एन. गुप्ता (विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र)

अतिथि श्री वीरेन्द्रगोयल (चेयरमैन रमनलाल शोरावाला स्कूल) का स्वागत करते डा. एच.एस. चौधरी (प्रभारी विज्ञान संकाय)

19वें स्थापना दिवस पर छात्राओं द्वारा प्रस्तुत की गई मनमोहक रंगारंग प्रस्तुतियाँ

तिरंगें की शान में आकर्षक प्रस्तुति करते ज्ञान निजी आई.टी.आई. के प्रशिक्षु

डिजीटल इंडिया क्विज प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप स्मार्ट फोन भेंट किए

श्रीमती एवं श्री अविप्रकाश मित्तल (प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष)
को प्रतीक चिन्ह भेंट करती अध्यक्षा श्रीमती आशादेवी

अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी द्वारा मुख्य अतिथि
श्री वीरेन्द्र सिंह (पूर्व मुख्य सचिव दिल्ली) का सम्मान

श्रीमती एवं श्री इन्द्रेश कुमार कौशिक (सदस्य,प्रबंध समिति)
का सम्मान करती हुई अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

अतिथि श्री श्रीपाल शर्मा (उद्योगपति) को प्रतीक
चिन्ह देती हुई अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

अतिथि श्री वीरेन्द्र गोयल (चेयरमैन रमनलाल शोरावाला स्कूल)
को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान करतीं अध्यक्षा आशादेवी

अतिथि श्री राकेश भार्गव (वरिष्ठ अधिवक्ता) का
सम्मान करती हुई अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

ज्ञान अर्थ, ज्ञान दर्शन, ज्ञान विज्ञान का विमोचन करते हुए अतिथिगण

उपप्राचार्य डा. हीरेशगोयल व डा. ललितउपाध्याय ने मुख्य अतिथि ए.डी.एम. सिटी श्री एस.बी.सिंह को ''ज्ञानपुष्प'' भेंट की

शिक्षणेत्तर कर्मचारी श्री दीपक कुमार रक्तदान करते हुए

मुख्य अतिथि ए.डी.एम (सिटी) श्री एस.बी. सिंह व अतिथियों के साथ सम्मानित रक्तदाता छात्र–छात्राएँ

रक्तदान करते युवा छात्र प्रवक्तागण के साथ

बी.एड. प्रवक्ता कविता चौधरी ने रक्तदान किया

रक्तदान कर छात्रा ने मिसाल पेश की

आई.टी.आई. के छात्र ने रक्तदान किया, हौसला बढ़ाती हुईं, ग्राम बढ़ौली की प्रधान श्रीमती मिथलेश देवी

उप प्राचार्य डा. हीरेशगोयल व डा. ललितउपाध्याय के साथ बी.एड., बी.बी.ए. व बी. सी. ए.संकाय के रक्तदाता छात्र व प्रवक्तागण

गणित विभाग द्वारा व्याख्यान में प्रभारी, विज्ञान संकाय दीप प्रज्ज्वलित करते हुए साथ में मुख्य वक्ता डा. आसिफ खान (असि.प्रो., ए.एम.यू.) व प्राचार्य

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डा. मंजूशर्मा (एसो. प्रो., हिन्दी टी.आर. कालिज) को सम्मानित करते संकाय प्रभारी व प्राध्यापकगण

डा. एन.के. सिंह (एसो. प्रो., राजनीतिशास्त्र, डी.एस. कालिज द्वारा व्याख्यान, उपस्थित प्राचार्य व प्रभारी कला संकाय

वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित व्याख्यान माला के मुख्य वक्ता डा. शोएब (असि. प्रो., ए.एम.यू.) को सम्मानित करते हुए प्राचार्य

शिक्षक शिक्षा संकाय में आयोजित व्याख्यान में बी.एड. प्रशिक्षुओं को प्रो.नक्खत नसरीन (शिक्षा संकाय, ए.एम.यू.) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

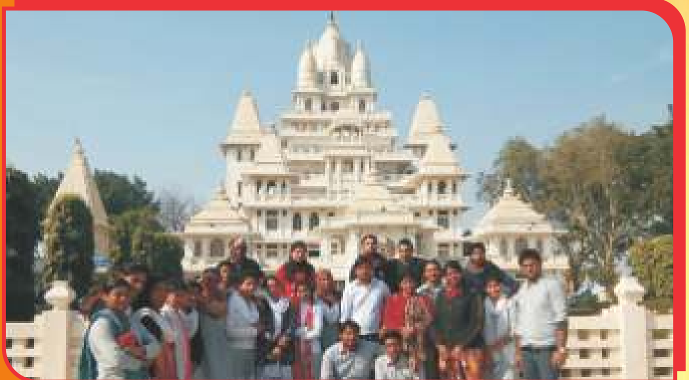

बी.टी.सी. विभाग द्वारा शैक्षिक भ्रमण पर छात्रों ने किए मन्दिरों के दर्शन

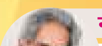

नीरज जी.. जियो हजारों साल

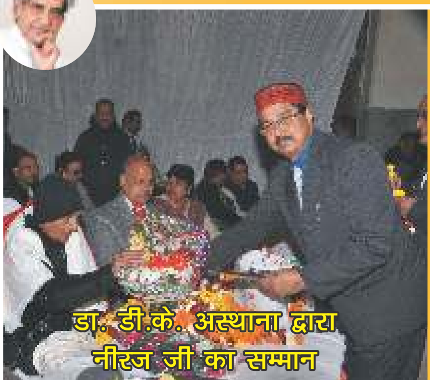

डा. डी.के. अस्थाना द्वारा नीरज जी का सम्मान

प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता द्वारा सम्मान

डॉ. ललित उपाध्याय ज्ञान पुष्प भेंट

पदमभूषण गोपालदास नीरज के जन्म दिवस पर समारोह में ज्ञान महाविद्यालय परिवार द्वारा स्वागत

लेख

एकाग्रता आपके कार्यों में शक्ति भर देती है ...

✍.........
रवि कुमार
प्रवक्ता : बी.टी.सी. विभाग

खुद को ऊपर उठाने के लिए तैयार रहें :

महानतम् सफलता का मूल मन्त्र यही है कि आप हर क्षण स्वयं के विचारों को ऊपर उठाने का प्रयत्न करते रहें। ''आपकी सफलता इस बात में नहीं कि आपने कितनी उपलब्धियों को प्राप्त किया है, अपितु आपकी सफलता इस बात में निहित है कि आपने कितने लोगों को सफलता दिलवायी है।'' स्वयं को ऊँचे स्तर पर पहुँचाने के लिए आपको हर बार आत्म–अनुशासित होकर कार्य करने होंगे, क्योंकि आप स्वयं को जितना ज्यादा अनुशासित करेंगे, आप उतने ही ज्यादा और तेजी से अपने आपको विकास की तरफ ले जाने में सफल हो पायेंगे। परिस्थिति कोई भी हो, कोई घटना आपके प्रतिकूल ही क्यों न हो, लेकिन आपको अपनी स्थिति अर्थात् विचारों को संतुलित बनाये रखने की कला को विकसित करते रहना है। हर अवस्था में आपको अपना आत्म सम्मान बनाये रखने के लिए मर्यादाओं का ध्यान रखना होगा।

''आप अपने विचारों पर नियंत्रण कर लें, विचार आपके जीवन पर नियंत्रण कर लेंगे''

आपके सम्पूर्ण जीवन की दिशा और दशा आपके विचारों पर निर्भर करती है, इसलिए आपको अपने विचारों को विशेष रूप से अनुशासित करने की जरूरत होती है।

आत्म–जागृति की अवस्था में आपके विचार पवित्र होने वाले हैं। आपके परिवार से उमंग व उत्साह की तरंगें हर क्षण प्रवाहित होती रहती हैं और सारे कार्यों में सकारात्मक बुद्धि होने के कारण आप हर प्रकार की उपलब्धियों को प्राप्त करते चले जाते हैं।

आपकी भावनाएँ शुद्ध होने लगती हैं और आप उत्थान की तरफ बढ़ने लगते हैं। दूसरों की आलोचनाओं में अपना कीमती समय बर्बाद नहीं कर सकते क्योंकि आप जानते हैं, कि अपने जीवन में अच्छाईयों को बढ़ाने के लिए दूसरों की अच्छाइयों को ही देखना व उनके बारे में बातें करना ही आपके जीवन में अच्छाइयों को बढ़ा सकता है।

इस ब्रह्माण्ड की हर वस्तु में दो प्रकार की ऊर्जा विद्यमान होती है। एक नकारात्मक ऊर्जा और दूसरी सकारात्मक ऊर्जा। आपको कौन–सी ऊर्जा चाहिए? आपको मालूम होना चाहिये कि सकारात्मक सुख–सफलता और नकारात्मकः दुःख असफलता। आपको सफलता चाहिए तो सकारात्मक ऊर्जा पर अपना ध्यान केन्द्रित करिए। आपके लिए उपहार यह है कि आपको दोनों चीजें मिल जायेगी। चुनाव आपको करना है।

आप जितना भीतर जायेंगे उतना ही बाहरी संसार को समझने में आपको आसानी होगी। यह समझ आपको प्रकृति से जोड़ेगी। तत्पश्चात् आपको अपने कार्यों का वास्तविक मतलब समझ में आयेगा। आपके हर कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जब आप कोई कार्य करते हैं तब आपके सम्पूर्ण जीवन पर उसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसलिए आपको कोई भी कार्य करते समय उस पर बहुत अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

जब आप सफल हो रहे होते हैं तब आपके मार्ग में ढेर सारी समस्याएँ व चुनौतियाँ भी स्वाभाविक रूप से आती ही हैं। आपको उनका सामना करते हुए धैर्य बनाये रखने की कला आनी चाहिए। आपका सम्पर्क आपके लक्ष्य से होना जरूरी है, तभी आपकी अपनी ही नजरों में छवि बनी रहेगी। आपके विश्वास में निरंतर वृद्धि एवं सामर्थ्य का विकास होता रहेगा। मूल रूप से आपका विश्वास ही आपकी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान करने की जिम्मेदारी लेता है। आपको इन्हीं शक्तियों को जाग्रत करके उनको कार्य सौंपकर उनको कार्यों की जिम्मेदारियाँ देनी है तथा अपनी आवश्यकताओं एवं

लक्ष्यों को पूरा करना है। आपको इन्हीं के सहारे अपनी मंजिल तक पहुँचना है। आप जब इन शक्तियों की उपस्थिति को महसूस करते हैं, तब आप अनेक कार्यों को सुव्यवस्थित तरीके से कर सकते हैं। आपको ऐसा अनुभव होगा कि आपके सारे कार्य स्वतः होने लगे हैं।

महान पुरुषों ने स्वयं तप द्वारा निर्मल विचारों को जन्म दिया और सार्वजनिक कल्याण हेतु उच्च कोटि के उपदेशों की सहायता से समाज हित में प्रवचन रूपी अमृत की वर्षा करके दिशा प्रदान की है। महान आत्माओं के सम्पर्क में आने मात्र से ही विचारों की शुद्धता में सकारात्मक परिवर्तन से मन को शक्ति और बुद्धि का विकास प्रारम्भ होने लगता है।

"बचपन जितना पिता के लिए तड़पता है, उससे कहीं अधिक बुढ़ापा पुत्र के लिए तड़पता है।"

सफलता के नियम

1. अपनापन ही प्यारा लगता है। यह आत्मीयता जिस पदार्थ अथवा प्राणी के साथ जुड़ जाती है, वह आत्मीय, परम प्रिय लगने लगता है।
2. अंध परम्पराएँ मनुष्य को अविवेकी बनाती है। अंध परंपराओं को परिस्थितियों के हिसाब से बदलते रहना चाहिए क्योंकि आपके भूत के विचार आपका वर्तमान नहीं बन सकते हैं।
3. बुरे वक्त में जो मनुष्य आपका सहयोग करता है, उसे शुभ भावना के साथ-साथ उसके प्रति समर्पण की पूर्ण भावना रखें।

❑

वचन

तुलसी भरोसे राम के निर्भर हो के सोय,
अनहोनी होनी नहीं होनी हो सो होय।

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुँ ओर,
वशीकरण एक मंत्र है तज दे वचन कठोर।

देह धारे का दंड है सब काहू को होय,
ज्ञानी भुकते ज्ञान से अज्ञानी भुकते रोए।

धीरे-धीरे रे मना धीरे सब कुछ होए,
माली सींचे सौ घड़ा फल-फूल ऋतु होए।

व्यंग्य

चुटकुले

✍.........
कृष्ण पचौरी
आई. टी. आई

1. एक बार की बात थी जब में 10वीं कक्षा में पढ़ाई कर रहा था तो मेरा 10वीं का रिजल्ट आया और मेरे कम नम्बर देखकर पापा नाराज हो गये तो उन्होंने टेंशन में आकर बीड़ी जलायी और एक सुट्टा मारकर रख दिया और मुझे डाँटने लगे, तभी थोड़ी देर में मैंने अपने पापा की बीड़ी उठायी और 2-4 सुट्टे मारे। इतना सब देखकर पापा बोले तुम ये क्या कर रहे हो? तो मैंने कहा-पापा आपकी बीड़ी बुझ न जाये, इसलिए उसको सुलगा रहा था।
2. एक बार एक बच्चा स्कूल जा रहा था तो वह रास्ते में किसी काम को करने लग गया, जिस कारण वह अपने स्कूल देर से पहुँचा। स्कूल में देर से आने की वजह से टीचर ने उसे क्लास में नहीं घुसने दिया, तो उस बच्चे ने कहा कि सर, आज मैं किसी के सहारे को सहारा देकर आया हूँ और उसमें मुझे 4 लोगों की जरूरत भी पड़ी, उन्होंने पूछा कि ऐसा क्या किया तुमने? तब उस बच्चे ने कहा कि मैंने एक बुढ़िया को सड़क पार करायी थी। तब टीचर ने कहा कि सड़क पार कराने में 4 लोगों की जरूरत कैसी पड़ी ?

   बच्चाः सर वो बुढ़िया सड़क पार करना नहीं चाहती थी, इसलिए मैंने 4 लोगों की मदद से उसको जबरदस्ती सड़क पार करवा दी।
3. एक बार मैं ज्ञान कॉलेज से साईकिल पर अपने दोस्तों के साथ घर की तरफ जा रहा था तो रास्ते में एक स्पीड-ब्रेकर था और आगे एक लड़की खड़ी हुई थी, मुझसे साईकिल कन्ट्रोल न हुई और लड़की से मेरी साईकिल टकरा गई। लड़की ने कहा बड़े बदतमीज हो, घंटी नहीं मार सकते थे? अरे जब इतनी बड़ी साईकिल मार दी तो घंटी क्या अलग से मारूं।

❑

ज्ञान महाविद्यालय

✍.........
रामबाबू लाल
कार्यशाला अधिकारी

आप शहर के सभी महाविद्यालयों एवं कालेजों से परिचित तो होंगे। इन्हीं में एक अनूठा एवं चर्चित महाविद्यालय है, ज्ञान महाविद्यालय जो शहर के आगरा रोड पर शहर से दूर शान्त वातावरण में स्थित है। सितम्बर का दिन इस महाविद्यालय के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण एवं गौरव का दिन है। इसी दिन 1998 में इस महाविद्यालय की स्थापना स्व. श्री ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय से की गई थी। धीरे-धीरे प्रगति पथ पर बढ़ते हुए यह महाविद्यालय इस मुकाम तक पहुँचा है कि यह अलीगढ़ शहर में एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में इस महाविद्यालय में पाँचों संकाय में स्नातक कोर्स, बी.एड, बी.टी.सी, बी.एस-सी, बी.कॉम, बी.ए., बी.बी.ए. व बी. सी.ए. आदि संचालित हैं। इसके साथ-साथ कुछ परास्नातक कोर्स जैसे एम.कॉम, एम.एस-सी. इत्यादि भी संचालित किये गये हैं। डॉ. गौतम गोयल जी के निर्देशन में यहाँ ज्ञान आई.टी.आई. की मान्यता दो ट्रेडों फिटर एवं इलैक्ट्रिशियन में प्राप्त हो चुकी है। इसके अतिरिक्त यहाँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय द्वारा अनेक कोर्स संचालित किये जा रहे हैं, जिसमें B.P.P., M.A. Socio, M.A. Eco., M.A.R.D., P.G.R.D. डिप्लोमा इन बिजनिस प्रोसेसिंग आउट सोर्सिंग फाइनेंस एण्ड एकाउंटिंग (DBPOFA), सर्टिफिकेट इन रूरल डेबलपमेंट (CRD), सर्टिफिकेट न टीचिंग इन इंग्लिश (CTE), सर्टीफिकेट इन इनवायर मेंटल स्टडीज (CES), सर्टिफिकेट इन गाइडेंस (CIG) आदि संचालित हैं। महाविद्यालय में NIELIT का एक कोर्स CCC (Course on Computer Concept) संचालित है। महाविद्यालय इसका ऑन लाइन Exam भी कराता है। अलीगढ़ में इस प्रकार के Exam का एक मात्र केन्द्र ज्ञान महाविद्यालय ही है।

जैसा मैंने महाविद्यालय के इतिहास के बारे में पढ़ा है सुना है कि डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी पेशे से एक डॉक्टर थे। वे लेखक व समाजसेवी के साथ-साथ अच्छे शिक्षाविद भी थे। उनका मुख्य सिद्धान्त था कि ''कार्य ही पूजा है''। सन् 2002 में उनके अंतिम श्वांस लेने के पश्चात् महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा सँभाली गई। जैसे-जैसे समय बढ़ता गया, लोग मिलते गये और उन्होंने अपनी टीम के साथ महाविद्यालय को एक नई ऊँचाईयों तक पहुँचाया। उनके आगे हम सभी नतमस्तक हैं जिन्होंने इस ज्ञानद्वीप को जलाकर अंधकार को मिटाने की एक कोशिश की और एक नई ख्याति अर्जित की। मुझे आशा है कि यह महाविद्यालय आगे भी निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ता रहेगा और एक दिन लोगों के बीच शिक्षा के क्षेत्र में फैले अंधकार को दूर करने में पूरी तरह से कामयाब होगा।

अब मैं बात करता हूँ महाविद्यालय की तकनीकी शिक्षा के बारे में जिसमें ज्ञान आई.टी.आई. भी महाविद्यालय का एक अंग हैं, जो पिछले आठ सत्रों से तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहा है तथा छात्र व छात्राओं को रोजगार परक प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यह अलीगढ़ का एक मात्र ऐसा निजी आई.टी.आई. है जो लगातार विकास की ओर अग्रसर है।

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान को 25.9.2012 को फिटर तथा इलैक्ट्रिशियन व्यवसाय में 42+42 सीटों पर प्रवेश की मान्यता मिली थी। समय-समय पर Quality Control of India, New Delhi की टीम ने ज्ञान आई.टी.आई. का निरीक्षण किया और टीम द्वारा मानक के अनुसार सभी मूलभूत सुविधाएँ मिलने पर आई.टी. आई. की सीटों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई जो वर्तमान में फिटर ट्रेड में प्रवेशित प्रशिक्षण की कुल संख्या 126 एवं इलैक्ट्रीशियन ट्रेड में प्रवेशित प्रशिक्षणार्थियों

की कुल संख्या 126+63 है; जिनमें वर्तमान में सभी सीटों पर प्रवेश की अनुमति है। इस प्रकार संस्था में कुल प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 567 है। नये सत्र 2016-2017 में प्रवेश संख्या भी लगभग पूर्ण कर ली है। गत वर्ष 2015 में DGE & T श्रम-मंत्रालय भारत सरकार द्वारा अधिकृत संस्था केयर रेटिंग ने संस्था को 4 स्टार ग्रेडिंग से नवाजा है। यह भारत की ऐसी पहली आई.टी.आई. है जिसे 4 स्टार ग्रेडिंग प्राप्त है।

ज्ञान आई.टी.आई. प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ रोजगार प्रदान करने की दिशा में भी प्रयत्नरत है। 2015 में ज्ञान आई.टी.आई. ने होण्डा, ओटोनीटर रिलाइंस लिमिटेड कम्पनी में रोजगार के लिए प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार कराये जिनमें संस्थान के 23 प्रशिक्षार्थी चयनित हुए। इसके अतिरिक्त होण्डा वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट तापूकारा भिवाड़ी, राजस्थान ने प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार लिए, जिनमें से 26 प्रशिक्षणार्थी उसकी सहयोगी कम्पनियों में चयनित हो चुके हैं। आशा है कि ज्ञान आई. टी.आई. आगे भी प्रशिक्षणार्थियों को इसी तरह रोजगार के अवसर प्रदान करता रहेगा और प्रशिक्षणार्थियों के सपनों को साकार करने में अहम भूमिका निभाता रहेगा। ❑

लेख

विकास के इंतजार में तंग गलियाँ

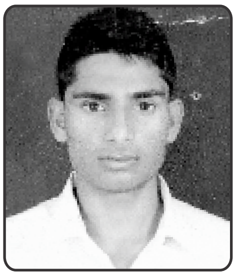

✍.........
टीकम सिंह
बी. एस-सी.
(द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

शहर की तंग गलियों में टूटे हुए सपनों की एक लम्बी कहानी है। यहाँ एक वर्ग ऐसा है जो एक अजीब-सी कुंठा में जीता है। कभी कई दिनों तक भूखे रह जाने की कुंठा, तो कभी दिहाड़ी न मिलने की कुंठा, कभी सभ्य समाज की गाली, तो कभी बच्चों के नशे की लत में डूब जाना, यह उन झुग्गी-झोपड़ियों की सच्चाई है, जहाँ हम जाने से कतराते हैं इन गलियों की तलाश में निकलने से पहले बस इस बारे में अखबारों और किताबों में पढ़ा ही था। जब पास गया तो महसूस हुआ कि देश को आजाद हुए भले ही दशकों बीत गए हों, पर इनके हालात न तब बदले थे, न अब बदलें हैं; न जमीन का ठिकाना, न आसमान का, आज यहाँ तो कल वहाँ भटकना।

इनकी तरह इनके काम का भी कोई भी ठिकाना नहीं है। दुर्भाग्य की बात यह है कि इनका आज जैसा है कल भी वैसा ही रहेगा, क्योंकि इनकी गणना ही नहीं होती। हमारे सभ्य समाज में अपने-अपने स्वार्थ साधने में लगे लोगों को इतनी फुरसत कहाँ है कि इनकी सुध ले सकें। देश के इस वर्ग को देखकर लगता है कि विकास की बात कितनी भी हो लेकिन ये लोग विकास के दायरे से हमेशा बाहर ही रहने वाले हैं। ❑

लेख

सच्चा बालक

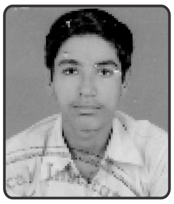

विवेक कुमार.........
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष (P.C.M.)

गाँव का एक लड़का अपने गाँव के लोगों के साथ दूसरे गाँव में जाता है, तो उसकी माँ उसे छः अशर्फियाँ देती है। वह बालक गाँव के लोगों के साथ गाँव से बाहर जंगल के रास्ते से जा रहा था। तभी डाकू आ जाते हैं और सभी यात्रियों को पीटते हैं और उनका सारा धन ले लेते हैं। अन्त में एक डाकू उस बालक के पास जाता है और उस बालक से कहता है कि तेरे पास भी कुछ धन है, उस बालक के कपड़े फटे हुए थे, उसे तभी अपनी माँ की बात याद आयी कि हमेशा सच बोलना चाहिए और उसने डाकू से कहा, 'हाँ मेरे पास छः अशर्फियाँ हैं। वह डाकू उस लड़के को अपने बड़े डाकू के पास ले गया। जब उस बड़े डाकू को पता चला कि यह बालत इतना ईमानदार है तो उस डाकू की आँखों से आँसू बहने लगे। डाकू ने कहा कि अगर तू ना कर देता तो हम चले जाते, तभी उस बालक ने कहा कि मेरी माँ ने कहा था कि जीवन में हमेशा सच बोलना चाहिए और डाकू ने उसकी छः अशर्फियाँ उस बालक को दे दीं और सभी यात्रियों का धन वापस कर दिया।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि कितनी भी विपत्ति हो, हमेशा सच बोलना चाहिए। ❑

संगति का फल

एक समय की बात है, हंस और कौए में मित्रता हो गयी। हंस सीधे और अच्छे स्वभाव का पक्षी है जबकि कौआ बहुत चालाक पक्षी है। वह हमेशा दूसरों की चीज को झपट्टा मारकर ही लेने की ताक में रहता था।

एक दिन हंस कौआ साथ-साथ उड़ते जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने एक व्यक्ति को सिर पर दही का बर्तन रखे हुए जाते देखा। कौआ उड़ता हुआ दही पर झपटा और दही के बर्तन में से अपनी चोंच में दही भरकर उड़ गया। वह बार-बार ऐसा ही करता रहा। उस व्यक्ति ने दही का बर्तन जमीन पर रखकर जब ऊपर देखा तो कौआ तो तेजी से उड़कर दूर जा चुका था, किन्तु बेचारा भोला-भाला हंस अपनी धीमी चाल से उड़ता जा रहा था। उस व्यक्ति ने सोचा कि हंस उसके दही में चोंच मार रहा था। उसने पास में पड़ा पत्थर उठाया और हंस को निशाना मारा। पत्थर हंस को लगा और वह सीधे नीचे गिरा और मर गया।

शिक्षा : बुरे व्यक्ति की संगति से अपने को सदैव दूर रखना चाहिए। ❑

माँ

फिक्र में बच्चों की कुछ इस कदर, घुल जाती है माँ।
नौजवां होते हुए भी, बूढ़ी नजर आती है माँ।।
रूह के रिश्ते की गहराई तो देखिए।
चाह लगती हैं हमें और सिसकती है माँ।।
कब जरूरत मेरे बच्चों को हो मेरी, इतना सोचकर
सो जाती है उसकी आँखें और जगती रहती है माँ।
पहले बच्चों को खिलाती है सुकून और चैन से,
बाद में जो कुछ बचा, खुशी से खाती है माँ।।
हर कष्ट से बच्चों को बचाने के लिए,
ढाल बनती है, कभी तलवार बन जाती है माँ।
जिन्दगी के सफर में गर्दिशों की धूप में,
जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ।।
देर हो जाती है घर जाने में अक्सर, जब हमें,
रेत पर हो मछली जैसे ऐसे घबराती है माँ।
मरते दम गर बच्चे न आएं परदेश से,
अपनी दोनों पुतलियां चौखट पर रख जाती है माँ।।
शुक्रिया कभी हो ही नहीं सकता उसका अदा,
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।

लेख

माँ की ममता

✍.........
दीपांशू वार्ष्णेय
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष
(Z.B.C.)

एक शहर में एक माँ और उसका बेटा रहता था। समय व्यतीत होने के बाद बेटा बुरी संगत में पड़ता जा रहा था। बेटा माँ से बहुत लड़ता–झगड़ता था। लेकिन माँ फिर भी उस बेटे का पूरा साथ दिया करती थी। उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरा किया करती थी। उसकी इच्छा पूर्ति के लिए वह अपने घर पर ही छोटे–छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर पैसे कमाती थी।

लेकिन बेटा अपनी माँ की मजबूरी और अपनी गरीबी को समझ नहीं पा रहा था; बल्कि उसके लिए इन सब बातों से बढ़कर अपनी इच्छा थी। उसके सभी दोस्त उसे लूटने वाले थे। ज्यादातर वह अपने दोस्तों के ऊपर पैसे खर्च करता था। एक दिन वह अपने दोस्तों से बातों ही बातों में अपनी माँ की बुराई करने लगा। उसके एक दोस्त ने उससे कहा कि तेरी बूढ़ी माँ के पास बहुत पैसे हैं, तुझे देना नहीं चाहती है, इसलिए ये ले, तू चाकू उस बुढ़िया को मार कर सभी पैसे लेले। दोस्तों की बातों में आकर बेटा नशे की हालात में घर पहुँचा तो देखा कि उसकी बूढ़ी माँ पहले ही जहर खाकर मर चुकी है। उसके पास एक जहर की खाली शीशी और एक चिट्ठी पढ़ी हुई थी।

जिस पर लिखा हुआ था बेटा मैं तेरी बढ़ती हुई जरूरतों को पूरा नहीं कर पायी और जहर इसलिए खाया ताकि दुनिया वाले ये न बोलें कि बेटे ने माँ का खून बहाया'' यह बात पढ़कर बेटा काफी रोया''

शिक्षा : कभी भी माँ को नहीं रूलाना चाहिए, तुम्हारी सभी इच्छा पूरी होती हैं, जब माँ होती है।

❑

लेख

खतरे

✍.........
राखी कुमारी
बी.एड. द्वितीय वर्ष

★ हँसने में बेवकूफ समझे जाने का डर है।

★ रोने में जज्बाती समझे जाने का डर है।

★ लोगों से मिलने में नाते जुड़ जाने का डर है।

★ अपनी भावानायें प्रकट करने में मन की सच्ची बात खुल जाने का डर है।

★ अपने विचार और अपने सपने लोगों से कहने में उनके चुरा लिये जाने का डर है।

★ किसी को प्रेम करने पर बदले में प्रेम न पाने का डर है।

★ जीने में मरने का डर है।

★ आशा में निराशा का डर है।

★ कोशिश करने में असफलता का डर है।

☞ लेकिन खतरे जरूर उठाने चाहिए, क्योंकि जिन्दगी में खतरे न उठाना ही सबसे बड़ा खतरा है।

★ जो शख्स खतरे नहीं उठाता, वह न तो कुछ करता है, न कुछ पाता है और न कुछ बनता है।

☞ वे जिन्दगी में दु:ख, दर्द से बच सकते हैं जो सीखने, महसूस करने, बदलाव लाने, आगे बढ़ने या प्यार करने और जीवन जीने को नहीं सीख पाते हैं।

☞ अपने नजरिये की जंजीरों में बंधकर हम गुलाम बन जाते हैं और अपनी आजादी खो देते हैं।

☞ सिर्फ 'खतरे' उठाने वाला इंसान ही सही मायनों में आजाद है।

❑

☞ *भगवान, हमारे निर्माता ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियाँ और क्षमताएँ की हैं, ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है।* *– अब्दुल कलाम*

क्या आप जानते हैं ?

✍.........
अंजली तौमर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष
(Z.B.C.)

प्रश्न 1. कहाँ के लोग बालू से नहाते हैं ?
उत्तर– सहारा रेगिस्तान के।

प्रश्न 2. वह कौन-सा पक्षी है, जो अपने साथी के वियोग में मर जाता है?
उत्तर– सारस।

प्रश्न 3. भारत की वह कौन-सी नदी है, जहाँ हीरे पाये जाते हैं?
उत्तर– कृष्णा नदी, दक्षिणी भारत।

प्रश्न 4. किस देश के निवासी पेड़ों पर रहते हैं ?
उत्तर– कांगो बेसिन के निवासी (जयरे अफ्रीका)

प्रश्न 5. सोना सबसे सस्ता कहाँ पाया जाता है ?
उत्तर– लन्दन और न्यूयार्क में।

प्रश्न 6. किस समुद्र में मछलियाँ नहीं होती ?
उत्तर– मृत सागर में (जार्डन)।

प्रश्न 7. किस देश में एक भी नदी नहीं है ?
उत्तर– सउदी अरब ।

प्रश्न 8. कौन-सी ऐसी गैस है, जिसको सूँघने पर आदमी केवल हँसता ही रहता है ?
उत्तर– नाइट्रस ऑक्साइड।

प्रश्न 9. सूर्य की किरण पृथ्वी पर कितने समय में पहुँचती हैं ?
उत्तर– 500 सेकेण्ड में (8.33 मिनट)।

प्रश्न10. ब्राजील के जंगलों में खट्टा क्या मिलता है ?
उत्तर– शहद।

प्रश्न11. कौन-सा जीवधारी है जो जमीन पर पैर नहीं रखता है ?
उत्तर– हरियल पक्षी।

प्रश्न12. 750 ग्राम के बन्दर का क्या नाम है ?
उत्तर– विमी गर्मी का बन्दर।

प्रश्न 13. महाभारत का पुराना नाम क्या था ?
उत्तर– जयसंहिता।

प्रश्न 14. कोहिनूर हीरा कहाँ से प्राप्त हुआ था ?
उत्तर– गोलकुण्डा की खान से।

प्रश्न15. मनुष्य की आँखें एक मिनट में कितनी बार झपकती है ?
उत्तर– पच्चीस बार। ❑

मेहमान	–	गरीबों का आभूषण
चाय	–	कलियुग का अमृत
जेल	–	बिना किराये का मकान
वैज्ञानिक	–	कलियुग का भगवान
परिश्रम	–	उज्जवल भविष्य का पिता
झगड़ा	–	वकील का कमाऊ बेटा
मुर्गी	–	गाँव की अलार्म घड़ी
पश्चाताप	–	अपराध धोने का साबुन
कुत्ता	–	घर का पहरेदार
अस्पताल	–	रोगियों का संग्रहालय
कब्रिस्तान	–	दुनिया का अन्तिम स्टेशन
विद्वान	–	अकल का एजेंट

लेख

इतने शुभ वचन मैंने कभी नहीं सुने ।

✍.........
सचिन कुमार
बी.एड. द्वितीय वर्ष

मैं और मेरे पिताजी बाजार से कुछ सामान खरीदने अपनी निजी कार से जा रहे थे। उस समय मेरी उम्र 9 वर्ष के लगभग थी। मैंने पिताजी की ओर देखते हुए कुछ इस प्रकार से प्रश्न किया, जिसे सुनकर पिताजी मेरी ओर मुस्कराते हुए देखने लगे।

मैंने कहा – पिताजी, हमें अपनी साईकिल से आना चाहिये था !

पिताजी – क्यों बेटा ?

बेटा – पिताजी इस गाड़ी से तो बहुत खर्चा आता है और फिर यह प्रदूषण भी तो करती है, बाजार थोड़ी दूर ही तो है।

पिताजी – बेटा! आजकल सोच बदल रही है। हमें इससे बहुत लाभ भी तो मिलता है। फिर हम यदि साईकिल से चलेंगे तो हमको देखकर अन्य लोग भी तो मजाक बनायेंगे; कहेंगे सब कुछ है फिर भी साईकिल से अपने बच्चों को बाजार लाया है। (बेटा सोचने लगा कि पिताजी मेरे उस प्रश्न का सही–सही उत्तर न देकर समाज के उन वाक्यों को लेकर उत्तर दे रहे हैं, जिन्हें समाज खुद भी नहीं जानता है। फिर भी मैंने पिताजी को दूसरे प्रकार से समाज के बारे में समझाया)

बेटा – पिताजी, ऐसा नहीं लगता कि आजकल अन्य व्यक्तियों को कितनी भी परेशानी हो या पर्यावरण प्रदूषित हो, इसकी किसी को चिन्ता नहीं!

पिताजी – छोड़ो न बेटा, तुम भी क्या सोचते हो। यह सब हमारे तुम्हारे लिये कोई मायने नहीं रखता। जब तक मैं कुछ और कहता, बाजार आ गया।

जब मेरे पिताजी गाड़ी को एक साइड में खड़ी करके मुझको लेकर उतर रहे थे, कि एक बूढ़ी महिला जिसकी उम्र लगभग 60 वर्ष की होगी, हमारे पास आकर इस प्रकार से वचन बोल रही थी – जिसे मैंने पहले कभी भी नहीं सुना था।

बाबूजी, कुछ खाना है बहुत भूखी हूँ, कुछ पैसे दे दो। भगवान आपको खुश रखे, आपको बहुत सारा धन दे, आपके पुत्र की नौकरी लग जाए अन्य प्रकार के शुभ और आशीर्वाद वाले वचन बोल रही थी।

पिता जी– अरे बेटा! चलो, यह तो इसी प्रकार का नाटक करते हैं।

बेटा – पिताजी यह माता नाटक नहीं कर रही है, इन्हें सचमुच में भूख लगी है।

पिताजी– नाटक करने वाला कभी इतने वचन नहीं कहता, जो इस माता ने कहे हैं और वह भी अपने हृदय की आन्तरिक भावना से कहे हैं। मैंने तो कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो आपसे बिना कुछ लिए इतने शुभ वचन बोले या आशीर्वाद दे। इन्होंने तो हम से कुछ भी नहीं लिया, फिर भी हमारे लिए इतने शुभ वचन बोले।

पिताजी, अधिकतर नाटकबाज़ लोगों की बजह से ही बहुत लोग ऐसे ही मर जाते हैं, जिनको बहुत आवश्यकता होती है पर वे भूखे ही मर जाते या लोग उनको यही मानकर चले जाते हैं कि यह सब नाटकबाज हैं, ऐसे ही करते हैं।

मेरे द्वारा यह सब कहने पर भी मेरे पिताजी ने उस महिला को खाना भी न खिलाया और ना ही पैसे दिये। बस यही कहते रहे, 'तुम अभी छोटे हो, यह सब तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा, पर मैंने भी मन में ठान लिया कि मुझे आज कोई वस्तु नहीं लेनी। मैं अपने लिए कोई वस्तु खरीद कर नहीं लाया। मुझे इस बात का बहुत लम्बे समय तक दु:ख रहेगा कि मैं एक महिला को खाना भी न खिला सका। ❑

सामाजिक सरोकार के अंतर्गत कम्बल वितरण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि डा. बी.पी. सिंह (क्षे.नि.इग्नू) व अन्य

गोद लिए गाँव के जरुरतमंदों को कम्बल वितरण करते हुए मुख्य अतिथि, सचिव, प्राचार्य व अन्य

जरुरतमंद बुजुर्ग महिलाओं को कम्बल वितरित करते हुए प्राध्यापकगण

कम्बल वितरण कार्यक्रम में मौजूद जरुरतमंद लाभार्थी, प्रवक्तागण व गोद लिए गाँव के छात्र/छात्राएँ

कार्यक्रम में गणेश एवं सरस्वती वन्दना करती छात्राएँ

मुख्य अतिथि डा. बी.पी.सिंह (क्षे. नि. इग्नू) को प्रतीक चिन्ह भेंट करते सचिव श्री दीपकगोयल व प्राचार्य डा.वाई.के.गुप्ता

कम्बल वितरण कार्यक्रम में उपस्थित गोद लिए 14 गाँवों के सम्मानित ग्राम प्रधान मुख्य अतिथि, सचिव, प्राचार्य व ज्ञान परिवार

पी.एस.आर.आई.,दिल्ली व डा.ज्ञानेन्द्र फाउण्डेशन के नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का शुभारम्भ करते अपर आयुक्त श्री वी.के.सिंह

मुख्य अतिथि अपर आयुक्त अलीगढ़ मण्डल श्री वी.के. सिंह को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए सचिव श्री दीपक गोयल

ज्ञान ज्योति कार्यक्रम में गोद लिये गाँवों के छात्र–छात्राओं को दीपावली के अवसर पर तेल, दिया, बाती वितरित की

ज्ञान ज्योति कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनिल सारस्वत चेयरमेन वी.सी.टी.एम. को प्रतीक चिन्ह भेंट करते सचिव

गौरैया संरक्षण जागरूकता का शुभारम्भ करते प्रबंधक श्री मनोज यादव व प्राचार्य डा. वाई.के. गुप्ता व छात्र

ए.डी.एम. (सिटी) श्री अवधेश तिवारी ने ज्ञान महाविद्यालय के छात्रों को गौरैया संरक्षण हेतु घौंसले प्रदान किए

बी.टी.सी. विभाग द्वारा सामाजिक सरोकार के अन्तर्गत 'पर्यावरण जनचेतना रैली ग्राम मंदिर नगला में आयोजित की

सचिव श्री दीपक गोयल व प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता ने पौधारोपण अभियान का शुभारम्भ किया

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना के अन्तर्गत बढ़ौली की छात्रा चिंकी शर्मा को सिलाई मशीन भेंट करते हुए डा.आर.के. भटनागर

श्रीमती व डा.आर.के.भटनागर (पूर्व मंडलायुक्त) द्वारा क्विज विजेता अर्पिता गौतम को स्मार्ट फोन वितरित करते हुए

मकर संक्राति के अवसर पर प्रबंधक श्री मनोज यादव व प्राचार्य द्वारा खिचड़ी दान अनाथालय में वितरण हेतु वाहन किया रवाना

मदर टेरेसा अनाथालय में ज्ञान परिवार द्वारा दाल चावल का दान

नववर्ष पर आयोजित सहभोज करती हुई छात्राएँ

पहल कार्यक्रम के अंतर्गत जरूरतमंद बच्चों को गर्म कपड़े वितरित करते हुए स्वयंसेवक

पंतग प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ प्राचार्य, प्रबन्धक, उपप्राचार्य व प्राध्यापकगण

ज्ञानरथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता

इन्टरनेशनल गुड़विल सोसाइटी ऑफ इण्डिया की रीजनल चैप्टर की बैठक में उपस्थित डा. आर.के. भटनागर (पूर्व मण्डलायुक्त), डा. ए.के. तौमर (पूर्व प्राचार्य, डी.एस. कालिज), श्री दीपक गोयल (सचिव), श्री आर.पी. सक्सैना व अन्य अधिकारी

सामाजिक सरोकार

सिनेमा हॉल में ज्ञान परिवार ने प्रेरणाप्रद फिल्म 'दंगल' देखी

डिजिटल इण्डिया अभियान के तहत नि:शुल्क जियो 4जी सिम छात्रों को प्रदान करते हुए प्राचार्य डा.वाई.के. गुप्ता

'खुशियों की सवारी' का महाविद्यालय प्रांगण में भव्य स्वागत

पी.एस.आर.आई. व डा. ज्ञानेन्द्र फाउण्डेशन के नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का उद्‌घाटन करते श्री दीपक गोयल

राष्ट्रीय दिवस

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 2016 — प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण — गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2017

गणतंत्र दिवस (26 जनवरी, 2017) समारोह में उपस्थित ज्ञान महाविद्यालय परिवार

संसार के सोलह सत्य

✍.........
मानिक वर्मा
आई.टी.आई. (फिटर) प्रथम वर्ष

1. सर्वोत्तम दिन –
   आज
2. सबसे उपयुक्त समय –
   अभी
3. सबसे बड़ा शत्रु–
   भय
4. सबसे खतरनाक वस्तु –
   घृणा
5. सबसे बुरी भावना –
   ईर्ष्या
6. सबसे बड़ी बाधा–
   अधिक बोलना
7. सबसे बड़ी भूल –
   समय की बर्वादी
8. सबसे विश्वसनीय मित्र –
   आपका अपना हाथ
9. सबसे बड़ा शिक्षक–
   जो आपको सीखने की प्रेरणा दे।
10. सबसे बुद्धिमान मनुष्य–
    जो वह करे, जिसे वह स्वयं ठीक समझे।
11. सबसे बड़ी आवश्यकता–
    सामान्य ज्ञान
12. सबसे सरल काम –
    दूसरे की त्रुटि निकालना।
13. सबसे बड़ा दिवालिया–
    जिसने अपना उत्साह खो दिया हो।
14. सबसे भाग्यशाली व्यक्ति –
    जो अपने काम में व्यस्त रहे।
15. सब धर्मों का निचोड़ –
    सच्चाई, ईमानदारी, विनम्रता।
16. सबसे अधिक आपके लिए सर्वोत्तम भाषा –
    अपनी राज भाषा।

❑

मेरी सोच

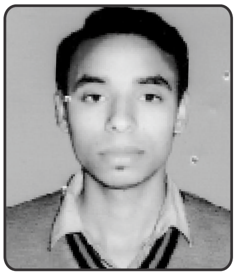

✍.........
संचित पाठक
बी. सी. ए. (VI Sem.)

अगर इन्सान अपने जीवन में उन्नति करना चाहे तो वह उन्नति अवश्य कर सकता है।

मैं संचित पाठक मानता हूँ कि परेशानियाँ आती हैं और जाती हैं लेकिन परेशानियों से अपना रास्ता नहीं बदलना चाहिये। आत्मविश्वास के साथ आप गगन भी चूम सकते हैं। बिना आत्मविश्वास के मामूली–सी उपलब्धियाँ अपने से परे हैं। जिन्दगी में कुछ पाना है तो उसको पाने के लिये सही तरीके और अच्छी सोच की जरूरत होती है क्योंकि जब ईश्वर एक दरवाजा बन्द करता है तो दूसरा दरवाजा स्वयं ही खुल जाता है।

"Those who are Successful do not do Different things but they do things Differently"

❑

प्रेरक

पैसा और इन्सान

इन्सान कहता है कि पैसा आये तो मैं कुछ करके दिखाऊँगा और पैसा कहता है कि तू कुछ करके दिखा तो मैं आऊँ। लेकिन आदमी जब जिद करता है तो क्रोध जन्म लेता है और जब क्रोध पैदा होता है तो अहंकार स्वयं पैदा हो जाता है। अहंकार पैदा होने से ईर्ष्या उत्पन्न होती है। और ईर्ष्या उत्पन्न होने से हिंसा उत्पन्न होती है।

एक औरत बेटे को जन्म देने के लिये अपनी सुन्दरता त्याग देती है, लेकिन वही बेटा अपनी बीबी के लिए अपनी माँ को त्याग देता है।

माँ अपने बच्चे से आस लगाये रहती है कि बुढ़ापे में मेरा बेटा सहारा बनेगा। लेकिन माँ को जब जीवन की कठोर स्थितियों में उसकी जरूरत होती है; तब इंसान ठोकर मार देता है। लेकिन यही नहीं कि उसे ऐसे कर्म का फल नहीं मिले। मनुष्य का जीवन एक ऐसा खेत है जिसमें कर्म बोए जाते हैं और उन्हीं के अच्छे बुरे फल काटे जाते हैं।

❑

हास्य व्यंग्य

सच बनाम झूठ

✍.........
पंकज कुमार
आई. टी. आई.

मैं कोई झूठ बोलियाँ – कोई ना

1. कुछ सच रोशनी में दिखाई नहीं देते, मगर कुछ झूठ बहुत चमकीले होते हैं।
2. सत्य की खोज करना ऋषि मुनियों का काम था। आम आदमी झूठ न बोले तो जिन्दगी दुश्वार हो जाती है।

हुआ यह है कि एक दफा एक वकील ने भरी अदालत में सच बोल दिया। बेचारा मुकदमा तो हार ही गया, साथ ही कानून व्यवस्था भी सनाका खा गई। बाकी वकील भी उसे शक की निगाह से देखने लगे। वकील का काला कोट सफेद हो गया। कहने का मतलब यह है कि भाई साहब आप तंदुरुस्ती चाहते हैं तो सच्चाई से परहेज कीजिए। सयाने लोग कह गये हैं कि ''कुछ सच रोशनी में दिखाई नहीं देते, मगर कुछ झूठ बहुत चमकीले होते हैं, अँधेरे में भी दिखाई देते हैं। यह तय है कि अगर आपने झूठ बोलकर Casual Leave नहीं ली तो वह स्वीकृत नहीं होगी।

सच तो आँखों में किरकिरी की तरह चुभता है।

कई मरीज ऐसे हैं, जिन्होंने डॉक्टरों से झूठ बोला और बच गये। सच तो हमेशा गाली और जूते खिलवाता है। सच बोलने की जिद में एक बार एक काने को काना, एक गधे को गधा और कुत्ते को कुत्ता कह दिया। काने ने मुझे थप्पड़ मारा, गधे ने लात और कुत्ते ने काट लिया। सही में झूठ को ही साहित्य कहते हैं। झूठ बोलना भी एक कला है। सरकार अगर लगातार झूठ नहीं बोले तो वह फिर चल ही नहीं सकती।

झूठ बोलकर पति–पत्नी वर्षों साथ निभाते हैं, जिसने जिस दिन सच बोला, समझो उसी दिन तलाक तय है।

भाई साहब अब झूठे को कौआ भी नहीं काटता!

सत्य की खोज करना ऋषि–मुनियों का काम है। आम–आदमी झूठ न बोले तो जिन्दगी दुश्वार हो जाती है। शपथ लेने के उपरान्त कितना झूठ बोलना पड़ता है, यह बात सिर्फ मंत्री ही जान सकते हैं। शायद इसीलिए मंत्री–विधायकों से चरित्र प्रमाण–पत्र नहीं माँगा जाता। सच बोलने से राजा हरिशचन्द्र जैसी ही दुर्गति होती है। झूठ बोलती प्रेमिका सबको अच्छी भाती है। मगर सच बोलती पत्नी अच्छी नहीं लगती। झूठ में बड़ी शक्ति होती है। इसी के कारण आप एक कामयाब वकील बन सकते हैं।

सच बोलने बाले को पुलिस ज्यादा मारती है।

कल मैंने एक सपना देखा। सपने में मैंने मोदी जी से पूछा – आप पर आरोप है कि आप भारत के प्रधानमंत्री हैं। बताइये यह सच है या झूठ। वह मुस्कुराकर चुप हो गये और अफ्रीका जाकर ड्रम बजाने लगे। ❑

- ☞ *एक देश की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से आँका जा सकता है कि वहाँ जानवरों से कैसा व्यवहार किया जाता है।*
- ☞ *हो सकता है आप कभी न जान सकें कि आपके काम का क्या परिणाम हुआ, लेकिन यदि आप कुछ करेंगे ही नहीं तो कोई परिणाम नहीं होगा।*
- ☞ *क्रोध एक प्रचंड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है, वह उसे बुझा देगा जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता, वह स्वयं अपने को जला लेगा।*
- ☞ *कायरता से कहीं ज्यादा अच्छा है, लड़ते–लड़ते मर जाना।*

लेख

"मेरे लघु जीवन के अनुभव

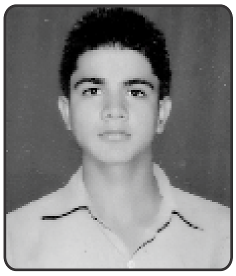

✍.........
भोला सिंह
आई. टी. आई. (इलैक्ट्रीशियन)

कठिन समस्याओं के सरल समाधान : यह जीवन एक संग्राम है। जीवन संग्राम का सबसे बड़ा शस्त्र आत्म विश्वास है, जिसे अपने ऊपर, अपने संकल्प बल और पुरुषार्थ पर भरोसा है, वही सफलता के अन्य साधनों को जुटा सकता है। आत्म संयम भी उसके लिए संभव है, जिसे अपने ऊपर भरोसा है। पाश्चात्य विचारक भी ऐसा मानते हैं कि "God help those, who help himself"' जिसने अपने गौरव को भुला दिया, जिसे अपने में कोई शक्ति दिखायी नहीं पड़ती, जिसे अपने में केवल दीनता, अयोग्यता एवं दुर्बलता ही दिखलायी पड़ती है, वह किस बलबूते पर आगे बढ़ पायेगा। इस संघर्ष भरी दुनिया में वह अपना अस्तित्व कैसे कायम रख सकेगा? बहती धारा में जिसके पैर उखड़ गये, उसे पानी बहा ले जाता है, पर जो अपना हर कदम मजबूती से रखता है वह धीरे–धीरे तेज धारा को भी पार कर लेता है।

सत्य ही कहा है कि –

"न्यायात पथः प्रबिचलन्ति पदं न धीराः"

"धैर्यवान लोग कभी न्याय के रास्ते से विचलित नहीं होते।"

हमें परमात्मा ने उतनी ही शक्तियाँ दी हैं, जितनी कि किसी अन्य पुरुष को। जिस समस्या को दूसरे पार कर चुके हैं, उसे हम क्यों नहीं पार कर सकते? फौज के सैनिकों को एक जैसे हथियार दिए जाते हैं। कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक जैसी ही शिक्षा प्रदान की जाती है। निशाना लगाना व शिक्षा ग्रहण करना, दोनों ही सिपाही व विद्यार्थी की अपनी सूझ–बूझ, लगन व एकाग्रता पर निर्भर करती है।

सभी व्यक्ति असीम सामर्थ्य लेकर इस भूमण्डल पर अवतीर्ण होते हैं। प्रश्न केवल आत्म विश्वास, निष्ठा, भरोसा करने और दृढ़ निश्चय करने के साथ उसके सदुपयोग का है, जिन्हें अपने ऊपर भरोसा है, वे अपनी उपलब्ध सामर्थ्य का सदुपयोग करके कठिन से कठिन मंजिल को भी पार कर सकते हैं। कथन है कि –

काम जितना भी कठिन हो, किन्तु उकताते नहीं,
भीर में चंचल बनें, वो वीर कहलाते नहीं॥
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले–फले॥

निराश न हो ....

निराश न हों, चाहे जीवन कष्टों से परिपूर्ण क्यों न हो ? निराशा मृत्यु समान है। यदि आचार्यों का सानिध्य प्राप्त है तो निश्चित ही सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा। कभी–कभी हम अन्तःकरण की स्थितियाँ को ही सुख– दुःख का कारण मान लेते है जैसे कि पहली स्थिति मन की है। मन के अनुकूल होने पर सुख और प्रतिकूल होने पर दुःख। ये दोनों ही स्थितियाँ मिथ्या हैं। सुख–दुःख में साम्य स्थापित होना चाहिए।

बुद्धि में ऐसे विचार भी आ जाते हैं; जैसे सफल होने पर हम सोचते हैं कि हमने बुद्धि से विचारकर यह कार्य किया, हम योग्य हैं। असफल होने पर हम यह सोचते हैं कि कार्य ऐसे करते, यह कमी रह गयी, उसने गड़बडी कर दी, वे विरोध में आ गये। ठीक उसी प्रकार चित्त एवं अहंकार की स्थितियों को सफल, असफल मानते हैं। स्वयंकर्ता के झूठे अहंकार पर अवलम्बित होते हैं, और परमेश्वर की आस्था से उदासीन रहकर कभी यह विचार नहीं करते कि जो कुछ हुआ वह उन्हीं परमात्मा की असीम अनुकम्पा से हुआ है। सफलता–असफलता उन्हीं के द्वारा प्रदत अमृत है। अतः सदैव सतत प्रत्यनशील बने रहें।

आप प्राणमय परमपिता की शक्ति हैं। अतः अपने हृदय में श्रेष्ठ कर्मों के प्रति समर्पण भाव लायें। मृत्यु के बाद भी आपका अस्तित्व रहेगा।

शरीर बदलते हैं, आप नहीं। आप दृढ़ विश्वास एवं निष्ठा से उसी गति को प्राप्त होंगे जो आप चाहते हैं। यह चाह भी एक अन्तिम स्थिति पर आपके प्राणों में लीन हो जायेगी; फिर आप चेष्टा रहित होंगे। वही परम परमेश्वर का देश परमानन्द से पूर्ण होगा, ऐसा साधना से ही संभव है।

प्रयास सतत करते रहें, प्रयास आपकी साधना है साधना ईश्वर का देश है और साक्षात्कार भी है, परमानन्द भी है। आ शान्त शीतल देश में, हो जा अमर, हो जा अजर

आदर्श वाक्य –

सत्य के मार्ग पर चलने वालों के लिए एक
मार्ग बन्द होने पर अनेक द्वार खुल जाते हैं।

❑

व्यंग्य

चुटकुले

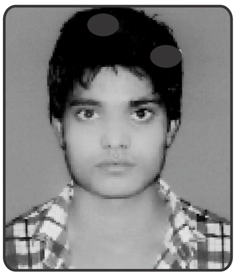

✍.........
रवेन्द्र कुमार
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

एक बार एक चार आदमी सड़क पर जा रहे थे। पीछे से एक बस आ रही थी। वह बस उनके पास होकर गुजरी.....

पहला आदमी : जिस आदमी के सर पर बाल नहीं थे बोला, ओह! इतनी धूल, इसने तो बालों की सैंटिंग ही खराब कर दी।

दूसरा आदमी : जिसकी दोनों टाँगें नकली थीं, अभी रुक मैं इसे पकड़कर लाता हूँ।

तीसरा आदमी : जिसके एक भी हाथ नहीं था; वह कहता है – पकड़, जल्दी पकड़। दो–चार मैं भी लगा दूँगा।

चौथा आदमी – जो अन्धा था रुको, मत भागो। मैंने इस बस का नम्बर नोट कर लिया है। ❑

- ☞ *प्यार और सहकार से भरापूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।*
  आचार्य महेश चन्द्र व्यास भागवताचार्य
- ☞ *पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तः करण को उज्ज्वल करती है।*
  महात्मा गाँधी
- ☞ *सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो वाणी से नहीं, अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।*
  आचार्य महेश चन्द्र व्यास
- ☞ *खुशी से बढ़कर पौष्टिक खुराक और कोई नहीं है दूसरों को खुशी देना सबसे बड़ा पुण्य है।*
  आचार्य महेश चन्द्र व्यास

प्रेरक

पिता का स्मरण

✍.........
अनस मजीदी
बी. टी. सी.

पिताजी एक प्रसिद्ध शायर होने के साथ–साथ एक सरकारी अध्यापक भी थे। पिताजी ही मेरे सबसे पहले अध्यापक हैं। उन्होंने ही मुझे और मेरे भाई–बहनों को बहुत अच्छे संस्कार दिये, जिसके कारण समाज में आज हम बहुत प्रसिद्ध हैं। पिता शब्द शहद की तरह है, जिसके बोलते ही मुँह में मिठास–सी घुल जाती है।

पिताजी आप जो बचपन से हर मोड़ पर हमारे सुख–दु:ख में साथ निभाते थे और कामयाबी की मंजिल तक पहुँचाने में ख़ासकर आपका ही हाथ होता था। दुनिया में आप जैसी मेरे लिए कोई हस्ती नहीं। आपकी दुआ और मेहनत का ही नतीजा है जो मैं आज (ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़) से बी.टी.सी., कर रहा हूँ। पिता जी हमारे लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते थे। यह समय इनका हमसे बिछड़ने का नहीं था। अभी मुझे और मेरे भाई–बहनों को इनकी ज़रूरत थी। पिताजी के अज़ीज दोस्त जनाब रफीक राही साहब ने हमारे बुरे समय में हमारा बहुत साथ दिया है।

पिताजी एक उम्दा और खुशमिजाज़ अध्यापक और शायर होने के साथ–साथ उत्तर प्रदेश के हजारों दिलों पर राज़ करने वालों में से एक थे।

पिताजी ने अपने अन्तिम समय में क्या खूब कहा है।

''किताबे छोड़ जाऊँगा, रिसाले छोड़ जाऊँगा।
मैं मरने पर भी यादों के, उजाले छोड़ जाऊँगा।। ❑

- ☞ *हमारी सबसे बड़ी कमजोरी हार मान लेना है। सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है, हमेशा एक और प्रयास करना है।*
  – थॉमस एडीसन
- ☞ *यदि उद्देश्य नेक न हो तो ज्ञान बुराई हो जाता है।* *– प्लेटो*

प्रेरक

अवसर व समय

✍.........
श्रद्धा माथुर
बी. ए. प्रथम वर्ष

1. आज दुनिया में अवसरों की कमी नहीं है, आज के बराबर अवसरों से भरी दुनिया पहले कभी नहीं थी।
2. असफल आदमी को हर अवसर में बाधा दिखाई देती है और सफल आदमी को हर बाधा में अवसर।
3. मिनटों की फिक्र करें, घंटों की फिक्र आपको अपने आप हो जायेगी।
4. बड़े सपने देखिये क्योंकि बड़े सपने ही आदमी के खून में उबाल ला सकते हैं।
5. एक समय पर दो काम करना यानि दो में से एक भी काम न करना।
6. चलने और दौड़ने से पहले आदमी को रेंगना पड़ता है।
7. काम कल पर ढकेलना, क्रेडिट कार्ड का प्रयोग करने के समान है, बिल मिलने तक अच्छा लगता है।
8. समय की बर्वादी, यानि जीवन की बर्वादी।

सफलता

1. सफल होना सिर्फ संभव ही नहीं बल्कि आज के युग में पहले की तुलना में अधिक आसान है।
2. सफलता किसी खास योग्ता वाले अथवा ज्ञान वाले व्यक्ति के लिए आरक्षित नहीं है। बल्कि यह तो किसी भी व्यक्ति की इच्छा, मेहनत व लगन पर निर्भर है।

❑

☞ *आप आज जो करते हैं उस पर आपका भविष्य निर्भर करता है।*

महात्मा गाँधी

☞ *शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा, सौन्दर्य और यौवन दोनों को परास्त कर देती है।* –

काव्य

थोड़ा सा सम्मान

✍.........
कविता
बी. ए. द्वितीय वर्ष

थोड़ा सा सम्मान मिला, पागल हो गये।
थोड़ा सा धन मिला, बेकाबू हो गये।
थोड़ा सा ज्ञान मिला, उपदेशक बन गए।
थोड़ा सा यश मिला, दुनिया पर हँसने लगे।
थोड़ा सा रूप मिला, दर्पण ही तोड़ डाला।
थोड़ा सा बल मिला, दूसरों को तबाह कर दिया।
इस प्रकार तमाम उम्र चलनी में पानी भरते रहे–
अपनी समझ में बहुत बड़ा कार्य करते रहे।

❑

लेख

प्रमुख देशों के शिक्षक दिवस

✍.........
नवीन कुमार
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

जिस प्रकार भारत में टीचर्स–डे 5 सितम्बर को मनाया जाता है उसी प्रकार दुनिया के कई देशों में अलग –अलग तारीखों में मनाया जाता है। यहाँ दुनिया के कुछ प्रमुख देशों के टीचर्स–डे दिए जा रहे हैं–

वर्ल्ड टीचर्स–डे	➜	5 अक्टूबर
ब्राजील	➜	15 अक्टूबर
चीन	➜	10 सितम्बर
मलेशिया	➜	16 मई
न्यूजीलैण्ड	➜	2 अक्टूबर
श्रीलंका	➜	6 अक्टूबर
जर्मनी	➜	5 अक्टूबर
अर्जेन्टीना	➜	11 सितम्बर
अमेरिका	➜	मई के पहले हफ्ते में
आस्ट्रेलिया	➜	अक्टूबर का आखिरी शुक्रवार

❑

कहानी

बेटे का गुस्सा और माँ का किस्सा

✍.........
तनु रानी
बी. ए. (तृतीय वर्ष)

रोहन एक दिन दफ्तर से लौटा, तो बहुत नाराज था। मम्मी ने पूछा, आज डिनर में क्या खाओगे? जाने क्या रोहन उन्हीं पर बरस पड़ा–आप एक दिन अपने मन से खाना नहीं बना सकतीं क्या? रोज मेरी परीक्षा क्यों लेती हैं? मम्मी समझ गईं कि यह गुस्सा उनके दफ्तर का है। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था। मम्मी ने पूछा, तुम्हें अपना दफ्तर अच्छा नहीं लगता, तो छोड़ दो। दूसरी नौकरी मिल जाएगी। बाहर निकलोगे नहीं, तो पता कैसे चलेगा कि बाहर है क्या? रोहन ने कहा, अगर इतना आसान ही होता, तो दो साल पहले ही छोड़ चुका होता। मम्मी ने रोहन से पूछा, एक कहानी सुनोगे? रोहन ने हाँ में सिर हिला दिया। मम्मी बोली, 'एक बार आदमी माउण्ट एवरेस्ट चोटी पर सैर करने गया। उसने देखा चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़, खूब हरे-भरे पेड़ और एकदम ताजा हवा। वह उन हसीन वादियों का आनन्द ले रहा था कि एक तेज आवाज चोटी से टकराई और गूँजती हुई उसके कानों में पड़ी। ऐसा लगा, जैसे कोई चीख रहा हो आजादी, आजादी। वह आदमी हैरान हो गया। वह ढूँढ़ने लगा कि आखिर यह आवाज़ कहाँ से आ रही है।

काफी ढूँढ़ने के बाद उसे पिंजरे में बंद एक तोता मिला, जो चिल्ला रहा था। आजादी, आजादी। उस तोते को आजाद करने से पहले ही वह आदमी इस आनन्द से भर गया कि वह उस तोते को आजाद करने जा रहा है। मुस्कराते हुए उसने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया, पर तोता तो डरकर अंदर की तरफ भाग गया। आदमी काफी देर तक उसे पुचकारता रहा, लेकिन तोता पिंजरे में बैठा वही राग अलापता रहा– आजादी-आजादी। काफी देर कोशिश के बाद आदमी ने हाथ अंदर डाला, तोते को पकड़ा और बाहर निकालकर एक पहाड़ से नीचे की तरफ छोड़ दिया, ताकि तोता उड़ जाए। ऐसा करके उसे बहुत सुकून मिला। वह उस रात पास के एक शहर में रुक गया सुबह होने से पहले आदमी को फिर वही आवाज सुनाई दी... आजादी-आजादी। वह दोबारा पिंजरे के खुले दरवाजे से वापस पिंजरे के अन्दर बैठकर चिल्ला रहा है... आजादी-आजादी। रोहन ने पूछा, मम्मी आप क्या कहना चाह रही हैं? मम्मी बोली, बेटा हमारा मन भी इस तोते की तरह है, जो पिंजरे में रहने का अभ्यस्त हो चुका है। वह सारे कष्ट सह सकता है, पर पिंजरा छोड़कर जाने को तैयार नहीं हो पाता। पिंजरा छोड़ोगे, तभी तो पता चलेगा कि बाहर की दुनिया कितनी खूबसूरत है।

शिक्षा : परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की कोशिश स्वयं को करनी चाहिए। ❑

- ☞ *अपनी गलती को स्वीकारना झाडू लगाने के समान है, जो धरातल को चमकदार और साफ कर देती है।*
- ☞ *मेरी अनुमति के बिना कोई भी मुझे ठेस नहीं पहुँचा सकता है।*
- ☞ *आप तब तक यह नहीं समझ पाते कि आपके लिए कौन महत्वपूर्ण है, जब तक आप उन्हें वास्तव में खो नहीं देते।*

लेख

मेहनत का फल

✍.........
भूपेन्द्र कुमार
बी. टी. सी. (प्रथम वर्ष)

एक गाँव की बात है। इस गाँव में एक छोटा सा परिवार रहता था, उस परिवार में तीन सदस्य थे, जिसमें माता-पिता तथा इनका एक इकलौता पुत्र था, पुत्र का नाम श्याम था।

श्याम की पढ़ाई में रुचि नहीं थी। वह जब भी पढ़ाई करता तो ध्यान से नहीं पढ़ता था। माँ ने उसका दाखिला गाँव के पास ही के स्कूल में कराया।

कभी-कभी श्याम से उसके प्रधानाचार्य प्रश्न पूछते तो वह आसानी से जबाव नहीं दे पाता था। कभी -कभी श्याम के अध्यापक भी नाराज हो जाते और उसे नियमित रूप से पढ़ाई की सलाह देते।

एक दिन स्कूल के प्रधानाचार्य ने श्याम को पास बुलाया और उसे एक पत्र दिया तथा उन्होंने कहा ये पत्र अपने माता-पिता को दे देना।

श्याम जब अपने घर पहुँचा तो उसकी माँ घर पर थीं। उसने पत्र अपनी माँ को दे दिया। माँ ने तुरन्त पत्र पढ़ा और पढ़कर अपनी अलमारी में रख दिया।

श्याम ने अपनी माँ से पूछा कि माँ इसमें क्या लिखा था। माँ ने जबाव दिया कि इसमें लिखा था कि तुम्हारा बेटा पढ़ने में बहुत होशियार है और प्रधानाचार्य ने कहा है कि हमारे स्कूल में तुम्हारे बेटे को पढ़ाने के लिए कोई अध्यापक नहीं है। इस बात को सुनकर श्याम बहुत खुश हुआ और बोला कि माँ अब मैं कहाँ पढ़ूँगा।

माँ ने कहा कि जो हमारे गाँव में अच्छा स्कूल है, उसमें तुम्हारा दाखिला करायेंगे।

श्याम खुशी से झूमने लगा और उसने उस स्कूल में दाखिला ले लिया।

उस स्कूल में श्याम ने खूब मेहनत की और अच्छे अंकों के साथ पास हुआ और उसका मनोबल बढ़ गया। वह सोचने लगा कि वह पढ़ने में बहुत अच्छा है।

श्याम अपने कठिन परिश्रम तथा लगन से पढ़ाई करने के कारण एक डॉक्टर बन गया और उसे अपने आप पर बहुत गर्व हुआ।

श्याम शहर में अपनी डॉक्टर की नौकरी करता रहा और एक दिन अपने गाँव पहुँचा तथा अपनी माँ से बोला कि माँ मेरी मेहनत रंग लायी और मैं एक अच्छा व्यक्ति बन गया।

माँ ने बचपन के दिन याद करते हुए श्याम से कहा कि जो पत्र तुमने मुझे दिया था, पता है उसमें क्या लिखा था?

उसमें लिखा था कि तुम्हारा बेटा पढ़ने में बहुत कमजोर है और हम इसे अपने स्कूल में नहीं पढ़ा सकते हैं। इसीलिए मैंने तेरा दाखिला दूसरे स्कूल में करवाया जिससे तू मेहनत से पढ़ाई करके एक अच्छा व्यक्ति बन सके।

माँ ने श्याम से कहा कि तुमने यह बात आज सिद्ध कर दी कि मेहनत करके अपनी मंजिल तक पहुँचा जा सकता है, बशर्ते तुम्हारे पास धैर्य होना चाहिए।

इतनी बात सुनकर श्याम के खुशी से आँसू टपकने लगे और अपनी माँ के गले लगकर कहने लगा, 'माँ तुमने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी।' ❑

☞ *अति सुन्दर होने के कारण सीता का हरण हुआ, अत्यन्त अहंकार के कारण रावण मारा गया, अत्यधिक दान देने के कारण बलि अपना सब कुछ गवाँ बैठा। इसलिए हर व्यक्ति को अति से बचना चाहिए।* -चाणक्य

☞ *गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है, उसकी खुशबू ही उसका संदेश है।* -महात्मा गाँधी

लेख

क्या इंग्लिश एक हउआ है ?

✍.........
प्रिंस सक्सैना
बी. कॉम. (द्वितीय वर्ष)

दोस्तो आज मैं खास बातों को शेयर करना चाहता हूँ। English भाषा कैसे सीखें? अगर मैं किसी नौ-सिखिए की बात करूँ...। क्या होता है, उनके साथ? उन्हें English एक हऊआ की तरह लगती है। घबराहट होती है, हे भगवान्! कैसे बोलूँ? क्या होगा मेरा? जब भी हम English में कुछ बोलने की कोशिश करते हैं तो हमारे मन में ये डर बैठा हुआ होता है, कहीं हमसे कोई गलती तो नहीं हो जायेगी। सामने वाला क्या सोचेगा? वो हँस तो नहीं देगा, बगैरा-बगैरा। आप लोग भी मेरी इस बात से सहमत होंगे।

दोस्तो, मैं दावे के साथ कहना चाहता हूँ, लोग आपके ऊपर जरूर हँसेंगे और आपका मजाक भी उड़ायेंगे। तो मेरा यही गुरुमंत्र है, इसके लिये आप तैयार रहें, वो अगर हँसेंगे, थोड़ा बेशर्म बन जायें, कोई हर्ज नहीं दोस्तो। ये मनुष्य जाति की प्रवृत्ति है कि वो किसी को अच्छा नहीं देख सकते, दूसरों पर कीचड़ उछालना तो आम फिदरत है। अरे लोगों ने तो भगवान को नहीं छोड़ा तो फिर हम कहाँ और आप कहाँ।

आप मन में ठान लें, मुझे तो बोलना है जो भी मन में आये, बिंदास बोलें, चाहे वो गलत ही क्यों न हो, जब तक आप गलती नहीं करेंगे तो सीखने की आदत कैसे आएगी? असफलता से न डरें। एक सफल व्यक्ति से एक असफल इंसान ने पूछा, 'तुम सफल कैसे हुए और हम असफल क्यों?' तो सफल व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैं सफल इसलिये हूँ क्योंकि मैं आपसे ज्यादा बार असफल हुआ था।' क्या गजब उत्तर है। दोस्तो ! एक बच्चा जब चलना सीखता है तो बहुत गलतियाँ करता है, लड़खड़ाता है, कभी गिरता है, कभी सँभलता है लेकिन वो सीखना नहीं छोड़ता और एक दिन ऐसा भी आता है जब वो सरपट भागने लगता है, तो दोस्तो! आप दूसरों की न सोचें। कोशिश करते रहें, जो होगा देखा जायेगा। भाड़ में जाये दुनिया आग लगे बस्ती में मस्त राम मस्ती में।

मैं आप लोगों को एक घटना के बारे में बताना चाहता हूँ। बात उस समय की है, जब मैं कोचिंग नहीं चलाता था। खाना खाने के बाद अक्सर मैं अपने हिरदेश के साथ टहला करता था और हम इंग्लिश में प्रेक्टिस किया करते थे, एक दिन सामने से दो लड़कियाँ आ रही थीं। हमने ध्यान नहीं दिया। हमारा English में Conversation चल रहा था। जैसे ही वो बगल से गुजरीं तो उन्होंने एक Comment मारा, ये देखो अंग्रेज की औलाद English झाड़ रहे हैं। मेरे दोस्त ने तुरन्त Reply दिया क्या आपको English आती है? तो उन्होंने कहा जी नहीं, फिर दोस्त ने कहा, "Then mind your own language" उसके बाद वे सॉरी बोल कर चली गयीं।

वास्तव में मजाक वो लोग उड़ाते हैं जिन्हें English नहीं आती। जो व्यक्ति English के जानकर हों वो हमेशा आपको Encourage करेंगे। वो आपको Support करेंगे। अच्छा एक बात और बता दूँ हमें कभी-कभी यह भी लगता है- वो तो English का जानकार है, उनसे मैं कैसे बात करूँ? कहीं गलती न हो जाये। फिर से कहूँगा वह बिल्कुल भी मजाक नहीं उड़ायेगा। आप कोशिश जरूर करें। अब दूसरी बात, आपके दिमाग में एक सवाल आ रहा होगा ठीक है हम प्रैक्टिश करेंगे। चाहे गलत-सलत ही क्यों ना हो लेकिन कहीं हम गलत English तो नहीं सीख जायेंगे। जी नहीं, बिल्कुल भी ऐसा नहीं होगा। एक दिन आयेगा, जब आपको खुद-व-खुद पता चल जायेगा कि गलती कहाँ है। आपको अजीब लगेगा जैसे- हिन्दी में एक वाक्य बोलूँ, 'मोहन स्कूल जाती है।' कैसा लगा ? पढ़ने के बाद। एकदम अजीब लगा। जी हाँ English में भी आपके साथ ऐसा ही होगा।

Let me tell you... water cuts the crock not because of power, but because of steady. ❑

बी.टी.सी. के नए बैच के मिस व मिस्टर फ्रेशर के विजेता छात्र/छात्रा सम्मानित

बी.टी.सी. मिस्टर व मिस फेयरवेल को सम्मानित करती हुए श्रीमती रितिका गोयल, प्रबन्धक मनोज यादव

बी.टी.सी. छात्रों द्वारा प्रतिभा परिचय

कार्यक्रम में कव्वाली का छात्राओं द्वारा मंचन

बी.टी.सी. प्रतिभा परिचय व विदाई समारोह में उपस्थित बी.टी.सी. के छात्र–छात्राएँ, प्राध्यापकगण, मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों के साथ

बी.एड. प्रतिभा परिचय कार्यक्रम में देशभक्ति मशाल से प्रस्तुति दी गई

बी.एड. छात्राओं द्वारा प्रतिभा परिचय दिया गया

एन.एस.एस. स्वयसेवकों को गौरैया के संरक्षण हेतु घोंसलों का वितरण किया

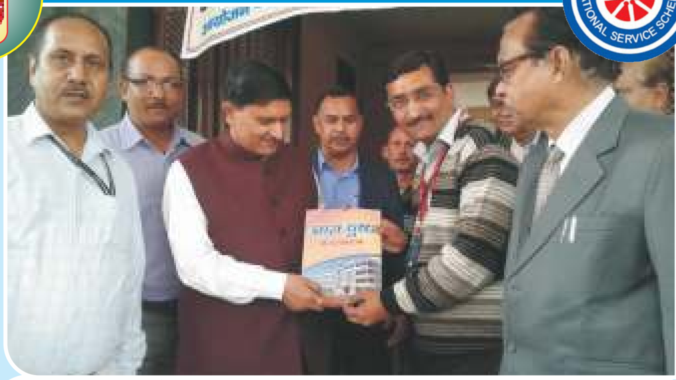

सचिव युवा कार्यक्रम भारत सरकार श्री राजीवगुप्ता (IAS) को मथुरा में ज्ञान पुष्प भेंट करते, साथ में क्षे.नि.रा.से.यो. डा.अशोकश्रोती

'बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओ' की साइकिल संदेश यात्रा का पड़ियावली में स्वागत करते एन.एस.एस. स्वयंसेवक, प्राचार्य

मतदाता जागरूकता रैली में भाग लेते एन.एस.एस. स्वयंसेवक

एन.एस.एस. स्वयंसेवकों व प्राध्यापकों द्वारा वृक्षारोपण

स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत साफ सफाई करते स्वयंसेवक

एन.एस.एस. दिवस पर स्वयंसेवक सद्दाम हुसैन को प्राचार्य डा. वाई.के. गुप्ता ने सम्मानित किया

सात दिवसीय शिविर के समापन पर वर्ष 2015–16 के उपस्थित एन.एस.एस. स्वयंसेवक

शिविर समापन पर मुख्य अतिथि, प्रधान पड़ियावली श्री यतेन्द्र पालसिंह, सचिव व प्राचार्य द्वारा स्वयंसेविकाओं का सम्मान

एन.एस.एस. के विशेष शिविर 2016–17 में उपस्थित स्वयंसेवक एवं सेविकायें

डिजीटल इंडिया के तहत डिजिटल भुगतान हेतु पोस्टर बनाकर ग्रामीणों को किया जागरूक

एन.एस.एस. गीत प्रस्तुत करतीं हुयीं स्वयंसेविकायें

एस.एस.पी. श्री लवकुमार ने रक्तदान दिवस (14 जून, 2016) को डा.ललितउपाध्याय (कार्यक्रम अधिकारी को सम्मानित किया

ग्राम पड़ियावली में विशेष शिविर में मुख्य अतिथि, सचिव, प्राचार्य द्वारा स्वयंसेवकों को शील्ड देकर सम्मानित किया

गांधी जयन्ती पर स्वच्छ भारत का संदेश देते स्वयंसेवक व कार्यक्रम अधिकारी

स्वैच्छक रक्तदान दिवस पर प्रभारी जिलाधिकारी/ए.डी.एम. सिटी श्री एस.बी. सिंह ने डा. ललितउपाध्याय को सम्मानित किया

मतदाता जागरूकता

राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर मतदान जागरूकता हेतुमानव श्रृंखला में सम्मिलित छात्राएँ

मतदाता जागरूकता हैण्डराइटिंग प्रतियो. की विजेता बी.एड. छात्राएँ मेघाली व कविता को डी.एम./मण्डलायुक्त की मौजूदगी में सम्मान

मतदाता जागरूकता हैण्डराइटिंग प्रतियोगिता में शहर के कई महाविद्यालय के छात्रों ने प्रतिभाग किया

मतदान दिवस पर मण्डलायुक्त श्री सुभाषचन्द्र शर्मा, डी. एम. श्री हृषिकेश भास्कर याशोद द्वारा डा. ललितउपाध्याय का सम्मान

शैक्षिक भ्रमण

ज्ञान महाविद्यालय के संकाय सदस्य परिवार सहित नैनीताल ग्रीष्मकालीन भ्रमण पर गए

वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं ने प्रेम मंदिर एवं वृन्दावन/मथुरा के मंदिरों के दर्शन किए

विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने आगरा में ताजमहल व लाल किला का अवलोकन किया

बी.एड. के छात्र–छात्राओं ने शैक्षिक भ्रमण कर मथुरा–वृन्दावन के मंदिरों में दर्शन किए

बूझो तो जानें

✍.........
रूबी
बी. कॉम. (प्रथम वर्ष)

काली है पर कान नहीं,
लम्बी है पर नाग नहीं,
बाँधते हैं पर डोर नहीं। (चोटी)

बीमार नहीं रहती,
फिर भी खाती है गोली,
बच्चे, बूढ़े डर जाते,
सुन इसकी बोली। (बंदूक)

खाते नहीं चबाते लोग,
काठ में कड़वा रस संयोग,
दाँत-जीभ की करे सफाई,
बोलो बात समझ में आई। (दाँतुन)

मैं मरूँ मैं कटूँ,
तुम्हें क्यों आँसू आए। (प्याज)

काला मुँह लाल शरीर,
कागज को वह खाता,
रोज शाम को पेट फाड़कर,
कोई उन्हें ले जाता। (लैटर बॉक्स)

हरी डंडी, लाल कमान,
तौबा-तौबा करें इन्सान। (लाल मिर्च)

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा-सीधा एक समान। (जहाज)

मैं हरी, मेरे बच्चे काले,
मुझको छोड़, मेरे बच्चे खाले। (इलायची)

चार हैं रानियाँ और एक है राजा,
हर एक काम में उनका अपना साझा।
(अँगूठा और अँगुलियाँ)

एक फूल है काले रंग का,
सिर पर सदा सुहाए,
तेज धूप में खिल-खिल जाता,
पर छाया में मुरझाये। (छाता)

साँपों से भरी एक पिटारी,
सबके मुँह में दी चिंगारी,
जोड़े हाथ निकलता घर से,
फिर घर पर सिर दे दे पटके। (माचिस)

हाथी, घोड़ा, ऊँट नहीं,
खाए दाना, घास नहीं।
सदा ही धरती पर चले,
होए न कभी उदास। (साइकिल)

हाथ-पैर सब जुदा-जुदा,
ऐसी सूरत दे खुदा,
जब वह मूरत बन ठन आवे,
हाथ धरे तो राग सुनावे। (हुक्का)

अन्त कटे कौआ बन जाए,
प्रथम कटे दूरी का माप,
मध्य कटे तो कार्य बने,
तीन अक्षर का उसका नाम। (कागज)

ऐसा शब्द बताओ जिससे,
फूल, मिठाई, फल तीनों बन गये।
(गुलाब जामुन)

एक छोटा-सा बन्दर,
जो उछले पानी के अन्दर। (मेंढक)

एक घोड़ा ऐसा कि जिसकी छः टाँगे दो सुम,
और तमाशा ऐसा देखा पीठ के ऊपर दुम।
(तराजू)

ऊँट की बैठक, हिरन की चाल,
वह कौन-सा जानवर, जिसके दुम न पाल।
(मेंमना)

न काशी, न काबा धाम,
बिन जिसके हो चक्का जाम,
पानी जैसी चीज़ है वह,
झट बताओ उसका नाम। (पैट्रोल)

तीन पैर की तितली नहा धोकर निकली।
(समौसा) ❑

हँसी के ठिठोले

✍.........
सोनम
बी. कॉम. (प्रथम वर्ष)

1. ***पापा*** – बेटा ध्यान रखो, रोज-रोज कहीं जाने से इज्जत घटती है।
   बेटा– इसलिए, तो मैं कहता हूँ कि मुझे रोज-रोज स्कूल मत भेजो।
2. ***टीचर*** – बताओ, सबसे अधिक नशा किस चीज में होता है ?
   भीकू – किताब में।
   टीचर– वो कैसे ?
   भीकू – किताबें खोलते ही नींद आ जाती है।
3. **शिक्षिका (छात्रों से)** – बच्चों, इंसान वही है जो दूसरों के काम आए।
   छात्र–मैडम, एग्जाम के समय आप न खुद इंसान बनती हैं, न ही हमें बनने देती हैं।
4. **पत्नी (पति से)** – चलो आज कहीं घूमने चलते हैं और ड्राइविंग मैं करूँगी।
   पति (पत्नी से) – हाँ, ताकि जायेंगे कार में और आयेंगे कल के अखबार में।
5. **संता**– पापा घर में मेहमान आये हैं और शरबत बनाने के लिए नींबू नहीं हैं, अब क्या करें?
   बंता – टेंशन किस बात की है? नये विमवार में 100 नींबू की शक्ति है। डाल दो कुछ बूंदें।
6. **राजू** – नेहा, जरा जीभ से यह कागज काट दो।
   नेहा – क्यों ।
   राजू – क्योंकि पापा कहते हैं कि तुम्हारी जीभ कैंची की तरह चलती है।
7. **अनिल (हरीश से)** – यार! तुम तो बिना बात के लाल-पीले हो जाते हो।
   हरीश – क्या करूँ? मेरा जन्म ही होली के दिन हुआ था।
8. **पापा (बेटे से)** – बेटा! दिल लगाकर पढ़ा करो।
   बेटा – पर पापा आप तो चश्मा लगाकर पढ़ते हैं।
9. **टीचर** – सोनू से गुस्सा करते हुये कहा कि तुम कमाल के लड़के हो ?
   सोनू – टीचर नहीं, मैं रामपाल का लड़का हूँ।
10. संता और बंता ने पहली बार रिक्शा देखा।
    संता – देखो कितना छोटा ताँगा है।
    बंता – हाँ और गधा भी तो देखो एक दम आदमी जैसा दिख रहा है।
11. **सुखराम** – ट्रेन से उतरा और स्टेशन मास्टर से सवाल किया। भाई साहब यह कौन-सा स्टेशन है।
    स्टेशन मास्टर – अरे बेबकूफ तुझे यह भी नहीं पता कि यह रेलवे स्टेशन है।

संख्या का ज्ञान

ईश्वर एक है।
हाथ दो होते हैं।
महादेवियाँ तीन कही जाती हैं।
वेद चार होते हैं।
पाण्डव पाँच थे।
भारत में ऋतुएँ छः होती हैं।
सप्ताह में सात दिन होते हैं।
मकड़ी के आठ पैर होते हैं।
ग्रह नौ होते हैं।
रावण के दस मुख थे।

❑

लेख

जुनून न छोड़ें

✍.........
तनु अग्रवाल
बी. कॉम. (द्वितीय वर्ष)

जिन्दगी में सफलता चाहिए, तो अपने लक्ष्य के प्रति फोकस रहें औरउसे पाने के लिए खुद में जुनून भर लें। आपके विश्वास पर पनपा यह जुनून ही आपको सफलता मिलने तक उर्जावान बनाए रखेगा। अक्सर लोग टारगेट सेट करने के बाद उसके शॉर्टकट ढूँढते-फिरते हैं। इस बात को गाँठ बाँध लें कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। अगर सफल होने के लिए शॉर्टकट नाम की कोई चीज़ होती, तो दुनिया में आज बेरोजगारी न होती । लोग शॉर्टकट के हुनर से किसी न किसी रोजगार में व्यस्त होते। किसी भी इंसान को सफलता, लक्ष्य की सही योजना बनाकर उसमें सफल होने की लगातार कोशिश करने से मिलती है। इसलिए काम न करने के कारणों पर सोचने में समय नष्ट करने के बजाए, यह सोचें कि उस काम को अच्छी तरह कैसे करें ?

जुनून सफल न होने तक इंसान को सोने नहीं देता और वह अपने टारगेट में हर छोटे-बड़े काम को समान उत्साह से पूरा करता है। जुनून का उदाहरण भारतीय टेस्ट क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली में ही देख लीजिए। उनकी एक पारी में एक या दो छक्के उन्हें सफल नहीं बनाते। पूरी पारी में वह चौके- छक्कों के साथ-साथ एक-एक दो-दो रन के लिए भी पूरी ऊर्जा और उत्साह के साथ दौड़ते हैं। छोटे-छोटे रनों के लिए दौड़ने में उन्हें शायद चौके-छक्कों से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन विराट बड़ा स्कोर बनाने के लिए चौके-छक्कों से छोटे इन रनों का महत्व भी बखूबी समझते हैं। इसलिए वे पूरे जुनून और दमख़म के साथ छोटे टारगेट पर भी पूरी ऊर्जा लगाते हैं। सफलता के इसी फार्मूले को आपको भी समझना होगा और सिर्फ बड़े मौकों पर ही नहीं बल्कि छोटी-छोटी चीज़ों ही मिलकर बड़ी बनती है। ❑

लेख

स्वयं पर विश्वास करना सीखें

✍.........
बिन्दु कुमारी
बी. ए. (प्रथम वर्ष)

1. स्वयं पर विश्वास करना सीखें। लक्ष्य बनायें एवं उन्हें पूरा करने के लिए वचनबद्ध रहें। जब आप अपने द्वारा बनाये गए लक्ष्य को पूरा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा देता है।
2. खुश रहें, खुद को प्रेरित करें, असफलता से दु:खी न होकर बल्कि उससे सीख लें, क्योंकि दु:ख भी जीवन का एक अंग है।
3. सकारात्मक सोचें, विनम्र रहें एवं अच्छे काम की शुरूआत किसी अच्छे दिन से करें।
4. इस दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं है। आत्म विश्वास से ही नामुमकिन कार्य को मुमकिन कर सकते हैं।
5. सच बोलें, ईमानदार रहें, धूम्रपान न करें, प्रकृति से जुड़ें, अच्छे कार्य करें एवं अच्छे लोगों की मदद् करें क्योंकि ऐसे कार्य आपको सकारात्मक शक्ति देते हैं और आपके आत्मविश्वास को गिरने नहीं देते हैं। ❑

पैसा	–	*भगवान नम्बर 2*
सपना	–	*एक ऐसी फिल्म जिसे भगवान मुफ्त में दिखाता है।*
ताला	–	*मुफ्त में पहरेदारी करने वाला चौकीदार।*
झगड़ा	–	*वकील का कमाऊ बेटा।*
चाय	–	*कल्युग का अमृत*
पैन	–	*कागज की सड़क पर दौड़ने वाला यंत्र*
फिल्म	–	*कल्युग की रामायण ।*
साँप	–	*भगवान शंकर के गले का नेकलस।*
कब्रिस्तान	–	*दुनिया का आखिरी स्टेशन।*

❑

लेख

भारत में प्रथम

✍.........

याशिका गुप्ता

बी. एस-सी. (तृतीय वर्ष)

(Z.B.C.)

- भारत में सबसे पहले रुपये का सिक्का – **1542 में** शेरशाह सूरी द्वारा ढलवाया गया।
- भारत में पहला छापाखाना (प्रिंटिंग प्रेस) **1556 में** गोवा में एक पुर्तगाली द्वारा शुरू किया गया।
- भारत में पहली जनगणना **– 1871 में हुई**
- भारत में पहला अंग्रेजी समाचार पत्र– **बंगाल गजट** (1790 में जेम्स आगस्तुस द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ)
- भारत में पहला डाक टिकट – **1852 में कराँची में** जारी किया गया।
- भारत में टेलीग्राफ लाइन– **1854 में कलकत्ता से आगरा तक** शुरू हुई जो 1280 कि.मी. लम्बी थी और जिसे 1857 में लाहौर तक बनाया गया था।
- भारत में पहली रेलवे लाइन – **बम्बई से ठाणे** (16 अप्रैल 1853 को शुरू हुई)
- भारत में हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट – **शिवसमुद्रम** (1902 में कावेरी नदी पर हुआ)
- भारत में पहला सिनेमाघर – **कलकत्ता में बना** (1907 में जे.एफ. मदन के द्वारा बनवाया गया था)
- भारत की पहली फिल्म **– आलमआरा** (निर्देशन निर्देशक ईरानी 1931 में प्रदर्शित की गयी)
- भारत की पहली स्वदेशी फिल्मी गीत **– किसान कन्या** (1937 में प्रदर्शित की गयी)
- भारत का पहला संविधान संशोधन **–1950 में**
- भारत की पहली पंचवर्षीय योजना **– 1951 में हुई**
- भारत का पहला आम चुनाव **–1952 में हुआ**
- भारत का प्रथम कृत्रिम उपग्रह **– आर्यभट्ट** (19 अप्रैल, 1975)
- चढ़ता हुआ बैरोमीटर क्या इंगित करता है ? **– अच्छा मौसम**
- ताप बढ़ने पर द्रवों की श्यानता **घटती है।**
- एक समतल दर्पण पर बना बिम्ब होता है। **– वास्तविक**
- फाथोमीटर किसका मापक है ? **– समुद्र की गहराई का**
- ग्रहगति का सिद्धान्त किसने दिया था? **– केपलर ने**
- यमुना नदी का उद्‌गम स्थान कहाँ से शुरू है ? **– बंदरपूंछ**
- किस विद्वान ने सुझाव दिया है कि पृथ्वी की उत्पत्ति गैसों एवं धूल से हुयी है ? **– ओ.शिक्ड**
- अधिकांश मौसमी गतिविधियाँ किस वायुमंडलीय परत में होती हैं ? **– क्षोभमण्डल**
- फसली कृषि की विशेषता है **– व्यापारिक अन्न कृषि की**
- अलकनन्दा और भागीरथी का संगम कहा जाता है **– देव प्रयाग**
- भारतीय संसदीय प्रणाली प्रभावित है **– ब्रिटेन से**
- संसद तथा विधानमण्डल की प्रक्रिया ली गयी है **– ब्रिटेन से**
- संसदीय विशेषाधिकार प्रभावित हैं। **–ब्रिटेन से**
- भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक अधिकार प्रभावित हैं। **अमेरिका से**
- सर्वोच्च न्यायालय का संगठन और शक्तियाँ प्रभावित हैं। **यू.एस.ए. से**

❑

व्यक्ति अकेला पैदा होता है और अकेले ही मर जाता है। वह स्वयं ही अपने अच्छे और बुरे कर्मों को भुगतता है और वह अकेले ही स्वर्ग या नर्क को जाता है। – चाणक्य

लेख

सबसे अनमोल तोहफा

✍.........
याशिका गुप्ता
बी. एस-सी. (तृतीय वर्ष)
(Z.B.C.)

रेलवे स्टेशन पर साइड में लेटी हुई महिला दर्द से कराह रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसे कोई भारी परेशानी हो रही है। अन्य यात्रियों की भाँति मैंने भी उसे नज़र अन्दाज कर दिया।

मेरे साथ मेरा आठ साल का बेटा अंश भी था। वह उस बूढ़ी महिला के दर्द को दिल से महसूस करके उसकी तरफ टकटकी लगाकर देख रहा था। पापा यह बुढ़िया क्यों चिल्ला रही है? इसे क्या कोई परेशानी है। अंश ने पूछा। बेटा, इसे कहीं दर्द हो रहा होगा या फिर इसे कोई और परेशानी होगी। मैंने जबाव दिया।

'गाड़ी तो एक घण्टा लेट है', अंश ने कहा और मैंने हाँ में उत्तर दिया। यह तो बहुत कमजोर हो गई है। बेचारी दर्द से कितनी परेशान हो रही है। पापा क्यों न इसे दवाई दिलायें। 'यह हमारी कोई रिश्तेदार थोड़े ही है और देखो कितनी गन्दी हो रही है। कोई देखेगा तो उल्टा हमारी मजाक बनायेगा', मैंने कहा। पापा आप ही तो कहते हैं कि गरीबों और असहायों की हमेशा मदद करनी चाहिये और आज आप कह रहे हैं कि कोई देखेगा तो मजाक बनायेगा। भला किसी मजबूर की मदद करने से कोई हमारी मजाक क्यों बनायेगा।

फिर मैंने उसे समझाते हुए कहा, 'बेटा! ये नाटक कर रही है इसे कहीं दर्द नहीं हो रहा है। मैं.......

अंश बीच में बोल पड़ा, 'नहीं, ये नाटक नहीं कर रही है, मैं जाकर देखता हूँ। इतना कहकर वह उस बुढ़िया की ओर चला गया। 'पापा जल्दी आओ, देखो इन्हें कितनी तेज बुखार है', अंश चिल्लाते हुए बोला। उसकी आवाज़ सुनकर भी मैं अन्जान बना रहा परन्तु जब अंश ने दुबारा बुलाया तब मैं उसके पास गया और देखा कि बुढ़िया काफी गन्दी है और दर्द से कराह रही है। पापा चलो, इन्हें दवा दिलाते हैं', अंश ने फिर कहा।

अब मेरे दिल में भी उस असहाय महिला की मदद करने की भावना जागृत हो चुकी थी। मैंने कहा, 'चलो, पास के दवाघर से हमने उस बुढ़िया को दवा दिलाई। कुछ देर बाद जब बुढ़िया को कुछ राहत मिल गई, त्यों ही बुढ़िया हम दोनों को दुआओं की पोटली दे रही थी कि भगवान तुम्हारा भला करे।

तुम दोनों सदा सुखी रहो। तुम्हारा घर धन-धान्य से भरा रहे। भगवान तुम्हारे जैसी सन्तान हर माँ को दे।

उस बूढ़ी औरत के इन शब्दों ने वाणों का कार्य किया और मेरे अन्दर बैठे असुर को मार दिया।

उसकी मदद करने का मुझे अंश व खुद पर फक्र था। साथ ही असहायों की मदद करने की भावना भी मेरे अन्दर जाग्रत हो गई थी।

ट्रेन आने वाली थी। हम दोनों प्लेटफार्म पर पहुँचे ही थे कि वहाँ पर बैठे यात्रियों ने भी हम दोनों को दुआओं की गठरी देना शुरू कर दिया।

आपका बेटा, बेटे के रूप में फरिश्ता है। ईश्वर ऐसा बेटा हर किसी को दे। ये आपके ही संस्कार है, जो आपके बेटे द्वारा उस असहाय व यहाँ पर उपस्थित हर माजी को प्राप्त हुए है। भगवान आपको हमेशा खुश रखे। ये वाक्य थे। वहाँ उपस्थित कुछ महिलायें व पुरुष कह रहे थे कि हम सबको इस बालक से सीख लेनी चाहिए।

मैं ये सब सुनकर आज बहुत ही खुश था कि ऊपर वाले ने मुझे बेटे द्वारा कितना अनमोल तोहफा दिया है, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। ये सोचते हुए मैंने अंश को अपने सीने से लगाकर कहा- धन्यवाद! बेटा इतना सुनकर अंश मेरे सीने से चिपक गया। ❑

हास्य

जिसके हम मामा हैं।

✍.........
रेनू शर्मा
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

एक सज्जन गंगा स्नान करने वाराणसी गए। स्टेशन पर उतरते ही एक लड़के 'मुन्ना' ने नमस्ते मामा जी कहकर चरण छुए और कहा 'पहचाना नहीं' सज्जन ने जब गंगा स्नान किया तो मुन्ना कपड़े आदि लेकर गायब हो गया। वह तौलिया लपेटे मुन्ना को इधर-उधर ढूँढते रहे, परन्तु वह नहीं मिला। हम सब भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर 'मामाजी' की तरह ही हैं। हम प्रजातन्त्र की गंगा में डुबकी लगाते हैं और समस्याओं का तौलिया लपेटे मुन्ना भांजे रूपी एम.पी.,. एम.एल.ए. को ढूँढते रहते हैं। जो पाँच साल नहीं मिलता।

परन्तु चुनाव के समय चरणों में गिरकर कहता है। पहचाना नहीं। ❑

व्यंग्य

कंजूसी की हद

एक कंजूस बनिया दुकान पर गया। उसने दुकानदार से केले के भाव पूछे। दुकानदार ने उत्तर दिया-बारह रू. दर्जन हैं। कंजूस बनिया बोला कि एक केला कितने का दोगे ? दुकानदार ने उत्तर दिया- एक रू. का एक केला दूँगा। बनिया बोला कि चालीस पैसे में दे दो। दुकानदार ने कहा कि चालीस पैसे में तो सिर्फ छिलका ही मिलता है, केला नहीं। यह सुनकर बनिया बोला कि ये लो साठ पैसे और मुझे एक केला छीलकर दे दो ''छिलका तुम अपने पास रखो''

कहानी

पिता और पुत्र

✍.........
तनु कुमारी
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

एक जवान बाप जिसका नाम रामलाल था। रामलाल अपने छोटे पुत्र (पंकज) को गोद में लिये बैठा था। कहीं से उड़कर एक कौआ उनके सामने खपरैल पर बैठ गया।

पंकज ने पिता से पूछा - यह क्या है ?

पिता- कौआ है बेटा।

पकंज ने फिर पूछा - यह क्या है?

पंकज बार-बार पूछता था। यह क्या है?

पिता स्नेह से बार-बार कहता था... कौआ है!

कुछ वर्षों में पंकज बड़ा हुआ और रामलाल बूढ़ा हो गया। एक दिन पिता चटाई पर बैठे थे। घर में कोई पंकज से मिलने आया। पिता ने पूछा - कौन आया है?

पंकज ने नाम बता किया। थोड़ी देर में कोई और आया और रामलाल ने फिर पूछा। इस बार झल्लाकर पंकज ने कहा- आप चुपचाप पड़े क्यों नहीं रहते!

रामलाल ने लम्बी साँस खींची। हाथ से सिर पकड़ा, बड़े दुःख भरे स्वर में धीरे-धीरे वह कहने लगा- मेरे एक बार पूछने पर अब तुम क्रोध करते हो और तुम सैकड़ों बार पूछते थे-एक ही बात यह क्या है? मैंने कभी तुम्हें झिड़का नहीं। मैं बार-बार तुम्हें बताता... कौआ है।

अपने माता-पिता का तिरस्कार करने वाले ऐसे लड़के बहुत बुरे माने जाते हैं। तुम सदा इस बात का ध्यान रखो कि माता-पिता ने तुम्हारे पालन-पोषण में कितना कष्ट उठाया है और तुमसे कितना स्नेह किया है।

❑

लेख

सत्साहस

✍.........
रेनू शर्मा
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

संसार के सभी महापुरूष साहसी हुए हैं। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि को हम याद करते हैं। आल्पस के शिखरों को पार करने वाले हनी बल और नेपोलियन अतुलनीय साहस वाले थे। साहस के प्रभाव से तैमूर, बाबर, शिवाजी, रणजीत सिंह ने कुछ से कुछ कर दिया।

क्रोध में अन्धा होकर स्वार्थवश साहस दिखाना निम्न श्रेणी का साहस माना जाता है। मध्यम श्रेणी का साहस शूरवीरों में पाया जाता है। परन्तु ज्ञान की कमी के कारण वह अन्धकार-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च साहस के लिए शारीरिक बल और धन जरूरी नहीं। इसके लिए हृदय की पवित्रता, उदारता और कर्तव्य परायण आदि गुण जरूरी हैं। ज्ञान से रहित व्यक्ति पशु के समान हैं।

सर्वोच्च साहस के लिए कर्तव्य परायण होना परम आवश्यक है। मारवाड़ का बुद्धधन सिंह, जयपुर जाकर बस गया। मराठों ने मेवाड़ पर हमला कर दिया। मातृभूमि को संकट में पड़ा जानकर बुद्धधन सिंह का खून खौल उठा। उसने अपने वीर राजपूतों के साथ मेवाड़ आकर समय पर अपने देश और राजा की सेवा की।

सत्साहसी के लिए स्वार्थ का त्याग आवश्यक है। हमें देश, काल और कर्तव्य का विचार करना चाहिए। स्वार्थ रहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्य परायण बनने का यत्न करना चाहिए। ❑

लेख

डरना नहीं जिन्दगी से

✍.........
कुमारी किरन
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

जीवन में कभी डरना नहीं चाहिए और डर से कभी सर झुकाना नहीं चाहिए तथा किसी के दुर्व्यवहार अत्याचार अथवा धमकियों से डर कर अपने आपको हारा हुआ न मानकर अपनी हिम्मत बनाये रखनी चाहिए। कोई किसी का साथी नहीं होता, हम अपने आप के साथी हैं। हम अपनी हर मुश्किल का सामना अपने आप कर सकते हैं। अपनी जिन्दगी के लिये लड़ना है हमें।

मुश्किलों का सामना करने वाला अपनी हिम्मत, अपने विश्वास और साहस को बनाये रखने वाला हमेशा बड़ा होता है अर्थात् मुश्किलों में अपने आपको छोटा नहीं समझना चाहिए।

कभी मुश्किलों में अपने आप को छोटा तथा हारा हुआ न समझकर जिन्दगी से लड़ते रहना ही जिन्दगी का मूल उद्देश्य है। अगर इस संसार में जीना है, तो लड़ना है। जिन्दगी में कितनी भी बड़ी मुश्किलें क्यों न हों; उनका सामना करना, कभी पीछे मत हटना। हमेशा जिन्दगी में आगे बढ़ने की भावना-उत्साह रखना चाहिए। ❑

तिरंगें का कफन

क्यों मरते हो हर वक्त रकम के लिए।
मरना हो तो मर जाओ वतन के लिए॥
अगर मर गये आतंक की गलियों में,
तो चंदा न मिलेगा कफन के लिए।
अगर मर गये अपने वतन के लिए,
तो तिरंगा भी काम आयेगा,
कफन के लिए॥

हास्य पंक्तियाँ

पढ़ाई और संगीत

✍.........
शिवानी वार्ष्णेय
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

पढ़ाई से जुड़े गाने.....

School : ये गलियाँ ये चौबारा, यहाँ आना न दोबारा
Coaching : इधर चला मैं, उधर चला वो
Maths : अजीब दासताँ है ये, कहाँ शुरू कहाँ खतम
Science : आ खुशी से खुद खुशी कर लें
Geography : मुसाफिर हूँ यारो, न घर है न ठिकाना
Economics : क्यों पैसा-पैसा करती है, पैसे पे क्यों मरती है।
Exam : जिया धड़क-धड़क जाये।
Result : चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है....
Pass : आज मैं ऊपर-आसमाँ नीचे
Fail : जग सूना-सूना लागे रे... ❑

काव्य

कौन क्या है ?

✍.........
पूजा सागर
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

नेता → झूठ बोलने वाला सरकारी कम्प्यूटर।
ताला → बिना वेतन का चौकीदार।
झगड़ा → वकील का कमाऊ बेटा।
चौक → अध्यापक की तलवार।
स्वप्न → मन में दवी भावना का चिन्ह।
घर → सास बहू की संग्राम भूमि।
विवाह → आज़ाद व्यक्ति को उम्र कैद।
दु:ख → भगवान को याद करने का मौसम।
अंग्रेजी → भारतीयों पर गुलामी की अमिट छाप
अखबार → शिक्षित लोगोंको लगी।ला-इलाज बीमारी
टैक्स ऑफिसर → व्यापारी के लिए ❑

कहानी

मेरे बेटे

✍.........
आरती
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

सामने वाले मकान में आंटी को चोट लग गई थी। मैं भी दो दिन बाद उनका हाल-चाल पूछने गई। अकसर रास्तें में शादी विवाह या किसी भी सुख-दु:ख के अवसर में आंटी मुझे मिल जाती थीं। उनकी सौम्यता से प्रभावित होकर मैं हमेशा पाँव छूती, दो-तीन मिनट उनसे बतियाकर आगे बढ़ जाती थी परन्तु उनके निजी जीवन से पूर्णतया अनभिज्ञ थी। जैसे ही मैं उनके घर गई। वह मुझे देखकर खुश हो गईं। फिर बताने लगीं कि कैसे उनका पैर फिसल गया और फ्रैक्चर हो गया। थोड़ी देर में उन्होंने मेरे लिये चाय बनवाई। चाय लेते हुये मैंने पूछा आंटी आपकी देखभाल कौन कर रहा है? उन्होंने बताया ये मेरी बेटी है, परसों ही आ गयी थी, पलस्तर 45 दिन का है। 15-15 दिन तीनों बेटियाँ रह जायेंगी। मैंने पूछा और आपका बेटा? वह ठहाका मारकर हँसी और बोली अभी भी शंका है? अरे बिटिया! ये तीनों मेरे बेटे ही हैं। बेटियाँ तो कहने को हैं और कौन बेटा अपनी माँ की इस तरह देखभाल करता है। मुझे तो सपने में भी बेटे का ख्याल नहीं आया। अब हम आज़ाद हैं बेटा-बेटी का फर्क मिटाना हमसे ही शुरू होगा। सो मैंने तो अपना फर्ज़ पूरा किया; यह कहकर वह मेरी ओर देखकर गर्व से मुस्कुराने लगीं। ❑

सुनो बंधुओ सुनो साथियो, आजादी की बेला आयी। हर्ष हो रहा चहुँ ओर है, गीत मल्हार साथ में लायी।

✍.........
खजान सिंह
कम्प्यू.ओप.ः बी.टी.सी. विभाग

15 अगस्त सन् 1947 था, अंग्रेजों ने शासन छोड़ा,
देशभक्ति का ज्वार, प्रबल था, दमन चक्र का घेरा तोड़ा,
जैक यूनियन उतर गया था, लहर तिरंगे की लहराई। सुनो.........

जोश, जुनून, उछाल, उछलता था, सबकी नस-नस में पल-पल,
बालक, वृद्ध, युवा, महिलायें, सबकी रहती सक्रिय हलचल,
एक मन्त्र था वन्दे मातरम्, हिन्दुस्तानी भाई-भाई।

कुछ कहते आजादी पूरी, कुछ कहते आधी आजादी,
कहते पालिस्टर सस्ता है, क्यूँ है इतनी महँगी खादी,
आजादी के दीवानों की क्यों अब भी बगिया कुम्हलाई।

पाकर आजादी हम सबने, क्या खोया, क्या पाया अब तक,
शील, विनय, संस्कार, सभ्यता, संस्कति, गौरव जीवित कब तक,
न्याय-धर्म का मार्ग पकड़कर ही अब तक सृष्टि रह पायी।

संतों, गुरूओं की यह धरती, वेद, पुराण, यहाँ की धरती,
राम-कृष्ण, वीरों के आगे थर्राती रिपुओं की छाती,
हर युग में इस पुण्य धरा पर, अद्भुत लीला होती आयी।

आओ सब मिल करें प्रतिज्ञा, धर्म ध्वजा ना झुकने देंगे।
स्नेह, ज्ञान की पावन गंगा, सरस धार न रूकने देंगे।
कोटि प्राण की आहुति देकर, आखिर यह आज़ादी पायी।। सुनो......... ❑

- 😉 इंजीनियरिंग का फार्म भरते हुए छात्र ने पास खड़े चौकीदार से पूछा– यह कॉलिज कैसा है ? चौकीदार – बहुत बढ़िया है, हमने भी यहीं से इंजीनियरिंग की है।
- 😉 एक शराबी छत पर से नीचे गिर गया। सब लोग आये और पूछने लगे.... क्या हुआ ?
  शराबी : पता नहीं भाई। मैं भी अभी–अभी नीचे आया हूँ।
- 😉 पत्नी बीमार पति को पीट रही थी। सास ने वजह पूछी। पत्नी : जी आयुर्वेदिक दवाई लाई थी । वैद्यजी ने कहा था, अच्छे से कूट–कूटकर देना।

शायरी

✍.........
सचिन कुमार
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

मैं बहुत बड़ा शायर तो नहीं हूँ पर जब दिल दुःखों या खुशियों से भर उठता है तो भावना अपने-आप एक शायरी कहने को या लिखने को मजबूर कर देती है। पर मैं अपनी शायरी इस शायरी से प्रारम्भ करता हूँ जिससे आपको यह कहने का मौका न मिले कि यह तो शायरी बाज है।

1. ये दुनिया वाले भी बड़े अजीब होते हैं,
कभी दूर तो कभी करीब होते हैं,
दर्द ना बताओ तो हमें कायर कहते हैं,
और दर्द बताओ तो हमें शायर कहते हैं।

2. जिन्दगी नहीं हमें दोस्तों से प्यारी,
दोस्तों पे हाजिर है जान हमारी,
आँखों में हमारे आँसू हैं तो क्या,
जान से प्यारी है मुस्कान तुम्हारी।

3. जिसकी आँखें आँसुओं से नम नहीं,
क्या समझते हो उसे कोई ग़म नहीं,
तुम तड़प कर रो दिये तो क्या हुआ,
गम को छुपा के हँसने वाले भी कम नहीं।

4. ना जाने ऐसा क्यों होता है,
जो रखे खुश सबको वह क्यों रोता है,
मिल ना सके प्यार जिसका,
ना जाने प्यार उसी से क्यों होता है।

5. एक माटी का दीया सारी रात,
अँधियारे से लड़ता है।
तू तो ज्ञान महाविद्यालय बी.एड. का छात्र है,
फिर किस बात से डरता है।

6. जख्म जब मेरे सीने के भर जायेंगे,
आँसू भी मोती बनकर बिखर जायेंगे,
ये मत पूछना किस-किस ने धोखा दिया,
वर्ना कुछ अपनों के चेहरे उतर जायेंगे।

7. जब होंसला बना लिया ऊँची उड़ान का,
फिर क्या कद नापना आसमान का,
जब तेरे पास पैसा है,
जब तक यह सब कहेंगे भाई तू कैसा है।

8. कदम यूँ ही डगमगा गये रास्ते में,
वैसे सँभलना हम भी जानते थे,
ठोकर भी लगी तो उसी पत्थर से
जिसे हम अपना मानते थे।

9. मैं सब के लिए अपनी कहानी नहीं कहता,
क्यों बहता है दरिया कभी पानी नहीं कहता,
शायद सच है कि हम मुद्दतों से टूटे हुये हैं,
पर ये एहसास गलत है कि हम अभी रूठे हुये हैं।

10. मिट्टी मेरी कब्र से चुरा रहा है कोई,
मरकर भी दिल को बहुत, याद आ रहा है कोई,
एक पल की जिन्दगी और दे खुदा,
मायूस मेरी कब्र से जा रहा है कोई।

11. पीपल के पत्तों जैसा ना बनो,
जो वक्त आने पे सूख के गिर जाते है।
बनाना है तो मेंहदी के पत्तों जैसे बनो,
जो खुद पिसकर भी दूसरों की जिन्दगी में रंग लाते हैं।

12. फूलों में गुलाब नशे में शराब,
प्रोग्राम में ताली और मजाक में साली,
धातु में सोना दुःख में रोना,
प्यार में गम और आप के दिल में हम।

13. ज्ञान का छात्र हूँ बी.एड. में पढ़ता हूँ,
न किसी से झगड़ा न किसी से लड़ता हूँ,
यह मत कहना की सचिन तो शायर है,
मैं अपनी अगली शायरी में,
नववर्ष की मुबारकबाद करता हूँ।

14. चन्दन की लकड़ी फूलों का हार,
जनवरी का महीना शीत की फुहार।
मुबारक हो आप सबको नववर्ष,
गणतन्त्र दिवस और अन्य त्योहार॥ ❑

पद्य

गज़ल

✍.........
लोकेश कुमार
बी.कॉम. (तृतीय वर्ष)

जब उजाले में रात न मिले तो,
अंधेरे को रात बनाते चलिये।

जब दीपक से रोशनी हो न सके तो,
जीवन के दिन का दीपक जलाते चलिए।

चाँद मिले न जो कभी जीवन में तो,
तारों के साथ ही कदम मिलाते चलिये।

फूलों से सुगन्ध जो आ न सके तो,
कांटों से भी प्यार बढ़ाकर रहिए।।

सपने जीवन में अगर टूट जायें तो,
फिर भी उम्मीदों की किरन सजाते चलिए।

रात भर यादों का हँसी मंजर देखा,
हुई सुबह तो वही टूटा हुआ घर देखा।

वही खामोशी थी फैली चारों तरफ,
वही सूना आंगन गिरता छप्पर देखा।

वीरानियाँ ही नज़र आयीं उस तरफ,
हमने पलटकर जिधर देखा।

बहाने के इन्तजार में सो गये थे हम,
आँखें खुली तो फिर वही पतझड़ देखा।

❑

पद्य

हार कर मत बैठो

✍.........
संगीता कुमारी
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो।।

चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है।।

पाँव मिले चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पग चलकर हार गया।
धीरे-धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया।।

चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।

धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है।
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज सवेरे आता है।

हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।

❑

ज्ञान की बातें

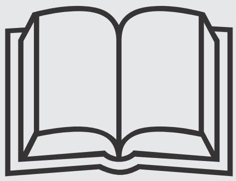

1. जो काम अपने लिए खराब है, उन्हें दूसरों के लिए न करो।
2. अच्छे लोगों की संगति, हमारा उपकार कर देती है।
3. दूसरों की बुराइयाँ मत ढूढ़ते फिरो, न किसी के पीठ पीछे बुराई करो।
4. अपने शत्रु से प्रेम करो।
5. बुरे वचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हैं।
6. माता-पिता अपनी सन्तानों के लिए जितने कष्ट सहते हैं, उनका बदला सौ वर्ष में भी नहीं चुकाया जा सकता है।
7. सत्सम्पर्क से लोहा भी सोना बन जाता है।
8. सबसे बड़ा तीर्थ अपना मन होता है।
9. अपने स्वार्थ के लिए कभी किसी का बुरा मत सोचो।
10. अपने अन्दर जो बुराइयाँ हैं उन्हें सुधारो और अपनी जिन्दगी से प्यार करो''

पद्य

सोच को बदलो, सितारे बदल जायेंगे

✍.........
आशू शर्मा
बी. एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

सोच को बदलो, सितारे बदल जायेंगे,
नज़र को बदलो, नजारे बदल जायेंगे।
किश्तियाँ बदलने की जरूरत नहीं,
दिशा को बदलो, किनारे अपने आप बदल जायेंगे।
वक्त के साँचे में ढलना तो सभी को आता है,
वक्त को साँचे में ढालो, तो फिर कोई बात बने।
आसमान से बूंद गिरी, पानी बनकर फूट गई,
यह जिन्दगी क्या काम की, जो माता-पिता को भूल गई।
किश्ती हर तूफां को पार कर सकती है,
बात बिगड़ी हुई फिर बन सकती है।
हौसले रख बुलन्द अपने इरादे न बदल,
तकदीर किसी भी रोज़ बदल सकती है।
रखता है अगर हौसला, रास्ते खुद बन जायेंगे,
अगर उतरेगा सागर में, गहराए मोती तुझे मिल जायेंगे।
❑

पद्य

हिन्दी-दिवस विशेष

✍.........
कविता राजपूत
बी.एड.

हिन्दी मेरी मातृभाषा,
क, ख, ग सबको नहीं आता।
देश के देशवासियों को,
हिन्दी का रुझान नहीं भाता।
गाँधी जी ने दिया उपदेश,
हिन्दी का करो निवेश।
भारत में नहीं है हिन्दी के बिना गुजारा,
कई विदेशियों ने इसको अपने जीवन में उतारा।
आओ सब भारतवासी बनें इसके सलाहकार,
मनायें हिन्दी-दिवस बारम्बार।
❑

पद्य

किसान की दुर्दशा

✍.........
आशा कुमारी
बी. ए. (तृतीय वर्ष)

ऐसी आँधी चली कि घर का तिनका-तिनका बिखर गया।
आखिर धरती माँ से उसका, प्यार बेटा बिछुड़ गया॥

मैं किसान के बलिदानों के, गीत सुनाया करती हूँ।
बहरों की बस्ती से मैं, फरियाद लगाया करती हूँ॥

हम सबको मिलकर अथक प्रयास करना होगा।
गंगा को निर्मल कर, उसकी आत्मा को जिंदा करना होगा॥

जो अपने कंधों पर देखो, खुद हल लेकर चलता है।
आज उसी की कठिनाइयों का, हल क्यों नहीं निकलता है॥

देख कलेजा फट जाता है, आँखों से आँसू बहते।
ऐसा न हो मेरी कलम रो पड़े, सच्चाई कहते-कहते॥

चीख पड़ी खेतों की माटी, तड़फ उठी ग़म से धरती।
बिना कफन पगडण्डी से, गुजरी थी जब उसकी अर्थी॥

इतना सूद चुकाया उसने, कि अपनी सुध भूल गया।
सावन के मौसम में झूला लगा के फाँसी पर झूल गया।

किसी को काले धन की चिन्ता, किसी को भ्रष्टाचार की,
मगर लड़ाई कौन लड़ेगा, फसलों के हकदार की।
❑

चुटकुला

शिक्षक - छात्र से, बताओ कुतुबमीनार कहाँ है ?
छात्र - पता नहीं, सर
शिक्षक - बैंच पर खड़े हो जाओ।
छात्र - बैंच पर खड़ा होकर बोला, सर कुतुब मीनार तो अब भी नहीं दिख रही।

पद्य

शिक्षक दिवस 'खास'

✍.........
कविता राजपूत
बी. एड.

1. आभा कृष्ण जौहरी मैम हैं, वोकैब (Vocab) की रानी।
मैम प्लीज हमें भी बना दीजियेगा ज्ञानी॥

2. शिवानी सारस्वत मैम ने विद्यार्थियों की मानसिकता जानी।
मैम प्लीज बना दीजियेगा, खुशनुमा हमारी जिन्दगानी॥

3. भावना सारस्वत मैंम आपके पास है भिन्न-भिन्न कॉउन्सिल कमेटियों का भण्डार।
मैम प्लीज हमें भी दीजियेगा ज्ञान अपार ॥

4. गिर्राज किशोर सर की है अलग ही जुबानी।
सर प्लीज बना दीजियेगा सफल हमारी कहानी॥

5. लखमी चन्द सर ने खेल-खेल में बच्चों को जाना।
सर प्लीज करते रहियेगा मार्गदर्शन, जिससे बन जाये हमारा अलग अफसाना।

6. अमित वार्ष्णेय सर से हमने, गणित की रुचियों को जाना।
सर प्लीज देते रहियेगा ज्ञान, जिससे हमें भी आ जाये गणित को मनोरंजनात्मक ढंग से पढ़ाना॥

7. ललित सर आये हैं हमारे अन्दर, कला की महत्ता जगाने।
सर प्लीज दीजियेगा ज्ञान, और लोग हो जायें हमारी रचना के दीवाने॥

8. पूनम माहेश्वरी मैम हमेशा रखती हैं, विषय-वार शब्दों का मान।
मैम प्लीज बताती रहियेगा हमें और भी, जिससे हमारी भी शिक्षण-प्रणाली में आ जाये जान॥

9. दुष्यन्त सर ने दिया हमारी शारीरिक शिक्षा पर ध्यान।
सर प्लीज देते रहियेगा शिक्षा, जिससे हमेशा करें अपने स्वस्थ शरीर पर अभिमान॥

10. वर्धा शर्मा मैम ने दिया हमको, विज्ञान की पाठ-योजनाओं का ज्ञान।
मैम प्लीज रहियेगा साथ क्योंकि सीखेंगे और भी जिनसे थे हम अब तक अनजान॥

11. कृष्णदेव सिंह सर आये हैं, विज्ञान की गुणवत्ता बताने।
सर प्लीज बताइयेगा अपार, जिससे हमारे पास भी हो तार्किकता के खजाने॥

12. कविता चौधरी मैम को है, कम्प्यूटर और गणित से प्यार।
मैम प्लीज हमें भी सिखाइयेगा, जिससे हो जाये हमारा बेड़ा पार।

13. मुक्ता वार्ष्णेय मैम आयीं हैं, हमें सिखाने ढोल और गाने।
मैम प्लीज कराइयेगा अभ्यास, जिससे लगने लगे हमें संगीतकला लुभाने॥

14. रत्न प्रकाश सर ने दिया, हमको प्रकाशन और जीवन का सार।
सर प्लीज बतलाइये और भी जिससे हमारे पास भी हो कई गुणों का हार॥

15. प्राचार्य महोदय मि. वाई. के. गुप्ता सर ने दिया, हमेशा आत्मानुशासन का ज्ञान।
सर दीजियेगा आशीर्वाद सभी को, जिससे सफल होकर सभी को हो ज्ञान महाविद्यालय पर अभिमान॥

❑

पद्य

"बेटियों का घर"

✍.........
योगेश कुमार
बी. एस-सी. (प्रथम वर्ष)

करते रहे गुनाह हम,
केवल बेटे के शौक में,
न जाने कितनी बेटियाँ मार दी,
जीते-जी कोख में

★★★

चिड़ियाँ होती हैं, लड़कियाँ मगर ...
पंख नहीं होते लड़कियों के ...
मायके भी होते हैं,
ससुराल भी होती हैं, मगर ...
घर नहीं होते लड़कियों के ...
मायका कहती है, ये बेटियाँ तो पराई हैं,
ससुराल कहती है, ये पराये घर से आई हैं।
ऐ-खुदा तू ही बता ... आखिर!
ये बेटियाँ किस ?? घर के लिए बनाई हैं।

❑

पद्य

बेटियाँ बचाओ

✍.........
राधा
बी. एस-सी. (Z.B.C.)

क्यों खुदा की खुदाई, हर रिश्ते में अजीब होती है।
दूर रहकर भी बेटी, माँ के सबसे करीब होती है।।

देता है दामन में खुदा, जिसके बेटी का तोहफा।
वो आँगन पावन, वो माँ खुशनसीब होती है।

मिलता है किसी को घर सोने का, तो कोई तरसे ममता को,
दूर रहकर सहना और टूटकर सबको चाहना,
यही उसकी तहजीब होती है।

चाहता है कोई बेटी का प्यार, तो कोई
पैदा होने से पहले ही देता है मार,

बेटे के लालच में बेटी का कत्ल,
उन लोगों की सोच कितनी गरीब होती है।
क्यों खुदा की खुदाई, हर रिश्ते में अजीब होती है।।

कहते हैं हर इन्सान के सौ भाग्य होते हैं।
जब एक भाग्य अच्छा होता है तो
घर में बेटे का जन्म होता है,

और जब सौ के सौ भाग्य अच्छे होते हैं
तो घर में बेटी का जन्म होता है।

इसलिए कहते हैं,
बेटा होना भाग्य की बात है तो
बेटी होना सौभाग्य की बात है।

बेटियाँ पराई होके भी पराई नहीं होती हैं शायद,
इसीलिए किसी बाप से हँसके बेटी की विदाई नहीं होती है।

❑

पद्य

वक्त नहीं

✍.........
अंजली तौमर
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)
(Z.B.C.)

हर खुशी है लोगों के दामन पर, हर हँसी के लिए वक्त नहीं...

दिन रात दौड़ती दुनिया में, जिन्दगी के लिए वक्त नहीं.....

माँ की लोरी का अहसास तो है, पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं............

सारे रिश्तों को हम मार चुके हैं, पर उन्हें दफनाने का वक्त नहीं.............

सारे नाम मोबाइल पर हैं, पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं.............

गैरों की क्या बात करें, जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं.......

आँखों में है नींद बड़ी, पर सोने के लिए वक्त नहीं........

दिल है गमों से भरा हुआ, पर रोने के लिए भी वक्त नहीं......

पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े कि, थकने का भी वक्त नहीं..........

पराए एहसास की क्या फिक्र करें, जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं ......

तू ही बता–ए–जिन्दगी इस जिन्दगी का क्या होगा, कि हर पल मरने वालों को, जीने के लिए भी वक्त नहीं..... ❑

प्रिय वचन

सफल व्यक्ति कोई अलग प्रकार का कार्य नहीं करते, वरन् वे हर कार्य अलग ढंग से करते हैं।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, केवल 'स्वयं अच्छे बन जाओ' आपसे अच्छे लोग स्वयं जुड़ते चले जाएंगे।

पद्य

मिटने का अधिकार

✍.........
चिंकू तौमर
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

वे मुस्काते फूल नहीं,
जिनको आता है मुर्झाना,
वे तारों के दीप नहीं,
जिनको भाता है बुझ जाना।

वे नीलम के मेघ नहीं,
जिनको है धुल जाने की चाह
वह अनन्त ॠतुराज नहीं,
जिसने देखी जाने की राह।

वे सूने से नयन नहीं,
जिनमें बनते आँसू मोती,
वह प्राणों की सेज नहीं,
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती।

ऐसा तेरा लोक वेदन नहीं,
नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं,
नहीं जिसने जाना मिटने का स्वाद।

क्या अमरों का लोक मिलेगा,
तेरी करुणा का उपहार,
रहने दो यह देवा ! अरे,
यहाँ मेरा मिटने का अधिकार।

❑

पद्य

एक नन्हा प्राणी चींटी

✍.........
मोनिका सिंह
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

चींटी को देखा ?
वह सरल, विरल, काली रेखा।
तम के धागे सी,
जो हिल डुल,
चलती लघुपद।।
पल-पल मिल जुल।।

लड़ती, तूफान से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती,
चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी वह सुनागरिक।।

अदभुत उसकी निर्माण कला,
कोई शिल्पी क्या कहे भला।।

❑

शिक्षा : इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हमें उस छोटे-से प्राणी (चींटी) की तरह निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिये।

अनमोल वचन

भगवान की भक्ति करने से शायद हमें माँ न मिले, लेकिन माँ की भक्ति करने से भगवान अवश्य मिलेंगे।।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, केवल 'स्वयं अच्छे बन जाओ' आपसे मिलकर किसी अन्य की तलाश पूरी हो जावेगी ।

पद्य

मैं भारत में जन्मा हूँ।

✍.........
गौरव कुमार पाठक
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

भारत मेरी पहिचान है, भारत मेरा सम्मान है,
भारत मेरा अभिमान है।
आप मुझसे सब कुछ छीन सकते हैं,
मेरा तन, मेरा लहू, हर कुछ मुझसे छीन सकते हैं,
पर मेरे भारतीय होने की पहचान मुझसे नहीं छीन सकते
और यही मेरी पहचान (Identity) है।

जिन्दगी से हार गया हूँ, आज नहीं कुछ करने को।
ये दुनिया रूठी, दोस्त भी रूठे,
साथ नहीं आज कोई चलने को।

काश मेरी जिन्दगी में, सरहद की कोई शाम आये,
काश मेरी जिन्दगी, मेरे वतन के काम आये।
ना खौफ है मौत का, ना आरजू है जन्नत की,
मगर जब कभी जिक्र हो शहीदों का,
काश मेरा भी नाम आये।

जब कोई पूछे मेरे बारे में,
तो मेरी यह पहचान लिख देना,
हटाना मेरे कपड़े और छाती पर
हिन्दुस्तान लिख देना।

कोई पूछे लगता था वो कौन ?
तो भगतसिंह व क्रान्तिकारियों का चेला लिख देना।
गर बचा हो जिस्म में लहू मेरे,
निकालना उसे और जमीन पर उससे
''माँ तुझे सलाम लिख देना''।

मैं भारतीय हूँ इस पर मुझे बहुत गर्व है,
मैंने जन्म लिया है इस भारत भूमि पर
यही परिचय है और रहेगा।

न हिन्दुओं से, न मुसलमानों से
इस मुल्क को तकलीफ है गद्दार और बेईमानों से।
जिन्हें हम हार समझ बैठे थे, गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे, हमी को काट खाने को॥

❑

जय हिन्द, जय भारत

पद्य

नफरत की लाठी

✍.........
कुमारी किरन घनगर
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

नफरत को छोड़कर, अपना लो प्यार को।
जिद को छोड़कर, अपना लो देश को।।
तुम इस देश के पक्षी हो, प्यार कर लो देश को।

देखो ये धरती, हम सबकी माता है।
इस धरती से हमारा, जन्मों का नाता है।।
हम आपस में लड़ बैठे, कौन सँभालेगा देश को।
अहिंसा को छोड़कर, अपना लो देश को।।
नफरत को छोड़कर ....
.........................प्यार कर लो देश को।

कोई निकाले हमें घर से, कौन बचायेगा हमको।
दीवानो होश सँभालो, बचा लो देश को।।
इस प्यार में दीवानो, ज़हर मत घोलो।
जब भी बोलो, प्यार से बोलो।।
भर जाता है घाव, जो लगता है चोट से।
कैसे भरोगे यारो, नफरत के घाव को।।
नफरत को छोड़कर ....
.................प्यार कर लो देश को।

तोड़ो ये दीवारें, चार धर्मों की।
आपस में बैर कर, मत बाँटो देश को।।
पूछो इस धरती से, कौन दोस्त कौन दुश्मन है।
नफरत की लाठी तोड़कर, अपना लो प्यार को।।
नफरत को छोड़कर ....
............................प्यार कर लो देश को।

❑

पद्य

आओ नया समाज बनाएँ

✍.........
सिमरन आलम
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

आओ नया समाज बनाएँ,
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ,
आओ, नया समाज बनाएँ।

जाति-पाँति के बन्धन तोड़ें,
अपनेपन की कड़ियाँ जोड़ें,
इस धरती के हर मानव का,
मानवता से नाता जोड़ें।

एक-दूसरे के सुख-दुःख में,
मिलकर बैठें हाथ बटाएँ,
आओ, नया समाज बनाएँ।

इस माटी का कण-कण चन्दन,
इसे करें हम शत-शत वंदन,
नई रोशनी की किरणें बन,
आज सजा दें हम घर आँगन।

मिल-जुल के आगे बढ़ने का,
सबके मन में भाव जगाएँ,
आओ नया समाज बनाएँ।

श्रम को जीवन मन्त्र बनाएँ,
ऊँच-नीच का भेद मिटाएँ,
भारत माता के सपूत बन,
नव जीवन की अलख जगाएँ।

धरा सभी की, गगन सभी का,
यही प्रेम-संदेश सुनाएँ,
आओ नया समाज बनाएँ।

❑

कटु सत्य

सत्य में कोई विश्वास नहीं करता है, झूठ में सब विश्वास करते हैं। शराब बेचने वाले को कहीं नहीं जाना पड़ता, लोग खुद उसके पास चले आते हैं। परन्तु दूध बेचने वाले को घर-घर जाकर दूध बेचना पड़ता है। इसी प्रकार सत्य को बार-बार परीक्षा देनी पड़ती है।

पद्य

बेटी का दुःख

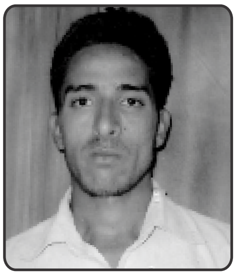

....
आकाश राघव
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)
(Z.B.C.)

जो माँ है, वो भी तो सास है,
फिर माँ क्यों अच्छी, सास क्यों बुरी है,
जो बहू है, वो भी तो बेटी है,
फिर बेटी क्यों लाड़ली, बहू क्यों छुरी है।
बेटी का दुःख क्यों, सीने को चीरता है,
बहू से नज़रें क्यों, नफरतों से भरी है,
लोभियों ने बेशक बहू पर तेल डाला है,
पर जब भी जली हैं, बेटियाँ ही जली है।

सृष्टि कितनी भी बदल जाए,
फिर भी हम पूर्ण सुखी नहीं हो सकते हैं,
जरा दृष्टि बदल कर देखिए साहेब,
कितना सुख मिलता है।

वंश-वंश करते-करते,
वंश की बेल को काट रहे,
एक फल की चाहत में तुम,
नन्हीं कलियाँ उजाड़ रहे।
कौंपले रही न धरती पर,
फूल तुम कैसे पाओगे,
अंश काटकर अपना तुम,
वंश कैसे बढ़ाओगे।
ना कुचलो नन्हीं कलियों को,
उनको भी जग में आने दो,
फूल बनकर महकेंगी बगिया में,
जीवन उनको पाने दो।

❑

पद्य

मेरी अभिलाषा

....
गोलू कुमार
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

मुझे न चाहिए खेल-खिलौने,
और न खेल का कोई सामान।
बस मेरी प्रबल अभिलाषा,
करूँ देश की ऊँची शान।

देश भक्त बनू मैं बोस सा,
काँपे जो शत्रु के प्राण।
एकलव्य जैसा गुरु भक्त बन,
रखूँ गुरु गरिमा का मान।

पितृ भक्त बनूँ श्रवण जैसा,
माता-पिता का रखूँ ध्यान।
भगवान की गोदी में बैठूँ,
और बनूँ ध्रुव समान।

कर्ण, बालि शिव सा दानी बन,
कर दूँ मैं जीवन भी दान।
सुकरात बनूँ मैं ये मेरी कामना,
चाहे करना पड़े विष पान।

अपने प्यारे भारत देश का,
करता रहूँ सदा गुण गान।
इच्छा है इस मातृ-भूमि पर,
अपने प्राण करूँ बलिदान।

❑

जीवन सूत्र

- जिस व्यक्ति का जीवन संतुलित है, चित्त निर्मल है तथा मन एकाग्रता लिए है, वही सकारात्मक दृष्टि से सोच सकता है।
- जिस व्यक्ति के विचारों में दिशा, दशा, आशा, उत्साह एवं विश्वास नहीं है, वह नकारात्मक दृष्टि से सोचता है।
- सही तरीके की सोच से आपका लक्ष्य नजदीक दिखाई देगा।
- अनावश्यक चिन्ता से डिप्रेशन उत्पन्न होता है, अतः अनावश्यक बातें न सोचें।

पद्य

उत्पीड़न या अत्याचार

✍.........
आलोक नाथ राहुल
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)
(Z.B.C.)

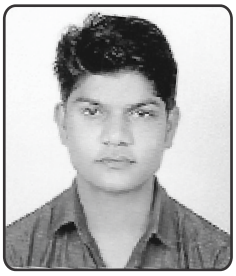

अपनों के बीच भी, कहाँ सुरक्षित नारी है,
हर तरफ बस नारी का शोषण जारी है,
अगर बेटा हुआ तो पुरुष का कमाल,
हो गई बेटी तो ये बस माँ की जिम्मेदारी है।

बेटी हो तो सिर बाप का झुक जाता,
दहेज की फैली महामारी है,
आज़ादी तो सिर्फ मर्दों के लिए,
औरत की दुनियाँ तो बस ये चहार दीवारी है।

पाप किसी का, दोष इसके सर मढ़ जाता है,
जुल्म देख कर चुप रहती, कैसी ये दुनिया सारी है,
चैन से जीने नहीं देगा ये समाज तुझे,
यदि घर में बैठी तू कुँवारी है।

एक साथ जो खत्म हो जाएँ औरतें,
तो मिट जाएगी ये जो सृष्टि तुम्हारी है,
गर्भ से लेकर यौवन तक,
लटक रही इस पर तलवारी है,
हर तरफ बस नारी का शोषण जारी है। ❑

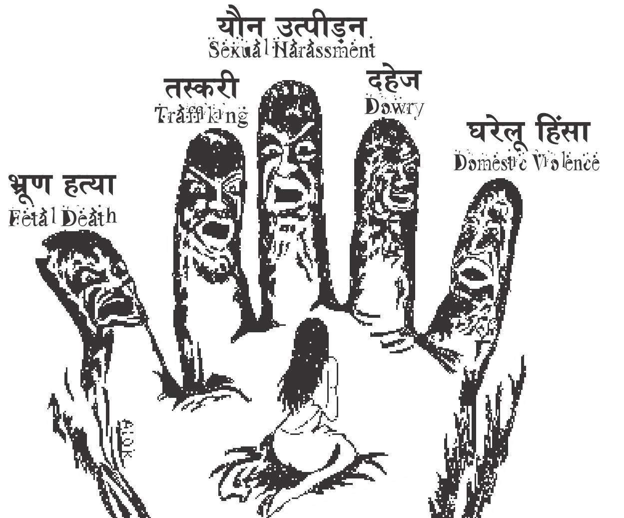

अगर ये पाँच शोषण दुनिया से मिट जाये तो दुनिया की हर नारी को निडर होकर जीने से कोई नहीं रोक सकता।

पद्य

देखा है एक ख्वाब!

✍.........
शिवानी गुप्ता
बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)

मैं कुछ करना चाहती हूँ,
मैं कुछ बनना चाहती हूँ,
चाँद सितारों की तमन्ना नहीं मुझे,
पर सारे जहान को रोशन करना चाहती हूँ।

न पक्षी की तरह आकाश में उड़ना चाहती हूँ,
न मछली की तरह पानी में तैरना चाहती हूँ,
देखा है एक ख्वाब छोटा-सा,
उसे हकीकत में बदलना चाहती हूँ।

किसी का सहारा लेकर नहीं,
आत्म-निर्भर बनना चाहती हूँ,
सारे जहाँ में नहीं,
सिर्फ अपने देश में नाम कमाना चाहती हूँ,
देखा है एक ख्वाब छोटा-सा,
उसे हकीकत में बदलना चाहती हूँ।

❑

क्या है आँखों में ?

पिता की आँखों में	➢	फर्ज
माता की आँखों में	➢	ममता
भाई की आँखों में	➢	प्यार
बहन की आँखों में	➢	स्नेह
अमीर की आँखों में	➢	घमण्ड
मित्र की आँखों में	➢	सहयोग
दुश्मन की आँखों में	➢	बदला
सज्जन की आँखों में	➢	दया
शिष्य की आँखों में	➢	आदर

❑

बेटियाँ

✍........
याशिका गुप्ता
बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)
(Z.B.C.)

बेटी बनकर आयी हूँ,
माँ-बाप के जीवन में।

होगा कल बसेरा मेरा,
किसी और के आँगन में।

यह रीत भगवान ने बनाई होगी,
कहते हैं, आज नहीं तो कल तू पराई होगी।

देकर जन्म पाल-पोस कर,
जिसने हमको बड़ा किया।

और वक्त आया तो उन्हीं हाथों ने,
हमें खुशी से रो-रो कर विदा किया।

टूट कर बिखर जाती है,
हमारी जिन्दगी वहीं पर,

फिर भी बन्धन में हमें,
प्यार मिले यह जरूरी नहीं।

क्यों रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है।
क्यों बस यही हम बेटियों का नसीब होता है।
पापा की वो लाड़ली,
माँ की वो जान,
दिल की नादान पर सबके लिए,
करती है अपनी ही जान को कुर्बान।

भाईयों की मुस्कान,
परिवार की यह है शान,
यह है एक बेटी की पहचान।

बेटी बोझ नहीं है।
बेटी बोझ नहीं है।

शाम हो गई,
अभी तो घूमने चलो न पापा,
चलते-चलते, थक गई,
कंधे पर बिठा लो न पापा।
अँधेरे से डर लगता,
सीने से लगा लो न पापा,
मम्मी तो सो गईं,
आप ही थपकी देकर सुला दो न पापा।

स्कूल तो पूरा हो गया,
अब कॉलेज जाने दो न पापा।

पाल-पोस कर बड़ा किया,
अब जुदा तो मत करो पापा।

डोली में बिठा ही दिया तो.....2
आँसू तो मत बहाओ पापा।

आपकी मुस्कान अच्छी है....2
एक बार और मुस्कराओ न पापा।

आपने मेरी हर बात मानी......2

एक बात और मान जाओ न पापा।

इस धरती पे बोझ नहीं है बेटियाँ....2
दुनियाँ को समझाओ न पापा।

❑

पद्य

अहंकार

✍.........
गौरव कुमार
बी. कॉम. (द्वितीय वर्ष)

हममें अहंकार इतना बड़ा,
हर व्यक्ति के आगे बस अहंकार खड़ा है,
व्यक्ति में दया नहीं मैं भरा है,
जो हर किसी को भ्रष्ट कररहा है।

हममें अहंकार इतना बड़ा है,
माँ के आगे झुकने ना दे रहा है,
अपने देश की इज्जत के आगे अहंकार खड़ा है,
आम जनता को भ्रष्टता के रास्ते पर ला रहा है।

किसी को गलत करने से रोकने से डर रहा है,
हर किसी को पल-पल तड़फा रहा है,
मौत के दरवाजे पर अहंकार पड़ा है,
हममें अहंकार इतना बड़ा है।

गलत बात को गलत न मानने पर मजबूर कर रहा है,
व्यक्ति अपने अहंकार में सही गलत सब भूल रहा है,
अपनी गलतियों की क्षमा माँगने के बजाय,
अपना अहंकार दिखा रहा है।

देश को चलाने में भी इसका साथ बढ़ता जा रहा है,
दूसरों को गलत कार्य करने को उकसा रहा है,
अहंकार सबको ऊँचा बना रहा है,
लाचारों पर हँस रहा है।

हममें अहंकार इतना बड़ा है,
पिता के अपमान का बदला न ले रहा है,
उसे वक्त के हाथ छोड़ चुपचाप खड़ा है,
एक बेटा नहीं बल्कि उसका अहंकार खड़ा है।

खुद पल-पल टूट रहा है,
लेकिन अपने दिखावे में अपनों को तबाह कर रहा है
हममें अहंकार इतना बड़ा है। ❑

पद्य

यादों के सहारे

✍.........
लता कुमारी
बी. कॉम. (तृतीय वर्ष)

अब वो नहीं उनकी यादें हैं,
आधे-अधूरे वादे हैं।
प्यार में हद से गुजरना है,
दिल में उनके उतरना है॥
समझते थे वफा को वो बेवफाई,
धड़कन भी उन्हीं ने ही दिल में जगाई।
न जाने किसने उनके झूठे कान भरे,
फिर रूठे उनके लव, जो थे मुस्कान भरे॥
फिर वो हमसे खफा हो गये,
बेवफा नहीं पर जुदा हो गये।
लाख मनाया उनको पर,
चले गये अलविदा कह गये॥
ढूँढ़ा उनको हर जगह,
जब मिले तो वो अनजान हो गये।
अन्जानी-सी उनकी बातें,
अब तक हमको दुखती हैं॥
हमारे दिल की पीड़ा भी,
अब कहाँ उनको दिखती है ?
थी आरजू ये हमारी, कि हम उनको अपना बनाएँगे,
पर पता न था,कि इस कदर, वो हमको भूल जायेंगे।
चले गये अब वो छोड़कर,
सब वादे कसमें तोड़ कर,
अब तो बस हम आधे हैं,
आधे अधूरे वादे हैं,
और साथ में उनकी यादें हैं। ❑

प्यारी माँ

✍.........
अंजली गौतम
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

तिनका-तिनका जोड़ा तुमने
अपना घर बनाया तुमने,
अपने तन के सुन्दर पौधे पर
हम बच्चों को फूल सा सजाया तुमने,
हमारे सब दु:ख उठाये और
हमारी खुशियों में सुख ढूँढा तुमने
हमारे लिए लोरियाँ गाईं और
हमारे सपनों में खुद के सपने सजाये तुमने।

हम बच्चे अपनी राह चले गये,
और तुम....
दूर खड़ी अपना मीठा आशीर्वाद देती रहीं।
पल बीते-क्षण बीते...
समय पग-पग चलता रहता,
अपना हिसाब लिखता रहता,
और आज ?....

आज धीरे-धीरे तुम जिन्दगी के,
उस मुकाम पर आ पहुँची,
जहाँ तुम थकी खड़ी हो,
शरीर से और मन से भी।

मेरा मन मानने को तैयार नहीं,
मेरा अंतरमन सुनने को तैयार नहीं।
क्या तुम्हारे जिस्म के मिटने से,
सब-कुछ खत्म हो जाएगा ?
क्या चली जाओगी तुम,
अपने प्यार की झोली समेट कर।

क्या रह जाएँगे हम,
तुम्हारी भोली सूरत देखने को तरसते हुए ?
क्या रह जायेंगे हम ?
तुम्हारी गोदी में अपना बचपन ढूँढ़ते हुए ?

बोलो माँ ?....
क्या कह जाओगी
इन चाँद, सूरज, धरती और तारों से ?
इन राह गुजारों से ....
नदियों की बहती धारों से ?
क्या कह जाओगी माँ ?
किसे सौंप जाओगी हमें माँ ?

❑

भ्रष्टाचार

एक-दो, एक दो,
भ्रष्टाचार को फेंक दो।

जब से आया दुनिया में भ्रष्टाचार,
तब से लोग कर रहे खूब दुराचार।

इसकी छाया बन रही है सर्वव्यापी,
पर परमात्मा के प्रति यह हैं पापी।

है नेता भ्रष्टाचारी, तो है दुनिया दुराचारी,
हे भगवान पकड़ो बैंया और पार करो नैया।

लोगो भ्रष्टाचार को मारो ऐसे गोले,
ताकि हर बच्चा सिर्फ यही बोले कि

एक दो – एक दो
भ्रष्टाचार को फेंक दो।

❑

माँ

✍.........
पूजा यादव
बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)

भीड़ में हूँ फिर भी हूँ अकेली,
हँस रही हूँ फिर भी पलकें है गीली,
हर सूरत में तू ही तू टटोली,
पर तू तो है जैसे कोई पहेली।

जब आँखें बन्द होती हैं, तेरी सूरत दिखाई देती है,
मेरे कानों में जब तेरी आवाज़ सुनाई देती है,
हमेशा पूँछती हूँ ख्वाबों में अपने भगवान से,
कि क्यों याद नहीं रहते, वो दिन बचपन के।

जब माँ सबसे ज्यादा हमारे करीब होती है,
तेरी याद ही ऐसी है जिसके आते ही मैं खुद से दूर हो जाती हूँ,
आँखें बन्द करके तुझे सपनों में बुलाती हूँ,
अपने सपनों में एक छोटी-सी दुनिया सजाती हूँ,
उसमें हर कोई अपना होता है, बस प्यार ही प्यर बसाती हूँ।

मेरे सपनों में होता है, छोटा-सा एक आशियाना,
और साथ होता है माँ की लोरियों का तराना,
उसमें होती है सिर्फ खुशियाँ ही खुशियाँ,
क्योंकि सपनों की दुनियाँ में कभी किसी से जुदाई नहीं होती।

लेकिन ये तो सपना ही है, काश ऊपर वाले के
नियमों में भी होता यह "शामिल"
क्योंकि तुझसे बिछुड़ना होता है, बहुत 'मुश्किल" ❑

मेरी माँ

मेरी पूजा मेरा खुदा,
मेरी मंजिल मेरा रास्ता।
मेरी खुशी मेरी रजा,
मेरा गीत मेरी दास्तां।
तू ही है – ❑

पद्य

नारी

✍.........
प्रियंका रानी
बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)

जिन्दगी हमें यूँ उलझाती चली गई,
बेगानों के हाथों हमें लुटवाती चली गई,
किसने चाहा यूँ मायूस होना जिन्दगी से,
हर वक्त ठोकर दिलाती चली गई,
नारी का अस्तित्व आँसू है शायद,
जाने क्यूँ हमें एहसास दिलाती चली गई,
ढूँढ़ा अस्तित्व नारी ने जहाँ अपना,
अपने को बेगानों से बचाती चली गई,
उलझती जिन्दगी को जब चाहा उसने सुलझाना,
दरिन्दों के दलदल में यूँ फँसती चली गई,
नारी है जन्मदात्री सबकी यहाँ,
जाने क्यूँ उसे ही ठोकरें मिलती चली गई,
बहुत सहा नारी ने अपना अपमान,
अब अधिकार के लिए अपने,
दुनिया से लड़ती चली गई।

❑

पद्य

हिन्दी का मान

✍.........
श्रद्धा माथुर
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

हिन्दुस्तान है देश हमारा, हम हिन्दुस्तानी कहलाते हैं,
फिर क्यों हिन्दी से हम कतराते हैं?
माना है अंग्रेजी महत्वपूर्ण, पर क्यों बचपन से ही रटाते हैं,
... 'डॉग' तो रटा दिया, ... 'गॉड' क्यों नहीं सिखाते हैं ?
हिन्दी सब भाषाओं की जननी, इतिहास में यही हम पाते हैं,
फिर क्यों हिन्दी से हम कतराते हैं ?
भूगोल, गणित, इतिहास भी अंग्रेजी में पढ़ाये जाते हैं,
अर्थ समझ में आता नहीं, प्रश्नोत्तर रटाये जाते हैं,
बड़े शौक से हिन्दी फिल्मों के गीतों को हम गाते हैं,
फिर क्यों हिन्दी से हम कतराते हैं?
अंग्रेजों की धरती पर, मोदी जी हिन्दी में भाषण देते हैं,
ओजस्वी भाषण में भारत को, विश्वगुरु वो कहते हैं।
सब कुछ जुड़ा है इस हिन्दी से, सपने भी हिन्दी में आते हैं,
फिर क्यों हिन्दी से हम कतराते हैं?
आओ आज प्रतिज्ञा लें, हिन्दी का मान बढ़ाने की,
एक दिन नहीं, प्रतिदिन हिन्दी दिवस मनाने की।

❑

हँसों हँसाओ

1. टॉम – किसकी आँख ज्यादा अच्छी है, आदमी की या चिड़िया की।
   जेरी – चिड़िया
   टॉम – कैसे ?
   जैरी – कभी चिड़िया को चश्मा लगाते हुए देखा है।
2. व्यापारी के घर में एक चोर घुस आया, रात का समय था, व्यापारी सो रहा था। चोर की आहट सुनकर उठ गया।
   चोर – सोना कहाँ है ?
   व्यापारी – पूरा घर खाली है, कहीं सो जाओ।
3. अध्यापिका – बताओ, पृथ्वी पर ओस क्यों पड़ती है ?
   छात्रा – पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाकर थक जाती है और उसे थकान से पसीना आ जाता है।

पद्य

गुरु की महिमा

✍.........
दीपेश कुमार
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

गुरू हमारे राम हैं,
गुरू होत भगवान,
जो ज्ञान हमें देते हैं
जो जग में गुरू महान।

गुरू ज्ञान का है भण्डार,
गुरू बिना जीवन बेकार,
गुरू में हैं वह शक्ति अपार,
शिक्षा जीवन का अवतार।

माँ–बाप गुरू से बढ़कर
इस जग में नहीं खजाना,
जिस गुरू ने ज्ञान दिया है,
जिस माँ ने जन्म दिया है,
जिस बाप ने नाम दिया है,
हमें उसका फर्ज निभाना ।

ना एक लाया है ना एक ले जाएगा,
खुशी के चार पल जी जाएगा,
यादों का साथ रह जाएगा,
कितना भी कमा लें यह धन,
एक दिन खुद का बेटा,
तुझमें आग लगाएगा.......।

❑

पद्य

भाई का इन्तजार

✍.........
संध्या सिंह
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

भाई के बिना एक बहन, इस जिन्दगी में अकेली होती है
क्योंकि वो हर काम जो भाई का होता है,
उसे तो भाई ही करता है? ना....

मैंने किया उसका राखी के लिए इन्तजार,
मैंने किया खुद से ज्यादा अपने भाई पर ऐतवार,
एक सुबह मिली खबर, भाई को ले गया वो परवर दिगार,

मैंने किया उसका भाई–दौज पर इन्तजार,
मैंने किया खुद से ज्यादा अपने भाई पर ऐतवार,
एक दिन पता चला कुछ खिलाकर किया था उसे लाचार,

मैंने किया उसका इन्तजार, कि मुझे डोली में करायेगा सवार,
मैंने किया खुद से ज्यादा अपने भाई पर ऐतवार,
फिर एक रात सपने में कहा बहन निकि, दीपक है,
तेरे लिए मेरा प्यार।

मैंने किया उसका इन्तजार, कि मुझे देगा आशीर्वाद,
मैंने किया खुद से ज्यादा अपने भाई पर ऐतवार,
पर शायद मुझे भी नहीं पता था कि ऊपर वाले से लड़कर
मेरा भाई मुझे देगा आशीर्वाद।

❑

यादों का मेला

.........✍
पुष्पराज शुक्ला *बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)*

भूमिका : मेरी ये जो कविता है वो मेरे शहर इलाहाबाद में लगने वाले कुम्भ मेले की है जो 12 साल में एक बार आता है, जिसमें दूर–दूर से करोड़ों लोग संगम तट पर स्नान करने के लिए आते हैं।

मैं अपने 5 दोस्तों के साथ 2013 में लगे कुम्भ मेले में घूमने के लिए गया था। वहाँ पर बहुत लोगों की भीड़ थी। हम लोगों ने रात तक खूब मेले का आनन्द लिया, उसके बाद सब घर आ गये। वैसे तो संगम के तट पर प्रत्येक वर्ष माघ के महीने में 'माघ मेला' लगता है, पर कुम्भ मेले की तो बात ही अलग है। 'माघ मेला' जो होता है वो कुम्भ मेले के 10 वे भाग के बराबर होता है।

कुम्भ मेला खत्म हो जाने के बाद मैं 2014 में फिर से मेले में गया, पर ये मेला कुम्भ का नहीं था, ये मेला माघ का मेला था, इसमें अब कुम्भ मेले जैसी बात नहीं थी क्योंकि यह कुम्भ मेले की अपेक्षा बहुत छोटा था। इसमें लोगों की वो भीड़ नहीं थी और ना इस बार मेरे दोस्त इस मेले में आएँ क्योंकि मैं और मेरे दोस्त प्रायोगिक छात्र थे। मेरे दोस्तों में से लगभग सबका चयन हो गया, बचा मैं और एक – दो और दोस्त जो कि अब इलाहाबाद छोड़कर अपने घर चले गये।

इस माघ मेले में घूमने के बाद मैंने घर आकर इस कविता को लिखा।

आज जब मैं गुजर रहा था, मेले की पग–डण्डी से,
बड़ा ही सूना लग रहा था, मुझको ये माघ का मेला–2
बहुत ही याद आ रहा था, वो लोगों का रेला,
वो कुम्भ का मेला, वो कुम्भ......................

सोचता हूँ फिर से उन्हीं लम्हों को मैं पा जाऊँ।
अपने उन्हीं दोस्तों संग मेले में जाऊँ,
उनके साथ मिलकर चाट–पकौड़े खाऊँ।
बैठकर फिर से उसी झूले पर गीत बेसुरे गाऊँ।
किसी लड़की को पसन्द कर उसके पीछे जाऊँ ।।
घर पर आकर सारी रात, अपनी वाली की यादों में खो जाऊँ।
आज सुबह उन सब यादों ने, मुझको है झकझोरा,
बहुत ही याद आ रहा है वो लोगों का रेला,
वो कुम्भ का मेला.................... वो कुम्भ का मेला।

❑

खुशी और दर्द

एक बार खुशी ने दर्द से कहा–तू सबकी जिन्दगी में क्यों आता है ?

दर्द बोला– मैं नहीं आता तो तेरा इन्तजार कौन करता ?

तो खुशी ने कहा, मैं हमेशा उनकी जिन्दगी मैं रहता.........

दर्द ने कहा– तो तेरी कदर कौन करता ?

❑

पद्य

भ्रष्टाचार

✍.........
आकांक्षा कुमारी
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

आज हमारा देश भ्रष्टाचारियों से घिरा हुआ है,
देश का एक कोना तो छोड़ो,
पूरा का पूरा देश, भ्रष्टाचारियों से भरा पड़ा है,
घूस लेने और देने वाले व्यक्ति,
यहीं पर फलते-फूलते हैं,
जो सच्चे मन से मेहनत करते,
वो सदा बैठकर रोते हैं,
पुलिस वाले से लेकर उच्चाधिकारियों तक,
इंस्पेक्टर से लेकर व्यापारी तक सभी घूसखोर हैं,
कुछ छोटे चोर हैं, तो कुछ बड़े चोर हैं।
किस-किस को अन्दर करवाओगे,
गिनने लगे तो गिनते रह जाओगे,
कानून बनाने से क्या यह सुधर जायेंगे,
कुछ नहीं होगा,
बेवजह रिश्वत के भाव बढ़ जाएंगे।
किसी ने सही कहा है कि परचूनी की दुकान पर अनाज तौलते हैं,
ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई भूखे के सामने परोसी थाली से रोटी उठाता है,
रहम करो उन गरीबों पर जो चैन से जीना चाहते हैं,
खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा चाहते हैं।
असल में बेईमानी का पलड़ा,
गरीब की रोटी पर भारी पड़ता है,
जो लोग दूसरों को कुछ दे नहीं सकते हैं,
उन्हें लेने का भी कुछ हक नहीं है।

❑

पद्य

आतंकी को कैसे मिलता है साहस

✍.........
पुष्पेन्द्र कुमार
बी.एड.

जब कसाब पर बिरयानी की बारिश होने लगती है।
आतंकी सर पर चढ़ते हैं साजिश होने लगती है।।
जब सद्दाम की मौत पर भारत बन्द कराया जाता है।
ऐसा करके आतंकी का मान बढ़ाया जाता है।।
जब मोदी जी शरीफ जी को जन्मदिन की बधाई देते हैं।
ठीक उसी पल आतंकी एक बीज यहाँ बो देते हैं।।
बड़े-बड़े जब मेमन की फाँसी रूकवाने आते हैं।
दृश्य देख ये आतंकी के और हौसले बढ़ जाते हैं।।
जब हाफिज सईद के पीछे साहब जोड़ा जाता है।
ऐसा करके सेनाओं का साहस तोड़ा जाता है।।
डायन भारत माँ को कहकर जो मंत्री बन जाते हैं।
देख के उनको, आतंकी का फिर सीना तन जाता है।।
जब अफरीदी के छक्कों पर ताली बजने लगती है,
आतंकी मंसूबों की उम्मीदें जगने लगती है।।
कश्मीर में जब भारत का झंडा जलने लगता है।
ठीक उसी पल आतंकों का सपना जगने लगता है।।
ऐसे मुद्दों पर भी संसद राजनीति कर जाती है।
आतंकी हँसते हैं, सैनिक की चीखें मर जाती हैं।।
कठिन वक्त में प्यारे सबको, एक साथ बढ़ना होगा।
राष्ट्रवाद की खातिर सबको, एक साथ लड़ना होगा।।
निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद की बात करो।
पुष्पेन्द्र तिरंगे के चेहरे पर खुशियों की बरसात करो।।
हर भारतवासी के मन में जब भारत माँ आएगी।
कोई भी आतंकी साजिश भारत ना आ पाएगी।।

❑

बेटी की पुकार

प्रेम शंकर
फिटर (प्रथम वर्ष)

बेटी ये कोख से बोल रही,
माँ कर दे तू मुझपे उपकार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखने दे संसार।
बेटी ये कोख से बोल रही,
माँ कर दे तू मुझपे उपकार।
बिन मेरे माँ तुम भईया को,
राखी किससे बँधवाओगी।
मरती रही कोख की हर बेटी,
तो बहू कहाँ से लाओगी।
बेटी ही बहन, बेटी ही दुल्हन,
बेटी से ही होता परिवार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखने दे संसार।
मानेंगे पापा भी अब माँ,
तुम बात बता के देखो तो।
दादी नारी, तुम भी नारी,
सबको समझा के देखो तो।
बिन नारी प्रीत अधूरी है,
नारी बिन सूना है घर-बार।

मात मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखने दे संसार।
नहीं जानती मैं इस दुनिया को,
मैंने तो जाना बस तुझको।
मुझे पता तुझे है फिक्र मेरी,
तू मार नहीं सकती मुझको।
फिर क्यों इतनी मजबूर है तू,
माँ क्यों है तू इतनी लाचार।
मात मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखने दे संसार।
गर मैं न हुई तो माँ फिर तू,
किसे दिल की बात बताओगी।
मतलब की इस दुनिया में माँ,
तू घुट-घुट के रह जायेगी।
बेटी ही समझे माँ का दु:ख,
अंकुश कर लो बेटी से प्यार।
मत मार मुझे जीवन दे दे,
मुझको भी देखने दे संसार।
बेटी ये कोख से बोल रही,
माँ कर दे तू, मुझपे उपकार। ❑

हास्य

एक बादशाह अपने जन्मदिन के मौके पर कैदियों को रिहा कर रहा था। उन कैदियों में एक बूढ़ा भी शामिल था।

बादशाह ने उससे पूछा, ''आप कब से कैद में हैं।''

बूढ़े कैदी ने कहा, ''मैं तो आपके बाप दादा के वक्त से इस जेल में कैद हूँ।''

बादशाह ने कहा, ''इन्हें छोड़ना नहीं, यह तो हमारे बाप दादा की निशानी हैं।''

भूखा गरीब

✍.........
दिशू कुमार शर्मा
बी.टी.सी. (प्रथम वर्ष)

मैंने झोपड़ियों को दरबारों से लड़ते देखा है,
हम जीतेंगे निश्चित मन में आशा का एक सवेरा है।
हम भी ऊँचे प्रसाद बनें, बेघर जन का आधार बनें।।
उनके सपनों, अधिकारों का किंचित ये खेल अनोखा है।

1.

परिश्रम के वो स्वेद बिन्दु, जब चेहरे को धो देते हैं।
भूख से व्याकुल होकर बच्चे, पेट पकड़ रो देते हैं।।
वो गरीब विश्वास लिये जब, अपना फर्ज निभाता है।
अपने बच्चों की खातिर वो, दो रोटी ले आता है।।
बरसात कभी आकर अक्सर, मिट्टी का आँगन धुल जाती है।
दो साल पुरानी धोती जब, दस जगह से सिल जाती है।।
जब कर्ज बताने वाले आकर, दरवाजा खटकाते हैं।
आँखों से बहते आँसू, जब गालों से टकराते हैं।।
उसके हाथों में लगता है सिर्फ दुःखों की रेखा है....

2.

वो तिनकों का राजमहल, उसको सपनों से प्यारा है।
जो ऊँचे मंचों से कहते हैं, हिन्दुस्तान हमारा है।
तब एक धधकती ज्वाला मानो, सीने में चुभ जाती है।
लाखों का भूख से मर जाना, क्या ये सच्ची आजादी है।।
पेट की खातिर बिक जाना, बच्चों की आम कहानी है।
महलों में चीर हरण होना, ये भी उनकी नादानी है।।
शायद ये बात नवाबों के, कानों तक पहुँच गयी होती।
तो भारत की दयनीय दशा, थोड़ी-सी सँवर गयी होती।।
उड़ते तूफानों को बोलो, क्या कभी किसी ने रोका है....

3.

ये तो सच है इक गरीब की, जान बहुत ही सस्ती है।
पर तिनकों की चहार दीवारी में भी दुनिया बसती है।।
उनकी भी इच्छायें हैं, सपने हैं कुछ कर जाने के।
न कि भूखे पेट पड़े, फुटपाथों पर मर जाने के।।
उनके भी होली दिवाली का, त्योहार मनाया जाता है।
शादी की डोली की तरह, जब घर को सजाया जाता है।।
कुछ पल तो लगता है शायद, वो स्वर्ग धरा पर आया है।
भगवान ने अपनी लीला का, क्या अनुपम दृश्य दिखाया है।।
पर अटल सत्य है क्षण भर का, सुख आँखों का ही धोखा है।
मैंने झोपड़ियों को, दरबारों से लड़ते देखा है।। ❑

जीवन को स्वस्थ रखने के 10 नियम

1. शरीर एवं पर्यावरण की स्वच्छता।
2. संतुलित एवं सात्विक आहार।
3. गहरी संतुलित नींद।
4. शारीरिक व्यायाम।
5. दुर्व्यसनों से मुक्ति।
6. मन की शान्ति।
7. तनाव मुक्त जीवन।
8. सकारात्मक विचार।
9. संतुलित व्यक्तित्व।
10. ईश्वर में श्रद्धा एवं विश्वास। ❑

दिल की बात

✍ ....
फिरोज खान
आई. टी. आई (प्रथम वर्ष)

गरीब दूर तक चलता है, खाना खाने के लिए।
अमीर मीलों चलता है, खाना पचाने के लिए।।

किसी के पास खाने के लिए, एक वक्त की रोटी नहीं है।
किसी के पास खाने के लिए वक्त ही नहीं है।।

कोई लाचार है, इसलिए बीमार है।
कोई बीमार है, इसलिए लाचार है।।

कोई अपनों के लिए, रोटी छोड़ देता है।
कोई रोटी के लिए, अपनों को छोड़ देता है।।

ये दुनिया भी कितनी निराली है,
कभी वक्त मिले तो सोचना ....।
पहले हम दोस्तों के साथ रहते थे,
आज दोस्तों की यादों में रहते हैं।।

पहले लड़ना और मनाना, रोज का काम था,
आज एक बार लड़ते हैं, तो रिश्ते खो जाते हैं।

सच में दोस्तो जिन्दगी ने, बहुत कुछ सिखा दिया।
जाने कब हमको, इतना बड़ा बना दिया।।

दो अक्षर की मौत और तीन अक्षर के जीवन में।
ढाई अक्षर का ''दोस्त'' हमेशा बाजी मार जाता है। ❑

क्या खूब लिखा है किसी ने ....

बक्श देता है खुदा उनको,
जिनकी किस्मत खराब होती है।
वो हरगिज नहीं बख्शे जाते हैं,
जिनकी नीयत खराब होती है।

कोई रोकर दिल बहलाता है,
और कोई हँस कर दर्द छुपाता है।
क्या करामात है कुदरत की,
जिंदा इंसान पानी में डूब जाता है।
और मुर्दा तैर के दिखाता है।

मौत को देखा तो नहीं, पर शायद वो बहुत खूबसूरत होगी।
कम्बख्त जो भी इससे मिला है, जीना छोड़ देता है। ❑

– दोहा –

अतिथि के बिना आँगन बेकार है।
प्रेम न हो तो सगे-सम्बन्धी बेकार हैं।
पैसा ना हो तो पॉकेट बेकार है।
और जीवन में गुरू न हो,
तो जीवन बेकार है। ❑

हास्य मन्जूषा

एक अंग्रेज (एक आदमी से)- तुम अपनी इन बड़ी-बड़ी मूछों को बेचेगा हम इन मूछों के बदले एक हजार रूपये देगा।

आदमी अपने सिर के बाल पैक करके दे देता है।

अंग्रेज (गुस्से से) धोखा, हमने तुम्हारी मूछों का सौदा किया था, यह सिर के बाल का नहीं।

आदमी (मुस्कराकर)- माल हमेशा गोदाम से दिया जाता है, शोरूम से नहीं।

पद्य

बाप

✍.........
अनस मजीदी
बी.टी.सी.

*ख़ुदा की बन्दगी से दोस्तो फ़र्ज़े शरीअत है,
तो चेहरा देखना भी बाप का यारो इबादत है।*

*वही इस रंगे दुनिया से हमें वाकिफ कराता है,
वही दुश्वार राहों पर हमें चलना सिखाता है।*

*हमारी ख्वाहिशों को हर तरह से पूरा करता है,
हमारे ख्वाब में सच्चाई के वह रंग भरता है।*

*कभी रुकता नहीं है और न एक पल भी थकता है,
हमारे वास्ते दिन रात वह बस काम करता है।*

*दुआएँ हर घड़ी हर पल हमेशा करता रहता है,
हमारी झोलियाँ खुशियों से हर दम भरता रहता है।*

*न हो जिन बच्चों के पापा भला वह कैसे रहते हैं,
जमाने भर की सब दुश्वारियाँ तन्हा ही सहते हैं।*

*सभी रिश्ते दिखावे के हैं सब ही छोड़ जाते हैं,
सफ़र में जिन्दगी में वह अकेला खुद को पाते हैं।*

*हमारे वास्ते दुनिया में कोई रो नहीं सकता,
जमाने में कोई भी बाप जैसा हो नहीं सकता।*

*"अनस" दुनिया में सब से ज्यादा तू उनकी ही इज्ज़त कर,
अगर माँ-बाप जिन्दा हैं तो उनकी खूब ख़िदमत कर।*

❑

पद्य

चाहते हो तो

✍.........
रामबाबू लाल
(कार्यशाला अधीक्षक)
ज्ञान आई.टी.आई.

*लेना चाहते हो तो - आशीर्वाद लो
मारना चाहते हो तो - बुरी इच्छाओं को मारो
जीतना चाहते हो तो - तृष्णा को जीतो
खाना चाहते हो तो - क्रोध को खाओ
पीना चाहते हो तो - हरिनाम रस पियो
पहनना चाहते हो तो - नेकी का जामा पहनो
देना चाहते हो तो - प्रेम दो
करना चाहते हो तो - दीन दुखियों की सहायता करो
छोड़ना चाहते हो तो - बुरी आदतों को छोड़ो
बोलना चाहते हो तो - सत्य और मीठे वचन बोलो
तोलना चाहते हो तो - बात को तोलो
देखना चाहते हो तो - अपने आप को देखो
सुनना चाहते हो तो - दीन दुखियों की पुकार सुनो
डूबना चाहते हो तो - किसी की गहरी झील सी
आँखों में डूबकर देखो।*

❑

!!-भारत-माता-की-जय-!!

ओम जय भारत माता, मैया जय भारत माता।
तुमको निश्दिन ध्यावै, तुमसे जीवन पावें
अमिट यही नाता, ओम जय भारत माता
तू लक्ष्मी दुर्गा जगदम्बे, सरस्वती माता
तुमको जो नित गाये, सुख सम्पति पाता
ओम जय भारत माता......
उत्तर हिमगिरि मुकुट सुहाये, मस्तक परमाता
दक्षिण हिन्दू सागर, यश तेरे गाता
ओम जय भारत माता......
राम कृष्ण ओर महावीर, बुद्ध नानक सुत तेरे
बाल्मिकी रविदास सन्त, सब गुण गाये तेरे
ओम जय भारत माता......
वैदिक बौद्ध जैन और सिख, सब हिन्दू भ्राता
छूत-अछूत न कोई, यह सच्चा नाता
ओम जय भारत माता......
पुण्यभूमि जय मातृभूमि जय, सब कुछ है तेरा
तन-मन-धन सब अर्पण, क्या लागे मेरा
ओम जय भारत माता......
भारत माँ की आरती, जो कोई नित गाता
शक्ति भक्ति तन-मन में, उत्तम फल पाता
ओम जय भारत माता......

❑

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना

इग्नू के **RSD Notification No.: 00371G/RSD/Estt./LSC/Notification/2014/ 2960 Dated 8 Dec., 2014** के द्वारा ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ [कोड नं. 47036 (डी)] में निम्नांकित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है :

क्रमांक	कार्यक्रम	प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता	अवधि
1.	बैचलर ऑफ प्रोपेटरी प्रोग्राम (B.P.P.)	औपचारिक शिक्षा आवश्यक नहीं, न्यूनतम आयु 18 वर्ष	6 माह
2.	मास्टर ऑफ आर्ट्स इन सोशियोलॉजी (M.A. Socio.)	स्नातक	2 वर्ष
3.	मास्टर ऑफ आर्ट्स इन इकोनोमिक्स (M.A. Eco.)	स्नातक	2 वर्ष
4.	मास्टर ऑफ आर्ट्स इन रूरल डेवलपमेंट (M.A.R.D.)	स्नातक	2 वर्ष
5.	पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल डेवलपमेंट (P.G.R.D.)	स्नातक	1 वर्ष
6.	डिप्लोमा इन बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग फाइनेंस एण्ड एकाउण्टिंग (DBPOFA)	अंग्रेजी विषय सहित कम से कम 50% प्राप्तांकों से 12वीं पास	1 वर्ष
7.	सर्टीफिकेट इन रूरल डेवलपमेंट (CRD)	स्नातक	6 माह
8.	सर्टीफिकेट इन टीचिंग इन इंग्लिश (CTE)	स्नातक या 10+2 (2 वर्ष का अध्यापन अनुभव)	6 माह
9.	सर्टिफिकेट इन एनवायरमेंटल स्टडीज (CES)	10+2	6 माह

इग्नू की विशेषताएँ

1. इग्नू परीक्षा सम्पन्न होने के उपरान्त 45 दिनों में परीक्षा परिणाम राष्ट्रीय स्तर पर घोषित करता है।

2. इग्नू एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना संसद के अधिनियम सन् 1985 द्वारा हुई है, अतः इसके प्रमाण-पत्र, डिप्लोमा तथा डिग्रियाँ वैश्विक स्तर पर सभी निकायों द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

3. इग्नू वर्ष में दो बार सत्रान्त परीक्षा कराता है, जिसमें विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार परीक्षा देता है।

4. इग्नू प्रत्येक कार्यक्रम में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को मुफ्त अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री निःशुल्क प्रदान कराता है।

5. इग्नू दो सत्रों (जनवरी एवं जुलाई) में प्रवेश देता है, जिससे वंचित छात्रों के समय का सदुपयोग होता है।

6. वर्ष में दो बार (जून व दिसम्बर) में सत्रान्त परीक्षा कराता है।

7. इग्नू विश्व का एकमात्र विशालतम विश्वविद्यालय है ,जो जन-जन के विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

विद्यार्थियों की विषय सम्बन्धी कठिनाईयों के निवारण के लिए मान्यता प्राप्त योग्य एवं अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा सप्ताहांत एवं सांध्यकालीन परामर्श कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

उपर्युक्त कार्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक व्यक्ति विशेष अध्ययन केन्द्र के समन्वयक श्री आर.के. शर्मा (विभागाध्यक्ष बी.टी.सी.) ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ से सम्पर्क कर सकते हैं।

मोबाइल : 9837574326 (श्री आर.के. शर्मा) **मोबाइल :** 9219419405 (ज्ञान महाविद्यालय)

Article

An Awareness About Snakes and its Poison (Venom)

....

Dr. Jyoti Singh

Assi. Prof. Zoology Deptt.

Snakes : Limbless Lizard

Very few people knows about another name of snakes i.e. limbless lizards. Whenever we hear about them we get afraid. These are known to be very dangerous animal , which is not true.

Snakes are cold-blooded animals it means during extreme winter & summer, they become under ground. Total 2,000 sp. are present in the world and out of them 272 species are found alone in our country India.

From their population only 58 species are poisonous found in all over the world. India has 04 sp. dangerously poisonous. These the Cobra, Krait, Russell's Viper, Saw scaled Viper.

Its toxin is called venom which is a mixture of poison, enzymes & digestive juice. Venom affect person by two ways.

1. As haemotoxic form.
2. As neurotoxic form.

Haemotoxic poison affects respiratory muscle & paralyze them. Example : Cobra & Krait While Neurotoxic poison cause haemorrhage (Bleeding) & tissue destruction. Example : Viper snakes.

People dies due to lack of awareness every year. If we know the proper symptoms & mark of snake bite we can identify the snake and inform to nearby doctor so that victim can be treated properly as soon as possible. For an example :

A cobra bite symptoms are : Piercing pain, blue-black skin colour Cobra's at bitten area red fluid comes out, pupil contract, speechless condition, dropping of saliva & dry vomiting. And finally with slow breathing person will die with in 2 to 5 hrs.

Cobra : Spinal cord + Brain

Krait's bite symptoms : Kraits are 3 times more fatal than cobra. Their symptoms are mainly abdominal pain, destruction of RBC, internal bleeding and paralysis of limbs (hands & feet) and body and within 24 hours person will die.

Viper's bite symptoms : When viper snakes bite they produce symptoms like that - swelling on bitten part, red fluid from wound, tissue destruction, pupil dilates, profuse vomiting, cold factor and unconsciousness. Finally death due paralysis and bleeding.

From this article author wants to spread only awareness about snake's venom and bites and symptoms. By identifying symptoms we can save some time and treatment should be started by Doctor so that victim can be recovered soon. Medicine for snake venom is known as Anti-Venom and it is prepared inside the Horse-body. ❑

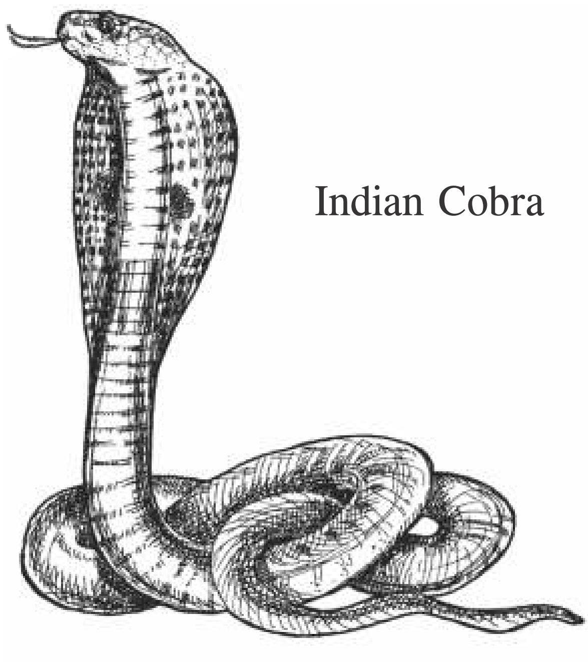

Indian Cobra

Meaning of Mathematics

✍.........
Arshad Khan
B.Sc. III[rd] year

M	→	Mental Power
A	→	Attention
T	→	Tact
H	→	Hard labour
E	→	Enthusiasm
M	→	Memory
A	→	Ability
T	→	Talent
I	→	Intelligence
C	→	Creativity
S	→	Smiles

VIRTUES OF MAHATMA GANDHI

M	→	Man of Higher Culture
A	→	Admired by everyone
H	→	Humbly Served the poor
A	→	Active being
T	→	Truth was his love
M	→	Made India Independent
A	→	Avoided Personal Comforts
G	→	Genius
A	→	Ahinsa he preached
N	→	Noble
D	→	Devoted his Life of the Nation
H	→	Honest
I	→	Indian in all respect.

❑

What is Mathematics

✍.........
Pushpendra Kumar
B.Sc. III[rd] year (P.C.M.)

Alpha, Bita, Gamma, eta.
Delta, theta, Zeta
Which all means 'Ghaseeta'
That is mathematics.

When all seens rowing
Some times even roaring
When the question is boring
That is Mathematics

Co-ordinate Geometry, Pure Geometry
Solid Geometry and Nominal Geometry
Dynamic, Statics or Hydrostatics,
Differential, integral really a 'calculus'

Some times multiplication, addition & subtract,
Fraction, Integration
No construction, but destruction
That is Mathematics.

It is Hell when examination is near.
It is heaven when the result is clear.
Hell or heaven I don't know how
My progress reports to my parents show
That I have got "Zero" out of "Sau"
That is Mathematics.

❑

☞ *Technology is just a tool. In terms of getting the kids working together and motivating them, the teacher is the most important.* ***- Bill Gates***

☞ *Challenge and opportunity are motivation friends of a consistent willer.* ***- Anonymous***

Do You Know

✍.........
Radha
B.Sc. (ZBC)
Ist Year

1. Only 05 minutes without oxygen can cause brain damage.
2. More than 100,000 chemicals reactions take place in your brain every second.
3. In General, men's brain are 10% bigger than woman's even after taking into account larger body size.
4. Neander thal brains were 10% larger than our homo sapiens brain.
5. 100 years ago, The first virus was found in both plants and animal.
6. There are 206 bones in the adult human body and there are 300 bones in children (as they grow some of the bones fuse together).
7. The longest living cells in the body are brain cells which live entire lifetime and are known as neuron.
8. The only letter not appearing on the periodic table is the letter 'J'
9. October 10 is National Matric Day.
10. Diamond are the hardest substance known to man.
11. The earth average velocity orbiting the sun is 107, 220 km/hour.
12. Starfish don't have brain's are recently their name has changed as 'SEA-STAR' .
13. It's impossible to sneeze with your eyes open.
14. The pupil of an Octopus eye is rectangular.
15. Our eyes are always the same in size but our nose and ears never stop growing.
16. Only human sleep on their back.
17. The human brain is 80% water.
18. In your life time you'll shed over 40 pounds of skin.
19. Your brain used more than 25% of the oxygen used by human body.
20. The human body has enough fat to produce 7 bars of soap.
21. The zebra is white with black strips and all zebra have different stripes.
22. Cheeta can accelerate from 0 to 70 Km/h in 3 second.
23. A mosquito has 47 teeth.
24. A clock roach can live for several weeks with out it's head.
25. Ants do not sleep.
26. The shark teeth are literally as hard as steel.
27. Muscles in human body (640 in total) Make up about half of the body weight.
28. A new born body can see black and white color only.
29. A baby's brain used 50% of the glucose in its body.
30. A new born baby can't cry with tears.
31. Like finger print's everyone's tongue print is different.
32. The Giraffe can clean it's ears with it's 21 inch tongue.
33. The camels have three eyelids to protect them selves from blowing sand.
34. The longest bone of human body is thigh bone : femur.
35. Largest gland of human body is liver.
36. The longest cell of our body is nueron (Nerve Cell).
37. The animal elephant is the only mammal that can't jump.

❑

Appropriate use of Opportunity

✍.........
Sonam Dubey
B.T.C. (2015)

Opportunity is basically a term used as selfish advantage. It is the biggest and blessed thing is our life. It is usually refers to a situation where is an ability on the mistakes of others and to utilize opportunities created by the errors. One should be quite active and sincere to grab an opportunity.

Opportunity is an action or an idea where one can prove oneself more skilful against the opponent. It is a thing which can not be give to someone but could be grab from the circumstances. It is one's own intelligence that how could he can make an appropriate use of an opportunity. It is a self interested thing which lies withing you. It is a self motivation, inner direction and thoughtful freedom to do something large and able, only then it will be an appropriate use of an opportunity.

In may opinion, one should use an opportunity at one's best. Let me give you an example-there would be a die-hard competition among the competitors and an opportunist is the one who lift behind the all competitors and make the highest position. In this case, he proved himself as an opportunist who took advantages from hostile circumstances. Now, we can say that one has to be keen observer in all circumstances and if one gets an opportunity then one should an appropriate use of that opportunity from physically and mentally. One should do all efforts for completing it. ❑

Life's Account

✍.........
Shivani Gupta
B. Com - II years

Our Birth is our opening balance.
Our Death is our closing balance
Our Prejudice views are our liabilities
Our Creative ideas are our assets
Soul is our fixed deposits.
Thinking is our current account.
Achievements are our capital.
Character and morals are general reserve.
Value and behaviour are our good will.
Patience is our interest earned.
Knowledge is our investment.
Education is brand. ❑

Article

IMPORTANCE OF AFFECTION

✍.........
Prince Saxena
B.Com II[nd] years

There is a story of a vulture one day is snatched in a field where child was lying in a cradle. It took up this child and flew away. It placed the child on one side of the clift of mountain. The mother of the child seemed to be mad due to fear. The whole village was present there. Villagers began to talk with one another that how take the child back.

A healthy boatman side I shell take him back. That boatman bean to climb on that clift but as he could reach on his the halfway. He had to come back down. Then an expert mountains climbing person told. "Shall come back with him."

He also climbed and climbed but he could not get Success. At last he had also come bake. In the mean time a woman who was caught by some people. They also failed to restrain that woman.

She also began to climb that peak up that mountain and soon she reached the place where her son was. She got down with the child safe from that peak. This was due to the affection of mother with the son. Love and affection are very powerful. Every thing is possible in love. If we have real love for any person we can do everything.

❑

Oh! This Examination

✍.........
Neetu Kumari
B.T.C. IV[th] Semester

Oh! this Examination !
They give us lots of tension,
English is all composition,
Hindi is all motion,
Geography is about direction.
Political science is full of corruption,
History traces civilization.
Economics deals with production,
Sociology is based on Socialization.
we the students
and our limitation,
What our a disastrous situations.
Oh! this examination!
They give us lots of tension.
They give us lots of tension.

❑

Key to successful students

A good student always stick to time
He always keeps our time.
He never do fight no sidles
He always clean and he guides others.
He cooperates father and loves mothers.
He always studies regularly on his card.
He seeks additional works and works hard.
He loves his mother and he people.
He never distory school on chapple
He is very kindful.
And he is very helpful.

Article

How Can A Student Pass

✍.........
Varsha Singh
B.Com Ist year

If is not fault of a student because a year only has 365 days.

Day in year	=	365 days
Sunday	=	52 days
(Sunday are meant for rest)		
Days Left	=	313 Days
Eight hours for daily sleep	=	122 Days
(Necessary)		
Days Left	=	191 Days
Summer Vacation	=	60 Days
(Weather is too hot to study)		
Days Left	=	131 Days
One hour for daily playing	=	15 Days
(It is Good for health)		
Days Left	=	116 Days
Two hours daily eating	=	30 Days
(Chew the food properly)		
Days Left	=	86 Days
Examination Days in a year	=	30 Days
(Giving Exam is compulsory)		
Days Left	=	56 Days
Winter Vacations	=	25 Days
(Weather is too cold making it difficult to Study)		
Days Left	=	31 days
Other Holidays	=	28 Days
(To celebrate festivals and to enjoy)		
Days Left	=	3 Days
Result Days	=	3 Days
(Taking report card to know our performance)		
Days Left	=	0 Days

So, tell me my dear friends
where is the time to study.

❑

A few Words

Dear friend please pay attention,
I have a few words to mention,
When you enter the college gate,
Be sure you are never late.
Say your prayers with a pure heart,
This is how every day by day.
go to college for better aim.
To be great and achieve fame,
If teacher should your never mind,
It's a teaching of its own kind.
This precious time you will be sorry otherwise.
There few lions I wanted to mention,
Take you for your time and aftention.

❑

महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति

'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः'

ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 11 सितम्बर, 1998 में स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय के साथ की गई थी। डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी पेशे से डॉक्टर थे, वह एक लेखक, समाजसेवी के साथ-साथ अच्छे शिक्षाविद् भी थे। इसीलिए सब शिक्षित हों, इस प्रबल इच्छा के कारण उन्होंने ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना शहर के कोलाहल से दूर एक निर्जन स्थान में की थी। 'कार्य ही पूजा है' यह उनके जीवन का सिद्धान्त था। वर्ष 2002 में उनके अन्तिम श्वाँस लेने के उपरांत महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा सँभाली गयी। लोग मिलते गये, कारवाँ बढ़ता गया, इस प्रकार उन्होंने अपने महाविद्यालय की टीम के साथ ज्ञान महाविद्यालय को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और आज यह अलीगढ़ में प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में महाविद्यालय में पाँच संकायों में स्नातक कोर्स बी.एड., बी. टी. सी.,बी.एस-सी., बी.कॉम., बी.ए., बी. बी.ए. व बी.सी.ए., संचालित हैं तथा परास्नातक स्तर पर एम.कॉम. एवंएम.एस-सी. (गणित एवं रसायन विज्ञान) के कोर्स सफलतापूर्वक चल रहे हैं। डॉ. गौतम गोयल के निर्देशन में ज्ञान आई.टी.आई. सफलतापूर्वक चल रहा है, जिसके दो सफलता पूर्वक चल रहे हैं।

सचिव महोदय के प्रयासों द्वारा अलीगढ़ जिले में सर्वप्रथम बी.टी.सी. कोर्स की मान्यता प्राप्त हुई। महाविद्यालय के शिक्षा विभाग में आज 200 सीटें हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है कि शिक्षा संकाय को **'A'** ग्रेड से नवाजा गया था। यह डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा का प्रथम कॉलेज है, जिसने सबसे अधिक अंकों के साथ **'A'** ग्रेड प्राप्त किया। ज्ञान महाविद्यालय डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा का प्रथम स्ववित्त पोषित कॉलेज है, जोकि **'NAAC'** द्वारा विज्ञान, वाणिज्य, कला एवं प्रबन्धन संकायों को **'B'** ग्रेड से नवाजा गया है।

महाविद्यालय में चार भवन डॉ. रघुनन्दन प्रसाद प्रशासनिक भवन, सरस्वती भवन, ज्ञान भवन व स्वराज्य भवन हैं। सरस्वती भवन जहाँ जन्तु, वनस्पति, रसायन, भौतिकी, भूगोल, मनोविज्ञान व गृहविज्ञान की प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है। वहीं पर ज्ञान भवन में मनोविज्ञान, भाषा, कला व शिल्प, शारीरिक व स्वास्थ्य, विज्ञान एवं संगीत आदि के रिसोर्स सेंटर हैं तथा सुसज्जित आई. सी. टी. प्रयोगशाला है, जहाँ पर सभी कम्प्यूटर पर वाई.फाई. सिस्टम लगे हुए हैं। दोनों ही भवनों में पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय है, जहाँ पर लगभग 24,000 **Text Books** हैं। इसके अतिरिक्त जर्नल, न्यूज लैटर, पत्रिका तथा समाचार पत्रों की भी पुस्तकालय में सुविधा है। इसके अतिरिक्त सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पूरा कैम्पस सी.सी.टी.वी. कैमरों से सुसज्जित है।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा का पहला स्व-वित्त पोषित कॉलेज है, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम चल रहा है। इस वर्ष सात दिवसीय विशेष शिविर नजदीक के ग्राम पड़ियावली में आयोजित किया गया है।

महाविद्यालय द्वारा ग्राम बढ़ौली फतेहखाँ को सत्र 2012 -13 में शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गोद लिया गया था। इसके अन्तर्गत 12 लड़कियों को महाविद्यालय में नि:शुल्क शिक्षण सुविधा दी गई थी तथा 'स्वराज्य स्वावलम्बी योजना' के अंतर्गत 32 सिलाई मशीनों का वितरण गाँव की कन्याओं (महाविद्यालय की पूर्व या वर्तमान छात्रा) की शादी के शुभ अवसर पर प्रबन्धतन्त्र द्वारा किया जा चुका है। इसी क्रम में 'स्वराज्य स्वावलम्बी योजना' के अन्तर्गत गोद लिए गए 14 गाँवों के छात्रों को ज्ञान आई. टी. आई में प्रवेश लेने पर पूरे शुल्क में 4,000 रु. की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। रक्तदान, भ्रष्टाचार मिटाओ रैली, पॉलीथिन हटाओ-पर्यावरण बचाओ आदि सामाजिक कार्य भी समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं।

महाविद्यालय में विभिन्न समितियाँ हैं, जिनके अन्तर्गत वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक अनुशासन समिति है, जिसकी देख-रेख में ही महाविद्यालय के विद्यार्थी अनुशासित रहते हैं। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्व-विद्यालय आगरा में पहली बार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति के लिए **Biometric Machine** भी लगी हुई है।

वर्तमान में महाविद्यालय में लगभग 2,200 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत् है तथा 70 टीचिंग स्टाफ व 50 नॉन

टीचिंग स्टाफ है। अत: महाविद्यालय में शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात काफी अच्छा है। इसके अतिरिक्त प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये दो यूनीफार्म तथा द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिये एक यूनिफार्म व एक घड़ी उपहार स्वरूप दी जाती है, जिससे छात्रों में एकरूपता की भावना उत्पन्न हो तथा वह समय के प्रति सचेत हों।

महाविद्यालय में सेवायोजन प्रकोष्ठ व पुरातन छात्र समिति भी है। सेवायोजन प्रकोष्ठ के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। कई छात्र-छात्राएं सरकारी सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। पुरातन छात्र समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष पदों के पदाधिकारियों के चयन हेतु प्रत्येक वर्ष पुरातन छात्र-छात्राओं को नामित किया जाता है। इस वर्ष भी पुरातन छात्र समिति द्वारा 'ज्ञान दीप' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को पुरातन छात्र-छात्राओं हेतु 'ज्ञानदिवस' का आयोजन किया जाता है, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

महाविद्यालय का "Vision "to be a Center of Excellence" है। इस श्रृंखला में शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखने हेतु Internal Quality Assurance Cell (IQAC) भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को सेमिनार, कार्यशालाओं व Orientation Programme में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय के लगभग 80% प्राध्यापकों को ए.एम.यू. में Orientation Programme के लिए भेजा गया और इसी तरह से कई प्राध्यापकों को Refresher Course के लिए भी भेजा गया। शिक्षण में नवीनता लाने हेतु शिक्षकों को Computer Note Book व Smart Phone उपलब्ध कराये गये हैं। महाविद्यालय में समय-समय पर अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता व उसमें नवीनता लाने के लिये अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय 'ज्ञान पुष्प' के नाम से वार्षिक पत्रिका व चतुर्मासिक पत्रक 'ज्ञान दर्शन' का भी सफल प्रकाशन कर रहा है। Gyan Bhav नामक जर्नल के आठ अंक प्रकाशित हो चुके हैं तथा इसी क्रम में विज्ञान संकाय से Gyan Vigyan व वाणिज्य संकाय से Gyan Arth नामक जर्नल भी 2014 से प्रकाशित किए जा रहे हैं। गौरव का विषय है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा महाविद्यालय में एक विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है, जिसमें 10 कोर्सों के साथ जनवरी 2015 से प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। महाविद्यालय को डोयेक सोसायटी (भारत सरकार द्वारा संचालित) द्वारा बी.सी.सी तथा सी.सी.सी. कम्प्यूटर कोर्स के संचालन की मान्यता प्रदान की गई है।

कमजोर छात्रों हेतु अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा युक्त होने के कारण छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सत्रीय परीक्षाओं को ओ.एम.आर. शीट के माध्यम से कराया जाता है।

छात्रों के लिए खेल में प्रोत्साहन हेतु सभी प्रकार के खेलों का आयोजन होता है व छात्रों को अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है एवं उसमें भाग लेने वाले छात्रों के आने-जाने का व्यय महाविद्यालय द्वारा किया जाता है तथा प्रतिभाशाली खिलाड़ी छात्रों को 'ज्ञान गौरव' व 'ज्ञान केसरी' पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

महाविद्यालय की छात्राओं के लिए बस सुविधा का भी प्रावधान है। क्वार्सी चौराहे तथा एटा चुंगी से महाविद्यालय तक बस सेवा उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र-छात्राओं के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाता है।

ज्ञान परिवार नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसके अंतर्गत युवा वर्ग के रुझान के अनुरूप फेसबुक पर भी 'ज्ञान परिवार' नामक ग्रुप के साथ तथा व्हाटस्अप्प पर छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों से जुड़ा हुआ है।

महाविद्यालय भविष्य के लिए अनेक योजनायें बना रहा है, जिनमें मुख्य हैं :

1. महाविद्यालय को स्वायत्त (Autonomous) संस्था बनाना।
2. सभी विभागों में सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन कराना।
3. एम. एड. एवं एम. एस-सी. में अन्य विषयों तथा एम.ए. की मान्यता प्राप्त करना।
4. कला संकाय में अतिरिक्त विषयों की मान्यता प्राप्त करने का प्रयास करना।

अंत में जिस तरह से ज्ञान महाविद्यालय ऊँचाइयों की तरफ अग्रसर है। हम सभी ज्ञान परिवार के सदस्य मिलकर इसकी उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ❑

डॉ. वाई के. गुप्ता प्राचार्य

महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट

वाणिज्य संकाय

1998 में महाविद्यालय की शुरूआत बी.कॉम की कक्षाओं से हुई। 2009-10 में विश्वविद्यालय ने एम. कॉम. की कक्षाएँ प्रारम्भ करने की भी मान्यता दी। इस प्रकार संकाय में बी.कॉम. व एम.कॉम. की कक्षाएँ चलायी जा रही हैं। सत्र 2015-16 की विश्वविद्यालयी परीक्षा में बी.कॉम. अन्तिम वर्ष का परीक्षाफल 98.50% तथा एम.कॉम. अन्तिम वर्ष का परीक्षाफल 96.55% रहा। संकाय के प्राध्यापकों में से 6 प्राध्यापक पी.एच.डी. हैं।

संकाय **'ज्ञान अर्थ'** नाम से एक अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल का प्रकाशन करता है। इस जर्नल का ISSN 2349-1310 है। इसके मुख्य सम्पादक वाणिज्य संकाय के पूर्व अध्यक्ष एवं महाविद्यालय के वर्तमान प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता हैं। वाणिज्य संकाय के वरिष्ठ प्राध्यापक सह उप प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल इसके सम्पादक मण्डल के सदस्य हैं।

संकाय में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मोहम्मद शोएब ने "Strategic Financial Recession Making" विषय पर अतिथि व्याख्यान दिया। संकाय ने बी.कॉम. के विद्यार्थियों के लिए सैसनल परीक्षा का आयोजन किया तथा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों को मथुरा-वृन्दावन ले जाया गया। वहाँ विभिन्न व्यापारिक प्रतिष्ठानों की कार्यप्रणाली तथा उनके व्यापारिक एवं वाणिज्यिक महत्व पर विभाग के प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों से चर्चा की।

महाविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवायोजना के शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों जैसे- निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, वृक्षारोपण, डिजिटल इण्डिया सम्बन्धी कार्यक्रम, रक्तदान शिविर, अभिभावक शिक्षक संवाद, डिजिटल इण्डिया क्विज़ संगोष्ठी तथा महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भी संकाय के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया, यह प्रतियोगिता OMR शीट पर करायी गयी।

महाविद्यालय की ज्ञान वोकेशनल इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित Personality Growing तथा English Speaking एवं Studenting Era आदि कार्यक्रमों में भी संकाय के विद्यार्थियों ने यथोचित प्रतिभाग किया। संकाय में नवनियुक्त प्राध्यापकों का उन्मुखीकरण किया गया। संकाय के प्राध्यापक महाविद्यालय द्वारा गठित विभिन्न समितियों में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

कुल मिलाकर संकाय डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा की अध्यक्षता में महाविद्यालय के सभी कार्यक्रमों में प्रतिभाग करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ❑

विज्ञान संकाय

विज्ञान संकाय इस महाविद्यालय का एक प्रतिष्ठित संकाय है। विज्ञान संकाय के अन्तर्गत बी.एस.सी. (ZBC + PCM) की कक्षाएँ 2003 से संचालित हैं और यह गौरव की बात है कि पिछले 14 वर्षों से संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

महाविद्यालय प्रबन्धन के अथक प्रयासों से संकाय में परास्नातक स्तर पर सत्र 2015-16 से दो विषयों (गणित एवं रसायन शास्त्र) में एम.एस-सी. पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। संकाय अपने प्रभारी डॉ. एच. एस. चौधरी के कुशल निर्देशन में प्रगति के पथ पर अग्रसर है। संकाय ने पिछले सत्र 2015-16 बी.एस-सी. के परीक्षा परिणामों में 98% सफलता प्राप्त की है। संकाय में छात्र-छात्राओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। यह उपलब्धि महाविद्यालय के उचित प्रबन्धन, परिसर का शान्तिपूर्ण वातावरण, प्राध्यापकों की लगन,

मेहनत और ईमानदारी से कार्य करने की कुशलता से ही सम्भव हुयी है।

संकाय के प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकाएँ अति व्यस्तता के बाबजूद भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अपने शोध-पत्र भेजते रहते हैं तथा सेमिनार, कार्यशाला एवं गोष्ठियों में सहभागिता करते रहते हैं। विज्ञान संकाय की समस्त प्रयोगशालाएँ नवीन एवं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं। संकाय अन्तर्राष्ट्रीय जनरल ज्ञान-विज्ञान ISSN (2349-2732) का प्रकाशन करता है। इसमें विषय-विशेषज्ञों के शोध-पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। संकाय की तरफ से सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के शैक्षिक-भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत इस वर्ष आगरा की अनेक ऐतिहासिक दर्शनीय इमारतों का अवलोकन किया गया और उनका धार्मिक एवं शैक्षिक महत्व बताया गया। संकाय के सभी प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएँ तथा छात्र-छात्राएँ पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग ले रहे हैं तथा सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों जैसे- जीव-जन्तु रक्षा अभियान, गौरेया संरक्षण कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, वृक्षारोपण, स्वतन्त्रता दिवस, गांधी जयंती, गणतन्त्र दिवस, रक्तदान शिविर, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, सहभोज आदि कार्यक्रम में भी बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं।

विभिन्न विषयों के विषय विशेषज्ञों को बुलाकर महाविद्यालय में अतिथि व्याख्यान कराये गये। महाविद्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर में इसवार कुल 78 यूनिट रक्तदान किया गया, इसमें विज्ञान संकाय का योगदान 60% रहा ।

महाविद्यालय द्वारा आयोजित कला, वाणिज्य तथा विज्ञान संकाय के लिए आयोजित संयुक्त सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालय द्वारा गठित विभिन्न समितियों में संकाय के सभी प्राध्यापक, प्रभारी/सदस्य के रूप में सक्रिय हैं।

❑

कला संकाय

सत्र 2010-11 में ज्ञान महाविद्यालय को डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा बी.ए. की कक्षाओं को प्रारम्भ करने की मान्यता प्रदान की गई। आज वर्तमान में कला संकाय में ग्यारह विषय-सामान्य हिन्दी, सामान्य अंग्रेजी, साहित्यिक हिन्दी, साहित्यिक अंग्रेजी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान, गृह विज्ञान और शिक्षा शास्त्र का अध्यापन कार्य कराया जा रहा है।

सत्र 2016-17 में कला संकाय में 400 छात्र-छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। डॉ. विनोद कुमार वर्मा प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं।

- ☛ संकाय के प्रत्येक प्राध्यापक एक आदर्श 'Mentor' की भूमिका निभा रहे हैं, जिसमें प्राध्यापक छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याएँ आदि के बारे में जानने का प्रयास कर समाधान करने का प्रयत्न करते हैं।
- ☛ 05-09-2016 को बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र मनोज कुमार ने डिजिटल इंडिया क्विज प्रतियोगिता में भाग लिया। क्विज प्रतियोगिता के विजेता के रूप में 11-09-2016 को महाविद्यालय संस्थापना दिवस पर पुरस्कार में उन्होंने एक स्मार्ट फोन प्राप्त किया।
- ☛ 19-11-2016 को रक्तदान शिविर में कला संकाय के छात्र-छात्राओं ने रक्तदान कर सक्रिय रूप से भाग लेकर अपना योगदान दिया।
- ☛ 02-12-2016 को महाविद्यालय में आयोजित हुई रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेकर बी.ए. की छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- ☛ 20-12-2016 को महाविद्यालय स्तर पर हुई सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र शमशाद मलिक पुत्र मौ. शहजाद ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- ☛ 24-01-2017 को महाविद्यालय में आयोजित मानव श्रृखंला बनाकर मतदान हेतु कला संकाय के छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया गया।
- ☛ 25-01-2017 को मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें कला संकाय के

विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने अहम भूमिका निभाई।

हिन्दी विभाग : हिन्दी विषय में डॉ. बीना अग्रवाल एवं डॉ. नरेन्द्र सिंह प्राध्यापक हैं। डॉ. बीना अग्रवाल महाविद्यालय की अतिथि सत्कार समिति की प्रभारी तथा भवन रख-रखाव समिति, कला एवं हस्त शिल्प समिति एवं सांस्कृतिक समिति की सदस्या हैं। डॉ. नरेन्द्र सिंह महाविद्यालय के साहित्यिक समिति के प्रभारी एवं अनुशासन समिति में उप मुख्य अनुशासन अधिकारी के पद पर कार्य कर रहे हैं। हिन्दी विभाग में 29 नवम्बर, 2016 को डॉ. मंजू शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर टी.आर. कालेज, अलीगढ़ ने **'आज की युवा पीढ़ी में हिन्दी के प्रति उदासीनता'** पर अतिथि व्याख्यान दिया।

अंग्रेजी विभाग : अंग्रेजी विषय में श्री नेपाल सिंह तथा कु. सविता गुप्ता प्राध्यापक हैं।

समाजशास्त्र विभाग : समाजशास्त्र विषय में डॉ. विवेक मिश्रा एवं डॉ. ललित उपाध्याय प्राध्यापक हैं। डॉ. विवेक मिश्रा महाविद्यालय की ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति (सामाजिक उत्तर दायित्व कार्यक्रम) में प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं तथा पुरातन छात्र समिति, परीक्षा समिति व पुस्तकालय समिति के सदस्य हैं। डॉ. ललित उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी की भूमिका निभा रहे हैं तथा ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के सदस्य भी हैं। डॉ. ललित उपाध्याय महाविद्यालय की जनसम्पर्क, मीडिया, सोशल मीडिया के समन्वय सम्बन्धी कार्यों का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। वे **'ज्ञान पुष्प'** वार्षिक पत्रिका के विगत तीन वर्षों से मुख्य संपादक भी हैं।

भूगोल विभाग : भूगोल विभाग में डॉ. सोमवीर सिंह एवं मौ. वाहिद प्राध्यापक हैं। डॉ. सोमवीर सिंह भवन रख-रखाव समिति एवं क्रीड़ा समिति के प्रभारी हैं तथा परीक्षा समिति एवं राष्ट्रीय सेवा योजना समिति के सदस्य भी है।। मौ. वाहिद छात्र कल्याण समिति, अनुशासन समिति व प्रवेश समिति एवं क्रीड़ा समिति के सदस्य भी हैं। दोनों प्राध्यापक यू.जी.सी. की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) क्वालीफाइड हैं। भूगोल की सुसज्जित प्रयोगशाला है।

अर्थशास्त्र विभाग : अर्थशास्त्र विषय में डॉ. दीनानाथ गुप्ता एवं डॉ. रत्न प्रकाश प्राध्यापक हैं। डॉ. दीनानाथ गुप्ता आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन समिति व शैक्षणिक समिति के सदस्य हैं। डॉ. रत्न प्रकाश शोध एवं प्रकाशन समिति के प्रभारी हैं।

मनोविज्ञान विभाग : मनोविज्ञान विषय में श्रीमती शिवानी सारस्वत एवं श्री राजेन्द्र पाल सिंह प्राध्यापक हैं। श्रीमती शिवानी सारस्वत महाविद्यालय की छात्र कल्याण समिति की प्रभारी तथा परीक्षा समिति की सदस्या भी हैं। श्री राजेन्द्र पाल सिंह महाविद्यालय के मुख्य अनुशासन एवं प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। मनोविज्ञान की सुसज्जित प्रयोगशाला हैं।

राजनीति शास्त्र विभाग : राजनीति शास्त्र विषय में डॉ. विनोद कुमार वर्मा प्राध्यापक हैं। डॉ. विनोद कुमार वर्मा महाविद्यालय की शैक्षिक समिति के सदस्य हैं। राजनीति शास्त्र विभाग में दिनांक 01-12-2016 को डॉ. निर्मेश कुमार सिंह सेंगर, एसोसिएट प्रोफेसर, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ ने **'भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों का महत्व'** विषय पर एक अतिथि व्याख्यान दिया।

गृहविज्ञान विभाग : गृहविज्ञान विषय में श्रीमती इन्दू सिंह प्राध्यापिका हैं। श्रीमती इन्दू सिंह महाविद्यालय की अनुशासन समिति एवं चिकित्सा समिति की सदस्या हैं। गृह विज्ञान विषय में एक सुसज्जित प्रयोगशाला भी है, जिसके अन्तर्गत छात्राओं को नए-नए व्यंजन, हस्त शिल्प कला, वस्त्र विज्ञान प्रसार, शिक्षण तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक क्रियाएँ करायी जाती हैं। छात्राओं को पोषण विज्ञान एवं उपचारात्मक पोषण सम्बन्धी उचित जानकारी प्रदान की जाती है।

शिक्षा शास्त्र विभाग : शिक्षा शास्त्र विषय में सुश्री भावना सारस्वत प्राध्यापिका हैं। सुश्री भावना सारस्वत महाविद्यालय की चिकित्सा समिति की प्रभारी तथा अनुशासन समिति, शोध एवं प्रकाशन समिति की सदस्या भी हैं। ❑

DEPARTMENT OF TECHNOLOGY

- In the age of computers and everything being digitalized Gyan Mahavidyalaya started BCA department in 2010, affiliated to Dr. B. R. Ambedkar University, Agra
- Subjects which are taught to the students are related to the technological appli-cation that are required in today's practical work field.
- This department provides not only quality education but also organises soft skill programmes.
- Proper labs are scheduled to perform practical work on whatever they are taught in classes.
- Educational tour are organised.
- With regular classes and hard work of teachers and students, obtained 98% result in their main exams. ❑

DEPARTMENT OF MANAGEMENT

- With the economic liberalisation of India, there's a need for candidates with adequate managerial and business knowledge which has gone up. Organisations require candidates with sound business knowledge who can facilitate between the operation team and senior management. Gyan Maha- vidyalaya started BBA department in 2010, which is affiliated to Dr. B.R. Ambedkar University, Agra.
- Focuses on managerial skills, team skills and communication skills via lectures delivered to the students.
- Educational tour are also organised.
- With complete dedication and hard work of teachers and students, ❑

शिक्षक-शिक्षा विभाग

NAAC GRADE "A"

महाविद्यालय का शिक्षक-शिक्षा विभाग डॉ. आभाकृष्ण जौहरी, विभागाध्यक्षा के कुशल निर्देशन में प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर है, विभाग में सभी शिक्षक साथी- श्री लखमीचन्द्र, श्रीगिर्राज किशोर, श्रीकृष्णदेव सिंह, श्रीमती शिवानी सारस्वत, श्रीमती पूनम माहेश्वरी, सुश्री भावना सारस्वत, श्रीमती वर्धा शर्मा, डॉ. मुक्ता व सुश्री कविता चौधरी के सहयोग से विभाग निरन्तर उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। बी.एड. में प्रशिक्षुओं की संख्या- 200 (दो यूनिट) है, जो अलीगढ़ मण्डल में एक गौरवमयी स्थान है। विभाग के समस्त प्राध्यापकगण अपने आपको अद्यतन करने के लिए सेमीनार, राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के शोध पत्र एवं कार्यशालाओं में भाग लेते रहते हैं तथा उच्च स्तर के जर्नल में अपने शोध पत्र प्रकाशित कराने के लिए प्रयासरत रहते हैं। विभाग के चार प्राध्यापकों श्रीमती शिवानी सारस्वत, श्रीमती पूनम माहेश्वरी, सुश्री भावना सारस्वत व श्री लखमीचन्द्र ने शिक्षण कार्य करते रहने के साथ-साथ, राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) पास कर ली है।

विभाग हेतु सुसज्जित पुस्तकालय सहित वाचनालय, आर्ट एण्ड क्राफ्ट संसाधन केन्द्र, मनोविज्ञान संसाधन केन्द्र, विज्ञान एवं गणित संसाधन केन्द्र, भाषा लैब, आई. सी. टी. एवं ई. टी. संसाधन केन्द्र तथा शारीरिक शिक्षा संसाधन केन्द्र हैं। गत वर्ष में बी.एड. की विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षा में हमारे विद्यार्थी शत्-प्रतिशत उत्तीर्ण हुए हैं। विभागीय क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं :

- **अतिथि व्याख्यान :** विभाग में पाठयक्रम के साथ-साथ विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के ज्ञानवर्धन के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर अतिथि व्याख्यान कराये जाते हैं, इस हेतु इस सत्र में प्रोफेसर डॉ. नक्खत नसरीन, शिक्षा संकाय, ए.एम.यू., द्वारा 'Teaching Skills and Use of ICT' विषय पर व्याख्यान दिया गया।
- **महिला सशक्तीकरण हेतु प्रेरणादायक फिल्में :**

इस वर्ष बी.एड. के सभी विद्यार्थियों को प्रेरणादायक फिल्में **'नीरजा' तथा 'दंगल'** दिखवाई गई ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में इन फिल्मों के नायक- नायिकाओं से प्रेरणा ले सकें।

- **सांस्कृतिक कार्यक्रम :** नृत्यकला, गायन-वादन, रंगोली, सजावट प्रतियोगिता एवं मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- **साहित्यिक कार्यक्रम :** निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कु. जया माहेश्वरी ने 'आज का शिक्षक कैसा हो' वाद-विवाद प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। जिला मतदाता जागरूकता में आयोजित लेखन प्रतियोगिता में बी.एड. 2015-17 की छात्रा मेघाली ने प्रथम तथा कविता राजपूत ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में जिले के प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।
- **शैक्षिक भ्रमण :** विद्यार्थियों को भ्रमण हेतु मथुरा-वृन्दावन ले जाया गया, जिसके माध्यम से छात्र-छात्राओं में आध्यात्मिक प्रवृत्ति को विकसित करने का प्रयास किया गया।
- **खेलकूद कार्यक्रम :** छात्रों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास के लिए इण्डोर एवं आउटडोर खेल समय-समय पर आयोजित कराये जाते हैं।
- **विश्वसनीय सलाहकार समिति :** विद्यार्थियों की शैक्षिक, नौकरी संबंधी प्रतियोगिताओं की तैयारी, सामाजिक परिवेश में समायोजन की समस्या तथा व्यक्तिगत समस्याओं के सामना करने एवं समाधान हेतु मार्गदर्शन Mentor System द्वारा किया जाता है। इस हेतु सभी विद्यार्थियों को 20-20 के समूह में विभाजित कर एक-एक प्राध्यापक (विश्वसनीय सलाह-कार) के निर्देशन में रखा जाता है। शिक्षक- शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित एक Bilingual International Journal Gyan Bhav है, जिसका ISSN 2319-8419 है।
- **विभाग के प्राध्यापकों के लिए पुनर्बोध एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम :** शिक्षक-शिक्षा विभाग के प्राध्यापकों के उन्मुखीकरण हेतु समय-समय पर ए.एस.सी., ए.एम.यू. केन्द्र पर कार्यक्रम में प्रतिभाग के लिए एवं अपने-अपने विषय में पुनर्बोध के लिए भी प्राध्यापकगण यू.जी.सी. द्वारा संचालित कार्यक्रमों में जाते रहते हैं।
- **वास्तविक सत्यता का प्रमाण :** महाविद्यालय का शिक्षक-शिक्षा विभाग **नैक 'ए'** ग्रेड प्राप्त कर चुका है, जो अलीगढ़ मण्डल में प्रथम एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में सर्वोच्च अंक 3.16 (सी.जी.पी.ए.) प्राप्त कर चुका है।
- **नयी आशा की किरण :** पी.जी. स्तर पर एम.एड. की मान्यता के लिए भी महाविद्यालय प्रयासरत् है। 'ज्ञान परिवार' गुणात्मक शिक्षा के लिए वचनबद्ध है। ❑

बी.टी.सी. विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश, लखनऊ से बी.टी.सी. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है। बड़े हर्ष का विषय है कि पूरे अलीगढ़ मण्डल के निजी संस्थानों में से केवल ज्ञान महाविद्यालय को सर्वप्रथम 24 जनवरी, 2010 से बी.टी.सी. पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की मान्यता प्राप्त हुई। साथ ही महाविद्यालय को बी.टी.सी. की स्थायी मान्यता का गौरव भी प्राप्त हुआ। सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद द्वारा आयोजित, बी.टी.सी. की सेमेस्टर परीक्षाओं का केन्द्र होने का गौरव भी महाविद्यालय को प्राप्त हुआ है।

शिक्षा सभ्य समाज की जननी है, शिक्षा ही विकास की प्रथम सीढ़ी है। शिक्षा के बिना सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। यह वास्तविकता भी है कि बच्चे का सर्वांगीण विकास शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा ही हमें मानव बनाती है। विभाग में पाठ्यक्रम

के साथ-साथ अनेक स्मरणीय कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है जिसमें विविध प्रतियोगिताएँ, अतिथि व्याख्यान समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षुओं के अस्तित्व एवं व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास किया जाता है एवं उनकी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से उनके अन्दर छिपी प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है। विभाग प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर है। विभाग में श्री आर. के. शर्मा, श्रीमती शोभा सारस्वत, श्री रवि कुमार, श्री ललित कुमार एवं मिस सविता गुप्ता हैं, जिनके सहयोग से विभाग निरन्तर उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है।

विभाग के सभी प्रवक्ता वर्ष भर चलने वाले इन कार्यक्रमों में अपना सक्रिय योगदान, कुशल नेतृत्व एवं सहभागिता प्रदर्शित करते हैं। विभाग के प्रत्येक प्राध्यापक आदर्श मेंटर (Mentor) की भूमिका के अंतर्गत छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी कर उनका समाधान करने का भी प्रयास करते हैं।

विभाग में विविध प्रतियोगिताएँ अतिथि व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिता, काव्य गोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, मेंहदी, रंगोली, थाल सज्जा, राखी प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण, निःशुल्क प्याऊ, वृक्षारोपण कार्यक्रम, शैक्षिक प्रदर्शनी, कला एवं हस्तशिल्प द्वारा प्रशिक्षुओं का ज्ञानवर्धन किया जाता है। साथ ही उनकी भागीदारी के माध्यम से छिपी प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे प्रशिक्षुओं के कौशल एवं व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन होते हैं।

बी.टी.सी. बैच 2010, बैच 2012 शत्-प्रतिशत परीक्षा परिणाम के साथ पूर्ण हो चुका है साथ ही बैच 2010 के सभी प्रशिक्षुओं को सरकारी नौकरी भी मिल चुकी है व बैच 2012 के 85.41% प्रशिक्षुओं को भी सरकारी नौकरी पाने का गौरव प्राप्त हो चुका है। बैच 2013 के प्रथम व द्वितीय काउंसलिंग में आबंटित 27 प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण पूर्ण हो चुका है, जिसमें 22 प्रशिक्षुओं ने उत्तर-प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली है। शेष प्रशिक्षु चतुर्थ सेमेस्टर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। बैच 2014 के तृतीय सेमेस्टर व बैच 2015 के प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। विभाग में निम्नलिखित गतिविधियाँ हुई हैं -

- ☛ 16, 17 व 18 फरवरी, 2016 को बी.टी.सी. बैच 2014 प्रथम सेमेस्टर की सत्रीय परीक्षा सम्पन्न करायी गयी।
- ☛ 9 मई, 2016 को विभाग में **'मदर्स-डे'** का आयोजन किया गया, जिसमें बी. टी. सी. के प्रशिक्षुओं ने अपने विचार व्यक्त किये।
- ☛ 4 जून, 2016 को पर्यावरण से संबंधित **'पोस्टर मेकिंग'** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- ☛ 5 जून, 2016 को ग्राम-मन्दिर का नगला व पड़ियावली में 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर **''पर्यावरण जन जागरूकता रैली''** निकाली गयी, जिसमें बी.टी.सी. प्राध्यापकों के साथ प्रशिक्षुओं ने ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया।
- ☛ 9 नवम्बर, 2016 को बी.टी.सी. बैच 2013 का विदाई समारोह एवं बैच 2015 का **प्रतिभा परिचय समारोह** का आयोजन कराया गया, जिसके मुख्य अतिथि डाइट के वरिष्ठ प्रवक्ता सह-प्राचार्य श्री सुधीर सिंह रहे।
- ☛ 23 दिसम्बर, 2016 को **'चौधरी चरण सिंह' की जयंती** मनाई गयी, जिसमें प्राध्यापकगण व प्रशिक्षुओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।
- ☛ 2 दिसम्बर, 2016 शिक्षक शिक्षा विभाग में **कला एवं हस्त शिल्प प्रदर्शनी** का आयोजन किया, जिसके मुख्य अतिथि डॉ. ईश्वर चंद्र गुप्ता एसोसिएट प्रोफेसर डी. एस. कालिज, विशिष्ट अतिथि डॉ. मनीषा शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर टी.आर. कॉलेज ने निर्णायक की भूमिका निभाई। यह प्रदर्शनी फाइन आर्ट प्रभारी श्री ललित कुमार की देखरेख में

आयोजित की गई।

- 28 दिसम्बर, 2016 को बी.टी.सी. बैच 2014 का शैक्षिक भ्रमण जिसमें कृष्ण जन्म भूमि, प्रेम मंदिर, लोटस मंदिर, बिहारी जी मन्दिर, पागल बाबा मन्दिर, बिरला मन्दिर तथा वैष्णो देवी धाम मंदिर के दर्शन किए। इस भ्रमण में सभी बी.टी.सी. के प्रवक्ता व विद्यार्थियों ने भ्रमण का आनंद लिया।
- 16 से 19 जनवरी 2017 तक बी.टी.सी. बैच 2014, तृतीय सेमेस्टर व बी.टी.सी. बैच 2015 प्रथम सेमेस्टर की सत्रीय परीक्षा सम्पन्न करायी। ❑

पुस्तकालय विभाग

वर्तमान समय में शिक्षा के लिये पुस्तकालय का विशेष महत्व है, शिक्षा ही राष्ट्र की नींव है। नींव जितनी मजबूत होगी राष्ट्र उतना ही सुदृढ़शील एवं मजबूत होगा, पुस्तकालय एक सार्वजनिक संस्था होती है। सन् 1930 में भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस. आर. रंगानाथन ने ग्रन्थालय के पाँच नियम बनाये, इन्हीं पाँच सूत्रों पर आधारित ''ग्रन्थालय विज्ञान के पाँच सूत्र (नियम)'' "The Five Laws of Library Science" नामक पुस्तक प्रकाशित की। इन्हीं पाँच नियमों के आधार पर पुस्तकालय का गठन एवं तकनीकी प्रक्रिया निश्चित की जाती है। इन्हीं नियमों के द्वारा पुस्तकालय का संचालन किया जाता है। पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम निम्नलिखित हैं –

1. पुस्तकें सभी के लिये हों।
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।
4. पाठक के समय की बचत हो।
5. पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था हो।

महाविद्यालय पुस्तकालय का संक्षिप्त विवरण :

महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना सन् 1998 में एक लघु (छोटे) रूप में हुई थी जोकि आज सम्पूर्ण एवं आधुनिक सुविधायुक्त पुस्तकालय स्थापित हो चुका है। पुस्तकालय पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत Computersed है। इसको AUTOSIS 1.1 नामक सोफ्टवेयर से संचालित किया जा रहा है। वर्तमान समय में पुस्तकालय में लगभग 25,618 पुस्तकें उपलब्ध हैं। महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या विश्वविद्यालय एवं शासन के नियमानुसार हैं। प्रतिवर्ष विभिन्न विषयों के अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त लेखकों के अद्यतन संस्करण (Latest Edition) सम्बन्धित संकायों के प्राध्यापकों के सुझावों द्वारा मँगाये जाते हैं। यही प्रबन्ध तंत्र की विशेषता है।

महाविद्यालय में एक पुस्तकालय सलाहकार समिति (Library Advisory Committee) भी है। जिसकी समय–समय पर बैठकें होती रहती हैं, जिसमें पुस्तकालय की आवश्यकताओं तथा समस्याओं का निस्तारण समिति के सदस्यों द्वारा किया जाता है, पुस्तकालय के विकास हेतु समिति के सदस्यों से उनके सुझाव लिये जाते हैं तथा उन सुझावों पर अमल भी किया जाता है।

A. **माँ सरस्वती पुस्तकालय :** यह सरस्वती भवन में स्थित, माँ सरस्वती पुस्तकालय है, इस पुस्तकालय से बी.ए., बी.एस–सी. (बायो एवं मैथ) बी.कॉम., एम. कॉम एवं एम.एस–सी. (मैथ एवं रसायन) पाठ्यक्रम की पुस्तकों का आदान–प्रदान किया जाता है। इस पुस्तकालय में नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार देश एवं विदेश के प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा छात्र एवं छात्राओं को उपलब्ध करायी जाती हैं। यह पुस्तकालय आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित एवं पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत है। इस पुस्तकालय में पुस्तकें (Glass Door Almirah) में सुव्यवस्थित तरीके से सुसज्जित हैं, जिससे छात्र–छात्राओं को पुस्तक खोजने में आसानी होती है।

इस पुस्तकालय में लगभग 11,000 Text Books उपलब्ध हैं। इसके अलावा (Reference Books, Dictionaries, Journals, Encyclopedia) इत्यादि पुस्तकालय में उपलब्ध रहते हैं। शोध से

सम्बन्धित Research Materials भी इसी पुस्तकालय से मिलता है। छात्र-छात्राओं को पुस्तकें 14 दिन के लिये Software के माध्यम से (ISSUE) की जाती हैं। इस पुस्तकालय में (Book Bank) सेवा भी उपलब्ध है। इस पुस्तकालय की देख-रेख मि. डी. के. रावत एवं मिस नीलम पुण्ढीर द्वारा की जाती है।

B. **ज्ञान पुस्तकालय :** यह ज्ञान भवन में स्थित ''ज्ञान पुस्तकालय'' है। इस पुस्तकालय में बी.एड., बी.टी.सी., बी.बी.ए. एवं बी.सी.ए. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के लेखकों की लगभग 14,618 पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में बी.टी.सी. पाठ्यक्रम की लगभग 3,500 Text Books उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में "Teacher's Guide" के नाम से एक अलग संग्रहालय है। इसी पुस्तकालय में "Dr. Gyan Collection" के नाम से एक अलग से सन्दर्भ सेवा उपलब्ध है।

Education से सम्बन्धित 18 Journals एवं Magazine तथा महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित तीन (Journals-- **ज्ञान अर्थ, ज्ञान-विज्ञान** एवं **ज्ञान भव** हैं एवं **'ज्ञान दर्शन'**, **'ज्ञान दीप'** नामक न्यूज बुलेटिन इसी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

इस पुस्तकालय में दैनिक-समाचार पत्र, रोजगार समाचार पत्र, मैग्जीन नियमित रूप से मँगायी जाती हैं।

इसके अलावा इस पुस्तकालय में (E-Resource Station) के नाम से अलग से सैक्शन बना हुआ है। यहाँ पर छात्र आकर Internet की सुविधा का लाभ लेते हैं। इस पुस्तकालय में छात्र-छात्राओं के तीन प्रकार से बैठने की सुविधा है। इसके फलस्वरूप विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार बैठकर पढ़ाई कर सकते हैं। इस पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जाता है। पुस्तकालय में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हुये हैं, जिससे कि छात्र-छात्राओं पर नज़र रखी जा सके। इस पुस्तकालय की देख-रेख पुस्तकालय प्रभारी मि. वीरेन्द्र सिंह द्वारा की जाती है।

C. **स्वराज्य पुस्तकालय :** यह स्वराज्य भवन में स्थित ''स्वराज्य पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय से केवल आई.टी.आई. पाठ्यक्रम की पुस्तकों का ही आदान प्रदान किया जाता है। इस पुस्तकालय से सभी विद्यार्थियों को निःशुल्क बुक बैंक की सुविधा प्रदान की जाती है। इस पुस्तकालय से विद्यार्थी निम्नांकित सेवाओं का भी लाभ उठाते हैं -

1. Open Access Services
2. Circulation Services
3. Reference Services
4. Information Display of Notification Services
5. Book Bank Services
6. On Line Public Assess Catalogue Services
7. Clipping Services
8. E-Resource Station Services

राष्ट्रीय सेवा योजना

डा. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा अनुमोदित ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ 10 वर्ष पूर्व हुआ। विश्वविद्यालय के नियमानुसार 100 छात्र-छात्राओं की एक यूनिट गठित की गई, इस यूनिट में बी.ए., बी.एस-सी. एवं बी. कॉम. के छात्र-छात्राओं से नामांकन फार्म भरवाकर एक यूनिट तैयार की गई। महाविद्यालय की संस्तुति पर डा. ललित उपाध्याय वर्ष 2014 से इस यूनिट का संचालन कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कर रहे हैं। इससे पूर्व डॉ. बी.डी. उपाध्याय व डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ ने क्रमशः इस पद पर कार्य किया। महाविद्यालय में एन. एस. एस. यूनिट के सफलतापूर्वक 10वें वर्ष में प्रवेश पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन पूरे वर्ष किया जा रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य - समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. जिस समाज में रहकर कार्य करते हैं, उसे

भली-भाँति समझना चाहिए।

2. अपने समाज की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को पहचानकर उनके समाधान में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना।

3. स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक दायित्व की भावना विकसित करना।

4. व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं के समाधान खोजने में अपनी शिक्षा का उपयोग करना।

5. नेतृत्व के गुण एवं प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण ग्रहण करना।

6. संकटकालीन एवं दैवीय आपदाओं का सामना करने की क्षमता विकसित करना।

7. राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरूपता को क्रियात्मक रूप देना।

8. दूसरों के प्रति सम्मान एवं वैज्ञानिक सोच की भावना विकसित करना और लोगों को कुरीतियों, भ्रष्टाचार, कट्टरता, जातिवाद व साम्प्रदायिकता के विरूद्ध संघर्ष के लिये प्रोत्साहित करना।

9. अनुशासन की भावना जाग्रत करते हुए सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम : राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रम होते हैं :

अ. नियमित कार्यक्रम : इस प्रकार के कार्यक्रमों में स्वयंसेवी अपने पंजीकरण वर्ष के कार्यकाल में 240 घण्टे की विविध गतिविधियों में भाग लेते हैं। अभिग्रहीत बस्ती में एक दिवसीय शिविरों के आयोजन के साथ-साथ महाविद्यालयों में नगर के अनेक सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

ब. विशेष कार्यक्रम : इस प्रकार के कार्यक्रमों में किसी ग्राम सभा में एक सात दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन किया जाता है। इसका समय-समय पर निरीक्षण विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के दूरगामी लाभ –

- विविध चयन प्रक्रियाओं में इसके अतिरिक्त अंक निर्धारित हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संचालन के लिये कॉलेज के सचिव महोदय लगातार प्रोत्साहित करते रहते हैं। प्राचार्य महोदय समय-समय पर शिविर में निरीक्षण के साथ भाग लेकर छात्र-छात्राओं को समाज सेवा के लिये प्रेरित करते हैं। इसका लाभ आने वाले वर्षों में छात्र- छात्राओं को सार्वजनिक जीवन में प्राप्त होता है।
- राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समिति का भी महाविद्यालय स्तर पर गठन किया गया है, जिनमें सदस्यों के रूप में डॉ. संध्या सेंगर, श्री अमित कुमार, डॉ. ज्योति सिंह व डॉ. सोमवीर सिंह की सक्रिय सहभागिता से सामाजिक कार्य को बेहतर तरीके से विभिन्न स्तरों पर आयोजित किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रमुख गतिविधियाँ

ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा गौरेया संरक्षण, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, ज्ञान गाँव की ओर, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, पॉलीथिन मुक्त अभियान, श्रमदान व साफ-सफाई, डिजिटल इण्डिया अभियान अन्तर्गत क्विज प्रतियोगिता का आयोजन एवं डिजिटल भुगतान जागरूकता अभियान, ज्ञान ज्योति कार्यक्रम, राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस, राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन, रक्तदान शिविर एवं संगोष्ठी, मानवाधिकार दिवस, ठिठुरती ठंड में असहायों हेतु कम्बल वितरण, वस्त्र वितरण पहल कार्यक्रम, किसान दिवस पर स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान, स्मार्ट सिटी वोटिंग अभियान एवं संगोष्ठी, मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत हस्तलेखन प्रतियोगिता, मानव श्रृंखला, मतदाता जागरूकता रेलियाँ आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

19 नवम्बर, 2016 को आयोजित रक्तदान शिविर में 78 (प्राध्यापकों व छात्र-छात्राओं) ने रक्तदान किया। एन.एस.एस. के एक दिवसीय तीन शिविरों का आयोजन 14 दिसम्बर, 2016, 19 दिसम्बर, 2016, 22 दिसम्बर, 2016 को ग्राम-पड़ियावली में किया गया। सात दिवसीय आवासीय विशेष शिविर का आयोजन 30 जनवरी, 2017 से 05 फरवरी, 2017 तक ग्राम पड़ियावली के डॉ. अम्बेडकर सामुदायिक भवन में किया गया। विशेष शिविर में बौद्धिक सत्रों के

साथ-साथ परियोजना कार्य, श्रमदान, रैलियों, समूह परिचर्चा, प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक संध्याएं, ग्राम में साफ- सफाई, सरकारी भवनों में स्वच्छता अभियान, नुक्कड़ नाटक आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों में प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता, सचिव श्री दीपक गोयल, डॉ. गौतम गोयल, ग्राम प्रधान पड़ियावली श्री यतेन्द्र कुमार, ग्राम पंचायत सचिव, प्राथमिक विद्यालय व पूर्व प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक व अध्यापकों, आशा कार्यकत्री, राशन डीलर आदि का विशेष सहयोग रहा। 18 जनवरी, 2017 को जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशन में स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत **हस्तलेखन प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसमें 05 कालिजों के 225 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस प्रतियोगिता में मेघाली गुप्ता प्रथम, कविता राजपूत द्वितीय (दोनों ज्ञान महाविद्यालय से), शिराजुद्दीन तृतीय (श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय) रहे। विजेताओं को तथा कार्यक्रम अधिकारी डा. ललित उपाध्याय को राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर मण्डलायुक्त, अलीगढ़ श्री सुभाष चन्द्र शर्मा व जिलाधिकारी हृषिकेश भास्कर याशोद ने धर्मसमाज महाविद्यालय सभागार में सम्मानित किया। 24 जनवरी, 2017 को महाविद्यालय के खेल मैदान पर मतदान 11 फरवरी, 2017 लिखकर छात्रों द्वारा **मानव श्रृंखला** बनाई गई। 25 जनवरी, 2017 को सासनी गेट चौराहे से रूसा हास्पीटल तक महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **मानव श्रृंखला** बनाकर मतदान की शपथ ली गई। 06 फरवरी, 2017 को दैनिक जागरण द्वारा आयोजित मतदाता जागरूकता रैली में स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। इस रैली का शुभारम्भ टी.वी. सीरियल **'भाभीजी घर पर हैं'** के चर्चित कलाकार मलखान व टीका के साथ मण्डलायुक्त व जिलाधिकारी ने किया। चौथा एक दिवसीय शिविर 16 फरवरी, 2017 को ग्राम पड़ियावली में प्रस्तावित है।

सम्मान :

✤ 20 फरवरी, 2016 को सचिव युवा कार्यक्रम, मंत्रालय, भारत सरकार श्री राजीव गुप्ता (IAS) ने मथुरा बी.एस. ए. कालिज में आयोजित युवा उत्सव में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय को सम्मानित किया।

✤ रक्तदान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु विश्व रक्तदान दिवस पर 14 जून, 2016 को तत्कालीन एस.एस.पी. श्री लव कुमार (IPS) ने कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय को सम्मानित किया।

✤ 1 अक्टूबर, 2016 को स्वैच्छिक रक्तदान दिवस पर प्रभारी जिलाधिकारी/ए.डी.एम. सिटी श्री श्याम बहादुर सिंह ने जिला प्रशासन की ओर से कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय को सम्मानित किया। ❑

छात्र कल्याण समिति

महाविद्यालय में विद्यार्थियां के कल्याण को संज्ञान में रखते हुए छात्र कल्याण समिति का गठन किया गया है। इस समिति की प्रभारी श्रीमती शिवानी सारस्वत को नियुक्त किया गया व डॉ. समर रजा, मौ. वाहिद, श्री वीरेन्द्र पाल सिंह व श्री रवि कुमार सदस्य हैं। इस समिति द्वारा महाविद्यालय प्रबन्धन के सहयोग से विद्यार्थियों के कल्याण हेतु समय-समय पर उनको विभिन्न सुविधायें प्रदान की जाती हैं। सत्र 2016-17 में छात्रों को निम्नांकित सुविधाएं प्रदान की गईं :

1. महाविद्यालय में प्रवेश के समय विद्यार्थियों को विषय सुनने से सम्बन्ध में मार्गदर्शन किया जाता है जिससे कि उन्हें भविष्य में आगामी पाठ्यक्रमों में उनकी रुचि के अनुसार प्रवेश लेने में सुविधा रहे।
2. प्रवेश फार्म भरते समय विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया जाता है।
3. सत्र 2016-17 में प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को दो-दो युनिफार्म व एक-एक दीवार घड़ी दी गई, साथ ही B.A., B.Sc., व B.Com. प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को Tution Fee में 30% की छूट दी गई।
4. द्वितीय व तृतीय वर्ष में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को एक-एक युनिफार्म दी गई।
5. छात्रवृत्ति का फार्म भरते समय समिति विशेष ध्यान रखती है कि सभी पात्र विद्यार्थियों के फार्म ठीक से भरे जायें ताकि उन्हें समाज कल्याण विभाग से मिलने वाली सहायता प्राप्त हो सके।

6. परीक्षा फार्म भरते समय भी विद्यार्थियों पर ध्यान दिया जाता है कि सभी के फार्म ठीक प्रकार से भरे जाएँ।

7. यदि किसी विद्यार्थी की विश्वविद्यालयी परीक्षा की अंक तालिका अथवा उसके परीक्षा परिणाम में किसी भी प्रकार की त्रुटि होने पर छात्र–कल्याण समिति द्वारा पूरी पैरवी की जाती है।

8. महाविद्यालय में (Mentor System) है, इसके अन्तर्गत एक प्राध्यापक को निश्चित संख्या में विद्यार्थियों की जिम्मेदारी दी जाती है और ये प्राध्यापक स्वयं से जुडे सभी विद्यार्थियों की हर प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में विद्यार्थियों को सहयोग देते हैं।

9. सत्र 2016–17 में महाविद्यालय द्वारा 'Digital Quiz' प्रतियोगिता के माध्यम से विजेता विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन पुरस्कार स्वरूप दिये गये।

10. महाविद्यालय में (OMR Sheet) पर आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई ताकि छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं में मददगार साबित हो सके।

11. विद्यार्थियों को रोजगार के लिए साक्षात्कार देने व एवं प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने के लिए Tips भी दिये जाते हैं।

12. विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु विभिन्न विषयों के (Guest Lecture) महाविद्यालय द्वारा आयोजित किये जाते हैं।

13. विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु उन्हें उनके द्वारा लिए गये विषयों के आधार पर शैक्षिक भ्रमण हेतु विभिन्न स्थानों पर ले जाया जाता है।

14. विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने हेतु समय–समय पर अभिप्रेरणात्मक Films दिखाई जाती हैं इस वर्ष भी विद्यार्थियों को Neerja व Dangal Film दिखाई गई।

15. महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखते हुए अभिभावक–अध्यापक संवाद का आयोजन किया गया।

16. महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को एक–एक पैन व कीरिंग वितरित किए गये। ❑

शोध एवं प्रकाशन समिति

इस समिति में शिक्षक शिक्षा संकाय अध्यक्षा डॉ. (श्रीमती) आभाकृष्ण जौहरी, सुश्री भावना सारस्वत, श्रीमती शोभा सारस्वत, वाणिज्य संकाय के प्राध्यापक एवं उप प्राचार्य डा. हीरेश गोयल, डा. समर रजा, विज्ञान संकाय की प्राध्यापिका डॉ. (श्रीमती) सुहैल अनवर तथा अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक डॉ. दीनानाथ गुप्ता व डॉ. रत्न प्रकाश हैं। शोध सम्बन्धी नवीनतम प्रकाशित सामग्री महाविद्यालय में उपलब्ध है, विद्यार्थी एवं प्राध्यापक वर्ग उपलब्ध शोध सामग्री से लाभान्वित हो रहे हैं। वर्तमान में अनेक प्राध्यापक पी–एच.डी. कर रहे हैं, जिनका समिति सहयोग कर रही है।

महाविद्यालय के निम्नांकित प्रकाशन हैं –

1. ज्ञान भव – यह शिक्षक शिक्षा संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2319 - 8419 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं।

2. ज्ञान अर्थ – यह वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र विभाग का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2349 - 1310 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं।

3. ज्ञान विज्ञान : यह विज्ञान संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल का ISSN 2349-2732 है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं।

4. ज्ञान दीप : यह कालिज की पुरातन विद्यार्थी समिति व सेवा योजन प्रकोष्ठ की संयुक्त वार्षिक पत्रिका है।

5. ज्ञान दर्शन : यह हमारे महाविद्यालय का चतुर्मासिक समाचार बुलेटिन है, इसका सीमित वितरण ज्ञान परिवार में किया जाता है। महाविद्यालय की प्रायः सभी गतिविधियों का समावेश इस समाचार बुलेटिन में किया जाता है।

6. ज्ञान पुष्प – यह महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका है। इसे महाविद्यालय का दर्पण भी कहा जाता है, इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है। ❑

अनुशासन समिति

महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये पूर्व पुलिस अधिकारी श्री आर.पी. सिंह की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी है।

इस समिति में प्राध्यापकों में से डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. एच.एस. चौधरी, डॉ. सन्ध्या सेंगर, मौ. वाहिद, श्री वीरेन्द्रपाल सिंह, श्रीलखमी चन्द, श्री रवि कुमार, श्री अखिलेश कौशिक, सुश्री भावना सारस्वत, श्रीमती इंदू सिंह हैं। महाविद्यालय के सभी कार्यक्रम अनुशासन समिति की देख-रेख में सुचारू रूप से सम्पन्न हुए हैं।

पूरे सत्र में अनुशासनहीनता की एक भी घटना नहीं हुई। इस कार्य में महाविद्यालय के शेष प्राध्यापकों ने भी अनुशासन समिति को अपेक्षित सहयोग दिया। इस अवधि में महाविद्यालय में आयोजित हुई विश्वविद्यालयी व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ-साथ वार्षिकोत्सव जैसे बड़े कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने भी अपने अनुशासित होने का पूरा परिचय दिया। ❑

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा सन् 2012 में यह योजना महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल की माताजी एवं महाविद्यालय के संस्थापक डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल की धर्मपत्नी श्रीमती स्वराज्य लता गोयल की स्मृति में शुरू की गई। इस योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय के निकटवर्ती ग्राम-बढ़ौली फतेह खाँ को गोद लिया गया।

बढ़ौली फतेह खाँ ग्राम की जो लड़की हमारे महाविद्यालय में बी.ए. एवं बी.एस-सी. (जेड.बी.सी.) में प्रवेश लेती है, उसे शिक्षण शुल्क में 50% प्रतिशत की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। इस गाँव की अब तक 35 लड़कियों को 50% शिक्षणशुल्क छात्रवृत्ति के रूप में दी जा चुकी है तथा जो लड़की हमारे महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है या शिक्षा प्राप्त कर चुकी है, उन्हें उनके विवाह के सुअवसर पर एक सिलाई मशीन उपहार स्वरूप दी जाती है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक कुल 32 सिलाई मशीनें भेंट की जा चुकी हैं। ❑

स्वराज्य ज्ञान योजना

इस योजना का शुभारम्भ सन् 2013 में महाविद्यालय द्वारा किया गया। इस योजना के अन्तर्गत विकास खण्ड लोधा एवं धनीपुर के 14 ग्रामों को गोद लिया गया जो निम्नांकित हैं -

1. बढ़ौली फतेह खाँ
2. पड़ियावली
3. मुकन्दपुर
4. मईनाथ
5. न्हौटी
6. मडराक
7. सराय हर नारायन
8. सराय बुर्ज
9. मन्दिर का नगला
10. हाजीपुर चौहट्टा
11. हाजीपुर फतेह खाँ
12. चिरौलिया दाउद खाँ
13. ईशनपुर
14. कमालपुर।

उपर्युक्त 14 ग्रामों के ग्रामवासियों के साथ उनके ग्राम में सामाजिक सरोकार की टीम ने बैठकें की। बैठकों में ग्रामीणों तथा ग्राम प्रधानों को विकास योजनाओं के बारे में बताया गया। इन गाँवों की जो भी लड़की बी.ए. तथा बी.एस.सी. (जेड.बी.सी.) में हमारे महाविद्यालय में प्रवेश लेती है, उन्हें शिक्षण शुल्क में 50% की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। अब तक चौदह ग्रामों की 76 छात्राएँ इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित हो चुकी हैं। उपर्युक्त चौदह ग्रामों से ज्ञान निजी आई.टी.आई. में प्रवेश लेने वाले लड़के तथा लड़कियों को पूरे शुल्क में 4,000 रु. की छूट छात्रवृति के रूप में प्रदान की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत उक्त चौदह ग्रामों से कुल 105 छात्र महाविद्यलाय के सहयोगी संस्थान ज्ञान निजी आई.टी.आई. में प्रवेश लेकर लाभान्वित हो चुके हैं।

जीव जन्तु रक्षा अभियान : 15 मार्च, 2016 को महाविद्यालय परिसर के सभी भवनों में पक्षियों हेतु पानी पीने के पात्रों को रखा गया तथा कुछ लोगों ने पानी भरने की जिम्मेदारी भी ली। चौदह गाँवों में जाकर जीव जन्तु रक्षा अभियान व गौरेया संरक्षण के बारे में जागरूक किया गया। इस अभियान में प्रबन्धक मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता, डॉ. हीरेश गोयल, डॉ. ललित उपाध्याय आदि उपस्थित रहे।

वृक्षारोपण : 11 जुलाई, 2016 को महाविद्यालय में सभी संकायों के छात्र-छात्राओं के द्वारा अलग-अलग चरणों में वृक्षारोपण कराया गया। महाविद्यालय के

सचिव श्री दीपक गोयल, प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता ने कनेर के पौधे लगाकर वृक्षारोपण प्रारम्भ किया तथा बाद में क्रमशः नीम, अमलतास, तुलसी, पाम ट्री के पौधे लगाये गये। इस पुनीत कार्य में महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने भी सहयोग किया।

ज्ञान ज्योति कार्यक्रम : दीपावली के अवसर पर 27 अक्टूबर, 2016 को महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे 14 गाँवों के छात्र-छात्राओं को सचिव महोदय द्वारा प्रति गाँव 300 दीये, तेल बाती, ज्ञान ज्योति कार्यक्रम के अन्तर्गत दिये गये। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अनिल सारस्वत (विवेकानन्द कालेज ऑफ मैनेजमेंट) ने भाग लिया। मुख्य अतिथि ने प्रकाश एवं दीये जलाने के महत्व के बारे में जानकारी दी। गाँव के छात्र-छात्राएँ दीयों को दीपावली की रात को सरकारी भवनों, स्कूलों तथा जरूरतमंद ग्रामीणों के घर पर जलाते हैं ताकि इस प्रकाश पर्व पर किसी भी घर पर अँधेरा न रहे।

पहल कार्यक्रम : सामाजिक सरोकार समिति के सदस्य, महाविद्यालय में सेवारत शिक्षक, शिक्षणेत्तर वर्ग तथा विद्यार्थियों के सहयोग से गर्म कपड़े एकत्र किए गए। 3 दिसम्बर, 2016 को विद्यार्थियों के सहयोग से गोद लिये गाँवों के जरूरत मन्द व्यक्तियों तथा इन गाँवों के क्षेत्र में भट्टे आदि पर कार्य करने वाले मजदूरों को वितरित किये गये। इससे एक ओर लोगों के पास रखे अनावश्यक कपड़ों का सदुपयोग होता है, दूसरी ओर जरूरतमन्द लोगों की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तथा इस कार्य में लगे विद्यार्थियों आदि को भी आत्म सन्तुष्टि मिलती है।

कम्बल वितरण कार्यक्रम : 16 दिसम्बर, 16 को कम्बल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत चौदह गाँवों के अतिनिर्धन पाँच-पाँच व्यक्तियों को शीत ऋृतु के दौरान एक-एक कम्बल इस योजना के अन्तर्गत दिये जाते है। इस प्रकार प्रतिवर्ष 70 कम्बल उपहार में दिय जाते हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बी.पी. सिंह थे। सचिव श्री दीपक गोयल, श्री गौतम गोयल, श्रीमती रितिका गोयल, प्रबन्धक श्री मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता, उपप्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल एवं सभी गांव के प्रधान इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में ग्राम प्रधान की संस्तुति पर एक-एक कम्बल मुख्य अतिथि एवं सचिव द्वारा भेंट किये गये। इस कार्यक्रम में चौदह गाँवों की लाभन्वित छात्राओं ने भी भाग लिया।

डिजिटल इण्डिया क्विज़ प्रतियोगिता : डिजिटल इण्डिया क्विज़ कार्यक्रम के अन्तर्गत विजेताओं को सैमसंग के स्मार्ट फोन वितरित किये गये। क्विज प्रतियोगिता में कुल ग्यारह छात्र-छात्राओं को मोबाइल फोन वितरित किये गये।

पी.एस.आर.आई. नई दिल्ली के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर : पी.एस.आर.आई. के सहयोग से ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति ने दो निःशुल्क कैम्प महाविद्यालय में लगाये। शिविर में चौदह गाँवों के ग्रामीणों के अलावा अन्य क्षेत्रों से भी लोग चैकअप कराने आये। शिविर में डायबिटीज, हड्डी की जाँच, ब्लड प्रेशर आदि की निःशुल्क जाँच कर चिकित्सकों ने परामर्श दिया।

सहभोज कार्यक्रम : 2 जनवरी, 2017 को ज्ञान भवन की संतोष वाटिका में सहभोज कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ, सभी संकायों के प्राध्यापक स्वरुचि भोजन अपने-अपने घर से लाये। कार्यक्रम में सभी ने एक-दूसरे के भोजन का लुफ्त उठाया। प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता ने बताया कि सहभोज कार्यक्रम से जाति प्रथा से मुक्ति मिलती है तथा आपसी प्रेम की भावना बढ़ती है। कार्यक्रम में सचिव श्री दीपक गोयल तथा प्रबन्धक श्री मनोज यादव भी उपस्थित रहे।

❑

अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति कल्याण समिति

अनुसूचित जाति-अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारे महाविद्यालय में अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति कल्याण समिति कार्यरत है जिसके प्रभारी श्री लखमी चन्द्र बी. एड. विभाग तथा अन्य सदस्यों में डॉ. अमरीन सिद्दीकी (विज्ञान संकाय), श्री रवि कुमार, शिक्षक शिक्षा विभाग (बी.टी.सी.) व श्री कृष्णदेव सिंह, शिक्षक शिक्षा विभाग (बी.एड.) हैं। हमारे महाविद्यालय में लगभग 40% विद्यार्थी इसी समुदाय से हैं। महाविद्यालय में Mentor

System है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक प्राध्यापक को उसके संकाय के निश्चित संख्या में विद्यार्थियों पर वर्ष भर विशेष ध्यान देने के लिए जिम्मेदारी दी जाती है। ये प्राध्यापक समिति के उद्देश्यों के विषय में सम्बंधित विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखते हैं, और उन्हें समय-समय पर आवश्यक परामर्श देते हैं तथा समिति समय पर विद्यार्थियों को समाज कल्याण विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली शुक्ल प्रतिपूर्ति व छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु प्रेरित कर सहयोग करती है, साथ ही इन विद्यार्थियों को जातिगत हीनता से ऊपर लाकर उनको उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करना, विद्यार्थियों को आशान्वित बनाने हेतु उनके भविष्य की प्रगति के लिए उत्तरोत्तर प्रयास करना, महाविद्यालय द्वारा इन विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली आवासीय सुविधा मुहैया कराना, जिससे महाविद्यालय में समानता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाया जा सके। ❑

रोजगार सलाहकार समिति

हमारे महाविद्यालय में विद्यार्थियों को अध्ययन कार्य करते हुए उन्हें रोजगार प्राप्त करने में सहायता प्रदान करने हेतु रोजगार एवं सलाहकार समिति कार्यरत् है, जिसके प्रभारी श्री गिर्राज किशोर (बी.एड. प्राध्यापक) एवं सदस्य डॉ. हीरेश गोयल (प्राध्यापक वाणिज्य संकाय, सह उप-प्राचार्य), श्री रवि कुमार (प्राध्यापक बी.टी.सी. विभाग), कु. आस्था गुप्ता (प्राध्यापिका बी.बी.ए. विभाग) तथा मार्ग दर्शक व विशेष सलाहकार श्री दीपक गोयल (सचिव), श्री मनोज यादव (प्रबन्धक), तथा डॉ. वाई. के. गुप्ता (प्राचार्य) हैं।

समिति द्वारा महाविद्यालय के विद्यार्थियों को प्रभावशाली रिज्यूम बनाना, व्यक्तित्व विकास, साक्षात्कार के लिए तैयारी आदि विषयों पर दिशा निर्देश दिए जाते हैं।

प्रतिवर्ष महाविद्यालय के विद्यार्थी सरकारी एवं प्राइवेट सेक्टरों में रोजगार प्राप्त करते हैं। वर्तमान सत्र में 48 विद्यार्थियों का चयन विभिन्न नौकरियों के लिए किया गया है। ❑

आन्तरिक गुणवत्ता मूल्याँकन समिति

महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि करने हेतु परामर्श तथा समय-समय पर उनके कार्यों का मूल्यांकन करने हेतु, आन्तरिक गुणवत्ता मूल्याँकन समिति कार्यरत है, जिसके प्रभारी गिर्राज किशोर (बी.एड. प्राध्यापक) एवं सदस्य डॉ. गौतम गोयल (प्रबन्ध समिति), डॉ. असलूब अहमद (प्रबन्ध समिति), डॉ. डी. एन. गुप्ता (कला संकाय प्राध्यापक), डॉ. संतोष शर्मा (विज्ञान संकाय प्राध्यापक), श्रीमती वर्धा शर्मा (बी.एड. प्राध्यापिका), मार्ग दर्शक तथा विशेष सलाहकार श्री दीपक गोयल (सचिव), श्री मनोज यादव (प्रबन्धक) तथा डॉ. वाई. के. गुप्ता (प्राचार्य) हैं।

इस समिति के द्वारा शिक्षकों से स्व मूल्याँकन प्रपत्र को पूर्ण कराया जाता है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक अपनी शैक्षिक योग्यता का वर्णन करते हुए अपनी शैक्षिक उपलब्धियों का वर्णन करते हैं। तत्पश्चात् समिति प्रभारी/सदस्य उनके शिक्षण कार्य का मूल्याँकन करते हैं। शिक्षण सत्र के अन्त में उनके द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों से उनके शिक्षण कार्य पृष्ठपोषण प्रपत्रों को पूर्ण कराया जाता है, जिससे बाल केन्द्रित शिक्षा का महत्व दिया जा सके, साथ ही शिक्षकों के शिक्षण कार्य में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाता है। ❑

खेल विभाग

शिक्षा में खेल का भी बहुत महत्त्व है क्योंकि बिना खेल के जीवन अधूरा माना गया है। खेल खेलने की प्रथा आदि काल से चली आ रही है। किसी भी विद्यार्थी के लिये खेल का उसके जीवन में बहुत ही उपयोग होता है। शरीर को तनाव रहित रखने के लिये खेल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि छात्र जीवन भी बहुत तनावों से भरा होता है। खेलने से वह अपने तनाव को कम कर सकता है। महाविद्यालय द्वारा इसी क्रम में इसको ध्यान में रखते हुये इन्डोर व आउटडोर खेलों की व्यवस्था की गयी है ताकि विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकें।

खेलों के महत्व को देखते हुए डॉ. भीमराव

अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा भी अब नवीनतम पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा के प्रश्नपत्रों को प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु अनिवार्य किया गया है जिससे कि उनकी खेल के प्रति भी रूचि बढे।

महाविद्यालय द्वारा खेलों में शतरंज, कैरम, खो–खो, भाला फेंक, रस्साकसी, चक्का फेंक, गोला फेंक, लम्बी कूद, दौड़, वालीवाल, क्रिकेट, दौड़ आदि खेलों का आयोजन समय–समय पर कराया जाता है। ❑

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का विशेष अध्ययन केन्द्र

इंडक्शन मीटिंग : दिनांक 27–02–2015 को ज्ञान महाविद्यालय के सेमीनार हॉल में इग्नू के क्षेत्रीय केन्द्र अलीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अमित चतुर्वेदी तथा सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बी.पी. सिंह ने महाविद्यालय स्थित इग्नू के विशेष अध्ययन केन्द्र में CIG, CTE तथा CES कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थी, केन्द्र के समन्वयक तथा काउंसलर्स के साथ इंडक्शन मीटिंग का आयोजन किया गया। डॉ. बी.पी. सिंह ने बताया, 'इग्नू केन्द्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है, नामांकन की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। जेल, विश्वविद्यालय तथा विभिन्न महाविद्यालयों में इग्नू ने अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है।, विद्यार्थियों द्वारा दी गई मुफ्त पाठ्य सामग्री समझकर पढ़ने तथा असाइनमेंट लिखने के तरीके बताये और स्पष्ट किया कि इग्नू द्वारा आयोजित परीक्षायें नकल विहीन होती हैं।' डॉ. अमित चतुर्वेदी ने कहा कि इग्नू के केन्द्र 50 से अधिक देशों में है। उन्होंने यह भी बताया कि इग्नू ने अपने ''रीचिंग टू अनरीच्ड'' कार्यक्रमों के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में भी अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है। कार्यक्रम विशेष की परीक्षा इग्नू के सभी केन्द्रों पर एक साथ होती है। यहाँ तक कि करफ्यू की स्थिति में भी परीक्षाएं स्थगित नहीं होती हैं।

ज्ञान महाविद्यालय स्थित इग्नू का अध्ययन केन्द्र : इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्व विद्यालय) के अध्ययन केन्द्र 47036 डी का विधिवत शुभारम्भ दिनांक 20 मई 2015 को इग्नू के क्षेत्रीय केन्द्र अलीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक डॉ.अमित चतुर्वेदी, सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बी. पी. सिंह, डॉ. खुशनूदा नीलोफर के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के विभिन्न शिक्षाविदों के साथ– साथ महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए अलीगढ़ जनपद के 14 गाँव के ग्राम प्रधानों ने ज्ञान महाविद्यालय में शैक्षिक रूप से पिछड़े तथा ग्रामीण किसानों के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र खुलने पर हर्ष व्यक्त किया। 14 गाँव के प्रधानों ने कहा कि ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में इग्नू का अध्ययन केन्द्र खुलने से क्षेत्र के सामाजिक विकास में मदद मिलेगी। इससे समाज के सभी वर्गों को उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। प्रबुद्ध प्रधानों ने कहा कि शिक्षित समाज से ही समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। ग्राम प्रधानों ने इस बात पर भी जोर दिया कि अब गाँव का किसान, मजदूर तथा कामकाजी महिलाओं को भी घर बैठे पढ़ने का अवसर मिलेगा। इग्नू के अध्ययन केन्द्र खुलने से किसान जैविक खेती तथा दूध उत्पादन तथा दलहन सम्बन्धी रोजगार परक कोर्स कर सकते हैं। इग्न विश्व का एकमात्र विशालतम् विश्वविद्यालय है जोकि जन–जन के विश्व विद्यालय के नाम से जाना जाता है। ❑

हैल्थ केयर सेन्टर

महाविद्यायल में एक 'हैल्थ केयर सेन्टर' है, जिसमें एक बैड, ड्रिप स्टैण्ड, टेबल और अन्य आवश्यक सामान है। इस कार्य के लिए एक चिकित्सा समिति का गठन किया गया, जिसकी प्रभारी सुश्री भावना सारस्वत (बी. एड. विभाग) और अन्य संकाय के सदस्य हैं– डॉ. ज्योति सिंह (विज्ञान विभाग), डॉ. संध्या सैंगर (कॉमर्स विभाग), श्रीमती इन्दु सिंह (कला विभाग) और छात्र सदस्य देवेन्द्र सिंह और कु. मेघाली हैं। समिति का उद्देश्य महाविद्यालय के किसी भी सदस्य को महाविद्यालय के अन्दर आवश्यकता के अनुसार प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराना है।

अब तक यह समिति इस सत्र (2016–17) में लगभग 100 सदस्यों को प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध करा चुकी है। समिति के कार्य में महाविद्यालय के छात्रों और प्राध्यापकों का सहयोग रहता है। ❑

ज्ञान महिला कल्याण एवं शिकायत प्रकोष्ठ

महाविद्यालय में सहशिक्षा है। कुल नामांकित विद्यार्थियों में छात्रायें 60% प्रतिशत से अधिक हैं तथा महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। शिक्षक शिक्षा विभाग की अध्यक्षा डॉ. (श्रीमती) आभाकृष्ण जौहरी की अध्यक्षता में ज्ञान महिला कल्याण एवं शिकायत प्रकोष्ठ सक्रिय है। शिक्षक शिक्षा संकाय की प्राध्यापिका श्रीमती शोभा सारस्वत एवं श्रीमती वर्धा शर्मा, विज्ञान संकाय की डॉ. सुहैल अनवर तथा कला संकाय की डॉ. बीना अग्रवाल इस प्रकोष्ठ की सदस्य हैं।

यह प्रकोष्ठ प्राध्यापिका, महिला कर्मचारी तथा छात्राओं के हित के लिए कार्य कर रहा है। प्रकोष्ठ ने महिला उत्पीड़न पर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया।

इस गोष्ठी में श्रीमती एम.डी. तौमर प्रभारी निरीक्षक, जिला महिला थाना, अलीगढ़ ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया।

इस गोष्ठी में महाविद्यालय की प्राध्यापिका, महिला कर्मचारी तथा छात्राओं को महिलाओं के कर्तव्य, अधिकारों तथा उनके साथ होने वाली गैर सामाजिक हरकतों सम्बन्धी कानूनों आदि के बारे में जानकारी दी गयी। वर्ष के दौरान छात्राओं से कुछ असंज्ञेय मौखिक शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनका आपसी चर्चा से समिति सदस्यों द्वारा समाधान कर लिया गया। कुल मिलाकर शैक्षिक सत्र के दौरान कोई संज्ञेय शिकायत प्राप्त नहीं हुई। ❑

साहित्यिक समिति

महाविद्यालय में एक साहित्यिक समिति भी छात्र-छात्राओं के मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए कार्य कर रही है। इस साहित्यिक समिति द्वारा छात्रों को स्वरचित कविता, निबंध, वाद-विवाद और अन्य प्रतियोगिताओं के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस साहित्यिक समिति का गठन कॉलिज के प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें सर्व सम्मति से हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह को प्रभारी नियुक्त किया गया और इस समिति के सदस्यों में सुश्री भावना सारस्वत को (सह-प्रभारी) और श्रीमती शोभा सारस्वत, श्री अखिलेश कौशिक, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. दुर्गेश शर्मा को सदस्य बनाया गया।

साहित्यिक समिति द्वारा महाविद्यालय में 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' और 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' एवं शिखर संस्था द्वारा दिनांक 30/09/2016 को महात्मा गांधी एवं लालबहादुर शास्त्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी (सेमीनार) एवं स्वराज सभागार में **कवि सम्मेलन** आयोजित किया गया।

साहित्यिक समिति के प्रभारी डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह ने भी काव्य पाठ किया अन्य कवियों में अशोक 'अंजुम', हरीश बेताब, श्रीमती ज्योत्सना चौहान आदि ने भी काव्य पाठ किया। ❑

सांस्कृतिक समिति

इस समिति में शिक्षक शिक्षा संकाय की प्राध्यापिका डॉ. मुक्ता वार्ष्णेय (प्रभारी) श्रीमती वर्धा शर्मा, सुश्री कविता चौधरी, वाणिज्य संकाय की प्राध्यापिका डॉ. संध्या सेंगर, हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. बीना अग्रवाल, बी.टी.सी. संकाय की प्राध्यापिका श्रीमती शोभा सारस्वत एवं सुश्री सविता गुप्ता (सदस्य) हैं।

सांस्कृतिक शब्द 'संस्कृति' से बना है संस्कृति से हमारा तात्पर्य छात्र-छात्राओं को भारतीय संस्कृति से जोड़ना है। सांस्कृतिक समिति का उद्देश्य संस्कृति को जीवंत बनाने के साथ-साथ छात्र-छात्राओं की कलात्मक प्रतिभा को निखारना है। सांस्कृतिक समिति के कार्यक्रमों की श्रृंखला में सर्वप्रथम महाविद्यालय में मेंहदी व रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में अनेक छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये। स्वतन्त्रता दिवस पर ध्वजारोहण के उपरान्त सरस्वती सभागार में एकल व सामूहिक प्रस्तुतियों के बीच अनेक विद्यार्थियों ने देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत गीत प्रस्तुति किये। बी.एड. के प्रतिभा परिचय समारोह में विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। संस्थापना दिवस के अवसर पर अनेक बेहतरीन प्रस्तुतियों द्वारा विद्यार्थियों ने चार-चाँद लगा दिये। इस अवसर पर

सभी प्रस्तुतियों की वोटिंग द्वारा गणना की गई, जिसमें आई.टी.आई के छात्रों का समूह प्रथम, गणेश वंदना (बी. एड. द्वितीय) की छात्राएँ द्वितीय व बी.एड. के छात्रों ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बी.टी.सी. के विद्यार्थियों का प्रतिभा परिचय एवं विदाई समारोह कार्यक्रम में अनेक गीत व नृत्य प्रस्तुतियों ने समां बाँध दिया। कला एवं हस्त-शिल्प प्रदर्शनी में छात्राओं ने चुनिंदा प्रस्तुतियाँ कर मन मोह लिया तथा इस अवसर पर छात्राओं ने रंगोली बनाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

कम्बल वितरण कार्यक्रम में भी छात्राओं ने सरस्वती वंदना की मन मोहक प्रस्तुति दी। सहभोज कार्यक्रम में गीत-संगीत की स्वर लहरी के मध्य नये वर्ष का स्वागत किया गया।

दंगल फिल्म के माध्यम से छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन मिला। डी.एस. कालेज में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में ॠतु सिंह, प्रिया सिंह व पुनीता कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर अनेक देश भक्ति गीतों व नृत्य प्रस्तुतियों का आकर्षण रहा। सभी कार्यक्रमों के अतिरिक्त महाविद्यालय में समय-समय होने वाले अन्य कार्यक्रमों में भी सांस्कृतिक समिति का पूर्ण सहयोग रहता है। ❑

ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट

युवा वर्ग को सही दिशा देने, उन्हें अपने जीवन में आगे बढ़ने, शैक्षिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ टैक्नीकल ट्रेनिंग तथा रोजगार उन्मुख कार्यक्रम देने के उद्देश्य से ज्ञान महाविद्यालय में एक ''ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट'' की स्थापना श्री दीपक गोयल जी चेयरमेन ज्ञान महाविद्यालय के मार्ग दर्शन में हुई। जिसके अन्तर्गत आने वाले विभिन्न कोर्स हैं –

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के विभिन्न कोर्स,
2. नेशनल स्किल डबलपमेण्ट कॉरपोरेशन (NSDC) के कोर्स,
3. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलैक्ट्रोनिक्स इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी (NIELIT) के कोर्स,
4. विभिन्न प्रकार के वोकेशनल कोर्स,
5. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये उचित मार्ग दर्शन व व्यक्तित्व विकास के कोर्स ।

ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट के तत्वावधान में 19 सितम्बर, 2016 को महाविद्यालय परिसर में **''व्यक्तित्व विकास व पब्लिक स्पीकिंग''** पर सेमीनार का आयोजन किया गया। बी.टी.सी., बी.एड., बी.ए. तथा बी.कॉम. के छात्रों के समक्ष नोएडा से बी. लिंग्वा के इंटरनेशनल ट्रेनर श्री मुहम्मद नासिर तथा श्री नितिन कुमार ने प्रश्नोत्तर के रूप में चर्चा करके, **''व्यक्तित्व विकास तथा पब्लिक स्पीकिंग''** विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

21 सितम्बर, 2016 को राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम के तकनीकी सेवा केन्द्र के ट्रेनिंग विशेषज्ञ श्री अब्दुल जब्बार द्वारा रोजगारोन्मुख सम्बन्धी प्रशिक्षण जानकारी के साथ-साथ **'व्यक्तित्व के विकास'** रोजगार लेने व स्वयं रोजगार शुरू कर-रोजगार देने के अवसर बढ़ाने की बात समझायी। श्री जब्बार ने सभी छात्रों की शंकाओं का समाधान किया। डॉ. डी. के. अस्थाना ने अतिथि का आभार व्यक्त किया।

5 अक्टूबर, 2016 को सरस्वती सभागार में **''व्यक्तित्व विकास व अंग्रेजी दक्षता''** पर एक संगोष्ठी का आयोजन बी.ए., बी.कॉम. तथा बी.एस-सी. के छात्रों के लाभार्थ किया गया। डॉ. डी. के. अस्थाना ने संगोष्ठी के उद्देश्य व व्यावसायिकता के बारे में बताया। इसके अन्तर्गत सी.सी.सी. कम्प्यूटर कोर्स व इग्नू के तमाम कोर्सों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। दक्ष प्रशिक्षिका श्रीमती रिचा बंसल ने शिक्षा के पश्चात् व्यक्तित्व विकास हेतु -आत्मविश्वास, बेहतर संवाद, व्यवहार कुशलता व सामाजिक ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया जो कि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा व साक्षात्कार की सफलता के लिये अति आवश्यक है। श्री कैलाश उपाध्याय ट्रेनर व श्रीमती रिचा बंसल ने प्रतिभागियों को समुचित उत्तर देकर संतुष्ट किया। प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता व डॉ. डी.के. अस्थाना ने विशेषज्ञों का आभार व्यक्त किया।

21 नवम्बर, 2016 को "Personality grooming and English Public Speaking" कोर्स

का प्रशिक्षण शुरू किया गया। प्रमुख प्रशिक्षक श्री कैलाश उपाध्याय ने विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम की उपयोगिता बताने के साथ-साथ लिखने व बोलने के लिये शब्दों का सही चयन तथा अपने विषय का गहरा ज्ञान होना आवश्यक बताया। डॉ. डी.के. अस्थाना ने छात्रों का उत्साह बढ़ाते हुये छात्रों को कोर्स शुरू करने पर बधाई दी।

26 नवम्बर, 2016 को ''स्टूडेन्टिंग ऐरा'' के श्री आर. डी. गुप्ता तथा श्रीमती सरना ने कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये एक वेबसाइड "www.studentingera.com" की जानकारी विस्तार से दी। जिसमें छात्र-छात्राओं को 17 प्रकार के लाभ व सेवायें मिल सकती हैं। विद्यार्थियों को PO, NET आदि की तैयारी, साक्षात्कार व शिक्षा ऋण आदि की समस्त जानकारी एक ही जगह पर मिल सकेगी। आई. टी. आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल व ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. डी.के. अस्थाना ने धन्यवाद देते हुये कहा कि बदलते समय में यह नयी APP छात्रों के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

01 दिसम्बर, 2016 को पुनः हुई संगोष्ठी में ''स्टूडेन्टिंग ऐरा'' के श्री अभिषेक जी तथा श्रीमती रुचिका शर्मा ने बताया कि डिजीटल इण्डिया अपनाने से भारत विश्व से जुड़ रहा है व अपनी web site पर उपलब्ध समस्त जानकारियों के बारे में विस्तार से समझाया। काफी छात्रों ने अपना रजिस्ट्रेशन भी कराया।

NIELIT के अन्तर्गत कम्प्यूटर कोर्स, सी.सी.सी. का आरम्भ 20 नवम्बर, 2016 से कराया गया था जिसमें दो माह शिक्षण कार्य के बाद परीक्षा में छात्रों को शामिल होना है। सी.सी.सी. कोर्स का श्रेष्ठ प्रबन्धन तथा शिक्षण श्री अखिलेश कौशिक जी द्वारा हो रहा है।

''फैशन डिजाइनिंग'' की बी.एड. व बी.टी.सी. की छात्राओं को जानकारी देने के लिये एक कार्यक्रम व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बी.एड. डिपार्टमेण्ट की विभागाध्यक्षा श्रीमती आभा कृष्ण जौहरी ने छात्राओं से अतिथि का परिचय कराया- **''हेयर स्टाईल''** बनाने का प्रदर्शन भी छात्राओं के सामने किया गया। इसके अतिरिक्त ज्ञान वोकशनल इंस्टीट्यूट के अन्तर्गत बेसिक मेकअप करने, साड़ी ड्रेसिंग, पेडीक्योर, थेड्रिंग आदि कोर्स प्रारम्भ होंगे जो छात्राओं की योग्यता बढ़ाने के साथ-साथ स्वयं आत्मनिर्भर होने की दिशा में एक अच्छा कदम होगा।

इग्नू के विभिन्न कोर्सों के विषय में छात्रों को समय-समय पर विभिन्न आयोजनों में जाकर उन्हें विस्तार से जानकारी दी गयी। अलीगढ़ जिले के पी.एम. कॉलेज, विभिन्न इण्टर कॉलेज, हरे-कृष्ण कॉलेज, खैर में श्री आर. के. शर्मा (समन्वयक) तथा विवेकानन्द कॉलेज ऑफ एजूकेशन में डॉ. डी.के. अस्थाना ने भी सेमीनार कर जानकारी दी। इनके जुलाई 2016 में जहाँ 23 छात्रों ने प्रवेश लिया वहीं जनवरी 2017 में -विभिन्न कोर्सों में 110 छात्रों ने प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण की। इस कार्य में बी.एड. व बी.टी.सी. विभाग के साथ में श्रीमती बीना अग्रवाल व श्री गिर्राज किशोर जी का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट के अन्तर्गत ज्ञान आई. टी.आई. में **'प्रधानमंत्री कौशल विकास कार्यक्रम'** के अन्तर्गत अभी प्रारम्भ में 3 कोर्स संचालित किये जा रहे हैं -

1. **रिटेल सेल्स एसोशिएट**
2. **सी.सी.टी.वी. इंस्टोलेशन टेक्नीशियन**
3. **डाक्यूमेण्टेशन असिस्टेन्ट कोर्स**

ये कोर्स बगैर किसी भी शुल्क के, शुरू होने जा रहे हैं, जिसमें छात्रों को गहन ट्रेनिंग के बाद, परीक्षा पास करने के उपरांत एक **''प्रमाण-पत्र''** मिलेगा जिससे उन्हें अपना कार्य करने के लिये बैंक से लोन भी मिल सकेगा या उन्हें रोजगार दिलाने में मदद की जायेगी। इसमें दिनांक 01 फरवरी 2017 से प्रवेश शुरू हो रहे हैं।

"Personality grooming and English Public Speaking" का कोर्स सफलता पूर्वक पूरे करने वाले छात्रों को योग्यता प्रमाण-पत्र महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में 13 फरवरी, 2017 को प्रदान किये जायेंगे, जिससे प्रतिभोगियों का उत्साहवर्धन होगा और वे जीवन में अपने लक्ष्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त कर सकेंगे।

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,
आगरा रोड, अलीगढ़

आवश्यकता (Importance)

वर्तमान युग तकनीकी विकास का युग है। पिछले बीस वर्षों में तकनीकी विकास अत्यधिक तेज गति से हुआ है। आधारभूत संरचना (इन्फास्ट्रक्चर), बिजली, सड़क आदि सुदूर गांवों तक पहुँचे हैं। इससे शहरी लोगों के साथ ग्रामीणों की आय तथा आवश्यकताओं में वृद्धि हुई और तकनीकी विकास व मशीनीकरण आदि के लाभ के कारण उनके रहन–सहन के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक भाग में व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता में काफी वृद्धि हुई है।

इस समय भारत सरकार, भारत के औद्योगिक विकास के लिए पूर्णतः प्रयासरत है। इसके अन्तर्गत कौशल विकास कार्य पर सरकार पूर्णतः जोर दे रही है क्योंकि वर्तमान में प्रशिक्षित एवं कुशल तकनीशियनों (प्राविधिज्ञों) की मांग सरकारी, अर्द्ध सरकारी, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ तथा निजी क्षेत्र में प्रचुर संख्या में है। साथ ही स्वरोजगार के लिए भी इनकी काफी आवश्यकता है। प्रशिक्षित एवं कुशल तकनीशियन अल्प निवेश (Small Investment) कर अपनी आजीविका प्राप्त कर सकते हैं। स्वरोजगार शुरू करने के लिए सरकार संस्थागत ऋण तथा अनुदान भी उपलब्ध करा रही है।

व्यावसायिक शिक्षा के लिए सरकार ने अनेक पाठ्यक्रम शुरू किये हैं औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था (आई.टी. आई.) तकनीकी शिक्षा (व्यावसायिक शिक्षा) का प्रथम सोपान है। इसमें प्रशिक्षित होकर व्यक्ति आसानी से सरकारी, अर्द्धसरकारी, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा निजी क्षेत्र में रोजगार अथवा स्वरोजगार भी प्राप्त कर सकता है।

ज्ञान आई.टी.आई. NCVT, श्रम मंत्रालय भारत सरकार से मान्यता प्राप्त संस्था है इसका प्रमाण–पत्र सरकारी अर्द्ध–सरकारी तथा निजी क्षेत्र के सभी प्रकार के रोजगार के लिए वैध है।

स्थापना (Establishment)

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ज्ञान आई.टी. आई.) का शुभारम्भ 25 सितम्बर, 2012 को फिटर तथा इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय में प्रवेश के साथ हुआ था।

स्थित (Location) : ज्ञान आई.टी.आई. अलीगढ़ – आगरा रोड़ पर अलीगढ़ रेलवे जंक्शन से लगभग 6 किमी. दूरी पर स्थित है। आने–जाने के लिए बस सुविधा एवं थ्री व्हीलर की सुविधा उपलब्ध है।

उपलब्ध व्यवसाय (ट्रेड)

संस्थान में मुख्यतः दो व्यवसाय (Trade) उपलब्ध हैं, जिसमें फिटर एवं इलैक्ट्रीशियन ट्रेड सम्मिलित है ये दोनों ही व्यवसाय NCVT, New Delhi से मान्यता प्राप्त हैं। दोनों व्यवसाय हेतु प्रशिक्षण की अवधि 2 वर्ष (4 Semester) है तथा प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता मान्यता प्राप्त बोर्ड या संस्था से गणित एवं विज्ञान विषय सहित हाईस्कूल पास अथवा समकक्ष योग्यता अनिवार्य है।

इलैक्ट्रीशियन हेतु सम्भावित अवसर : इलैक्ट्रीशियन भवनों की वायरिंग, स्थैतिक मशीनों एव उनसे सम्बन्धित उपकरणों की वायरिंग, नये उपकरणों की संस्थापना तथा पहले से लगे इन्फ्रास्टक्चर की मरम्मत एवं रखरखाव आदि का कार्य करता है। अतः एक इलैक्ट्रीशियन के लिए भवन निर्माण कम्पनियाँ, उत्पादक कम्पनियाँ, विद्युत उत्पादन, विद्युत वितरण कम्पनियों, रेलवे एयरलाइन्स, डिफेन्स, जहाज निर्माण आदि में कार्यरत होने के प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं।

फिटर हेतु सम्भावित अवसर : इस व्यवसाय के अन्तर्गत एक कुशल फिटर विभिन्न प्रकार के यन्त्रों, उपयंत्रों, मशीनरी जैसे –ट्रैक्टर, मोटर साईकिल, प्रिंटिंग मशीन आदि के कल पुर्जों का निमार्ण करना तथा उन्हें फिट करना, वैल्डिंग करना, ग्राइडिंग करना, सीट को विभिन्न आकृतियों में मोड़ना, काटना तथा उपयोगी कार्य करने हेतु तैयार करने का कार्य करता है।

फिटर के विभिन्न मैकेनीकल प्रोडक्शन कम्पनियों, रेलवे, जहाज निर्माण विद्युत निर्माण कम्पनियों आदि में कार्य करने के प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं।

उपलब्धियाँ (Achievements)

ज्ञान आई.टी.आई. ज्ञान महाविद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग है जो पिछले पाँच वर्षों से प्रशिक्षार्थियों को तकनीकी शिक्षा प्रदान कर उनको रोजगार परक शिक्षण

प्रदान कर रहा है यह अलीगढ़ का एक मात्र ऐसा निजी आई.टी.आई. है जो लगातार विकास की ओर अग्रसर है।

संस्थान के चेयरमैन डॉ. दीपक गोयल जी, डॉ. गौतम गोयल तथा प्राचार्य महोदय व शिक्षकों के अथक प्रयासों से वर्ष दर वर्ष उपब्धियों की नई ऊँचाईयों को छुआ है तथा भविष्य में भी उपलब्धियों को हासिल करने हेतु प्रयासरत हैं। संस्थान में सत्र 2012-14 में इलैक्ट्रिशन तथा फिटर ट्रेडों में इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय में 42 (2 + 2) की मान्यता प्राप्त हुई। समय-समय पर (Quality Control of India, New Delhi) की टीम ने ज्ञान आई. टी. आई. का निरीक्षण किया और टीम द्वारा मानक के अनुसार सभी मूलभूत सुविधाएं मिलने पर आई.टी.आई. में सीटों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। डॉ. गौतम गोयल (प्रबन्धक) के सफल प्रयासों द्वारा DG&T के उपक्रम NCVT से इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय में (2+2+4) अर्थात् कुल (4+4+4) की मान्यता 2014 में प्राप्त हुई तथा फिटर व्यवसाय में (2+2+4) अर्थात् (4+4+4) की मान्यता 2015 में प्राप्त हुई। 30 जुलाई सन् 2015 को "Care Rating" के द्वारा संस्थान को 4 Star ग्रेडिंग से नवाजा गया। वर्ष 2016 में इलैक्ट्रीशियन व्यवसाय में (2+2+2) अर्थात् कुल (6+6+6) की मान्यता DG&T के उपक्रम NCVT से प्राप्त हुई। वर्तमान में संस्था में कुल प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 561 है जोकि अध्ययनरत हैं। इनमें से फिटर में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 246 तथा इलैक्ट्रीशियन में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 315 है।

सुविधाएँ (Facilities)

ज्ञान आई. टी. आई. संस्थान का परिसर स्वच्छ शंत, प्रदूषण मुक्त तथा मनोरम प्राकृतिक वातावरण में स्थित है। विद्युत न होने पर संस्थान के जैनरेटर से आवश्यकतानुसार विद्युत की आपूर्ति की जाती है तथा सोलर विद्युत प्रणाली भी उपलब्ध है।

अध्यापन कक्ष (Class Room): संस्थान में उपयुक्त आकार के हवादार तथा प्रकृतिक प्रकाश की उचित व्यवस्था वाले पर्याप्त अध्यापन कक्ष मौजूद हैं अध्यापन कक्षों में व्हाइट बोर्ड (White Board) तथा ओवर हैड प्रोजेक्टर की सुविधाएं हैं। प्रशिक्षणार्थियों को बैठने के लिए आवश्यक फर्नीचर उपलब्ध है।

पुस्तकालय (Liabrary): संस्था में स्थित पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पठन-पाठन सामग्री जैसे - पत्रिकाएँ, सामान्य ज्ञान बर्धक पुस्तकें एवं प्रशिक्षणार्थियों के कोर्स की तकनीकी पुस्तकें उपलब्ध हैं। छात्रों का पुस्तकालय कार्ड बनाकर उन्हें अध्ययन हेतु पुस्तकें प्रदान की जाती है।

आई. टी. प्रयोगशाला (I.T. Lab) : संस्थान में कम्प्यूटर प्रयोग शाला में उचित संख्या में कम्प्यूटर ओवर हैड प्रोजेक्टर, एल.सी.डी. प्रोजेक्टर एवं स्लाइड प्रोजेक्टर हैं।

फिटर वर्कशॉप (Fitter Workshop): फिटर वर्कशाप में प्रशिक्षार्थियों के प्रशिक्षण हेतु सभी आवश्यक मैकेनीकल मशीन यंत्र एवं उपयंत्र आदि उपलब्ध हैं।

इलैक्ट्रीशियन वर्कशॉप (Electrician Workshop) : इलैक्ट्रीशियन वर्कशॉप में प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण हेतु सभी आवश्यक इलैक्ट्रीकल मशीन यंत्र एवं उपयंत्र आदि उपलब्ध है।

इन्जीनियरिंग ड्राइंग हॉल (Engineering Drawing Hall): संस्थान में स्थिति अभियन्त्रण कला कक्ष में नवीनतम एवं आधुनिक ड्राइंग बोर्ड एवं चेयर उपलब्ध है।

प्लेसमेंन्ट सैल (Placement Cell) : संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार हेतु प्लेसमेन्ट सेल की भी उचित व्यवस्था है।

दवाखाना (Dispensary) : संस्थान में स्थित डिस्पेन्सरी में प्राथमिक उपचार सम्बन्धी आवश्यक दवाईयाँ सिक वैण्ड आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आपात स्थिति में रोगी को अस्पताल हेतु संस्था के निजी वाहन उपलब्ध हैं।

पेयजल (Drinking Water) : संस्थान में अच्छे पेयजल की उचित व्यवस्था है प्राकृतिक पेयजल हर समय उपलब्ध है।

सुरक्षात्मक युक्तियाँ (Safety Devices) : संस्थान परिसर में जगह-जगह अग्नि शमन यन्त्र लगे हैं जिन्हें आग लगने पर आपातकालीन स्थिति में प्रयोग किया जा सकता है।

खेलकूद (Sports) : संस्थान में प्रशिक्षणर्थियों के लिए शारीरिक स्वस्थता हेतु खेलकूद इत्यादि का भी उत्तम प्रबन्ध है। जैसे - क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिन्टन आदि खेलों की उचित व्यवस्था है। संस्थान में खेलकूद हेतु उपयुक्त मैदान है।

औद्योगिक तथा मनोरंजन भ्रमण (Industrial & Recreation Tours) : संस्थान द्वारा समय-समय पर औद्योगिक भ्रमणों का आयोजन किया जाता है, ताकि प्रशिक्षणार्थी विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में हो रहे आधुनिक तकनीकी विकास एवं उद्योग जगत में प्रयोग की जा रही

आधुनिक मशीनों के बारे में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी हासिल कर सकें। इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा मनोरंजन भ्रमणों का भी आयोजन किया जाता है। जिससे प्रशिक्षणार्थियों का तकनीकी कौशल के साथ- साथ सामान्य एवं बौद्धिक विकास हो सके।

छात्रवृत्ति एवं प्रशिक्षण शुल्क में छूट (Rebate in Training Fees and Scholarship) : संस्थान में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति/अनुदान/अनुग्रह राशि प्रदेश शासन के नियमानुसार प्रदान की जाती है। ज्ञान प्राइवेट औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के निकटवर्ती गांव अर्थात् गोद लिए गये गांव जैसे बढौली फत्तेखाँ, पड़ियावली, मुकन्दपुर, मईनाथ, मडराक, न्हौटी, सराय हरनारायण, सराय बुर्ज, मन्दिर का नगला, हाजीपुर चौहट्टा हाजीपुर फत्तेखाँ, चिरौलिया दाऊद खाँ, ईशानपुर तथा कमालपुर गांवों के प्रशिक्षणार्थियों को छात्रवृत्ति की सुविधा संस्था के नियमानुसार दी जाती है तथा प्रशिक्षण शुल्क में छूट का लाभ लेने के लिए प्रशिक्षार्थी को किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक में खाता खुलवाना अनिवार्य होता है।

अनुशासन एवं शिष्टाचार

(Discipline and Manners)

संस्थान के अनुशासन विभाग के क्षेत्र में सभी प्रशिक्षणार्थी आते हैं इस विभाग का संचालन मुख्य अनुशासन अधिकारी के अधीन है।

अनुशासन (Discipline) :

1. प्रवेश के बाद प्रशिक्षार्थी को मुख्य अनुशासन अधिकारी से अपना परिचय पत्र प्राप्त कर लेना चाहिये।
2. परिचय-पत्र खो जाने पर दूसरा परिचय पत्र 100 रु. जमा करने पर दिया जाता है, साथ ही फोटो भी देना अनिवार्य है।
3. परिचय पत्र खोने की स्थिति में अनुशासन विभाग में रिपोर्ट करना आवश्यक है तथा इस सम्बन्ध में एक शपथ पत्र नोटरी द्वारा सत्यापित किया हुआ भी जमा करना अनिवार्य है।

शिष्टाचार (Manners):

1. संस्थान परिसर या आसपास के क्षेत्र में धूम्रपान निषेध है।
2. दीवारों पर लिखना व थूकना निषेध है।
3. तेज स्वर में बोलना एवं आवाज लगाना निषेध है।
4. शालीनता व्यवहार का मुख्य अंग है।
5. संस्थान की सम्पत्ति को हानि से बचायें।
6. कार्यालय में भीड़-भाड़ न करें।
7. संस्थान में रैगिंग व मोबाइल फोन का प्रयोग पूर्णतः वर्जित है।

गतवर्षों में संस्थान में आयोजित कार्यक्रम

(Programmes held in the Institute during previous years)

बेसिक बैल्डिंग कोर्स (Basic Welding Course): ज्ञान आई.टी.आई. में शैक्षिक सत्र 2014-15 में 04 अगस्त 2014 को भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के आगरा स्थित (MSME) विकास संस्थान के सहायक निदेशक मि. शकील अहमद तथा इनवेस्टीगेटर श्री सुशील यादव ने ज्ञान महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में औद्योगिक अभिप्रेरणा सम्बन्धी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ज्ञान आई.टी.आई. में अध्ययनरत इलैक्ट्रीशियन तथा फिटर ट्रेड के सभी प्रशिक्षणार्थियों तथा सभी अनुदेशकों ने भाग लिया । श्री सुशील यादव ने वर्तमान परिवेश में उद्यमशीलता की आवश्यकता को स्पष्ट करते सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को परिभाषित किया और अपने संस्था के प्रमुख कार्यों से अवगत कराया व उनके तरीकों पर प्रकाश डालते हुए मानव मनोविज्ञान के प्रमुख कार्यों का भी उल्लेख किया। मौ. शकील अहमद ने भारत में विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास के बारे में बताया और सूक्ष्म, लघु व मध्यम शुरू करने एवं उसके सफल संचालन के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक तरीकों पर भी प्रकाश डाला। श्री सुशील यादव ने (INCUBATOR) के माध्यम से 'उद्यमशीलता तथा प्रबन्धकीय विकास का सहयोग' के बारे में भी जानकारी दी।

संस्थान में 04 अगस्त से 12 सितम्बर तक चलने वाले इस कोर्स में प्रवेश के इच्छुक व्यक्तियों का साक्षात्कार कर 25 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा सम्बन्धित कार्यक्रम का उद्घाटन भी सहाय क निदेशक महोदय ने किया। आई.आई.टी. के उप-प्राचार्य श्री सुरेशचन्द्र ने प्रधानाचार्य का सहयोग करते हुए गोद लिये गये गांव के लोगों को कोर्स की जानकारी दी तथा संस्थान की प्रगति से

अवगत कराया। पूरे कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के प्रबन्धक डॉ. गौतम गोयल ने किया।

औद्योगिक भ्रमण का आयोजन

संस्थान द्वारा 6 जनवरी 2015 को मथुरा स्थित टैंटीवाल वायर प्रोडक्ट्स लि. कम्पनी में सत्र 2013-15 के प्रशिक्षणार्थियों को औद्योगिक भ्रमण कराया गया।

साक्षात्कार हेतु प्लेसमेंट सैल का आयोजन : संस्थान में प्लेसमेंट सैल द्वारा गतवर्षों में निम्नलिखित साक्षात्कार किए गए :

1. 06 जनवरी, 2015 को मथुरा स्थित टैंटीवाल वायर प्रोडक्ट्स कं. लि. द्वारा सत्र 2012-14 के प्रशिक्षणार्थियों का रोजगार हेतु साक्षात्कार हुआ।
2. गत वर्षों में होण्डा सी.एल. व औटोमोटर्स एलाइन्स इण्डिया लि. नोयडा में आपरेट पद हेतु आई. टी. आई. के 23 प्रशिक्षणार्थियों का चयन हुआ।
3. गत वर्ष में होण्डा लि. भिवाडी (राजस्थान) में आई.टी. आई. के 18 प्रशिक्षणार्थियों का चयन हुआ।
4. इसके अतरिक्त टाटा मोटर्स तथा मारूति सुजुकी जैसे MNC कम्पनियों में भी संस्थान द्वारा प्लेसमेंट कराए गए।

नवीन प्रशिक्षुओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम

महाविद्यालय के सरस्वती भवन स्थित स्वराज्य सभागार में 3 सितम्बर, 2016 को नवीन प्रशिक्षुओं का उन्मुखीरकरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के मख्य अतिथि एवं सचिव श्री दीपक गोयल जी द्वारा द्वीप प्रज्जवलित करके किया गया। विशिष्ट अतिथि ज्ञान आई.टी.आई के प्रबन्धक डॉ. गौतम गोयल एवं प्रबन्धक सदस्या श्रीमती रितिका गोयल ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए उनके व्यक्तित्व विकास का प्रकाश डाला एवं रोजगार की सम्भावनाओं के बारे में विस्तार से बताया।

विश्वकर्मा पूजन दिवस

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रत्येक वर्ष 17 सितम्बर को 'विश्वकर्मा दिवस' का आयोजन किया जाता है। गतवर्ष की भाँति 17 सितम्बर, 2016 को भी विश्वकर्मा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के चैयरमैन श्री दीपक गोयल सहित संस्थान के प्रधानाचार्य श्री मनोज कुमार वार्ष्णेय, सभी अनुदेशकगण, कर्मचारीगण व प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे। सभी ने हवन में आहुतियाँ देकर भगवान विश्व कर्मा जी को पुष्प अर्पित करके नमन किया।

National Power Thermal Institute द्वारा सेमिनार का आयोजन

ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में 21-22 नवम्बर 2016 को NPTI द्वारा सेमिनार का आयोजन कराया गया। ज्ञान आई. टी. आई. के प्रधानाचार्य श्री मनोज कुमार वार्ष्णेय, प्रबन्धक डॉ. गौतम गोयल एवं प्रबन्धक सदस्या श्रीमती रितिका गोयल इस कार्यक्रम में उपस्थिति रहे। इस आयोजन में सभी छात्र भी उपस्थित रहे और उन्हें रोजगार के अवसर एवं विद्युत से सम्बन्धित प्रशिक्षण की सभी जानकारियाँ प्रोग्राम के निदेशक श्री मनोज कुमार शर्मा तथा इन्जी. मि. अतीक अहमद के द्वारा दी गई।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

संस्थान में उपलब्ध दो व्यवसाय फिटर एवं इलैक्ट्रशियन के अतिरिक्त जनवरी 2017 से प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का शुभारम्भ किया गया है। जिसमें रिटेल एण्ड सेल्स, सी.सी.टी.वी. इन्सटॉलेशन तथा डाक्यूमेन्टेशन आदि कोर्स शामिल हैं, जिनका डॅयूरेशन ऑफ कोर्स का विवरण निम्नांकित है :

1.	रिटेल सेल्स एसोसिएट	320 घण्टे
2.	डोकूमेण्टेशन असिस्टेण्ट	310 घण्टे
3.	सी.सी.टी.वी. इंस्टालेशन टैक्नीशियन	400 घण्टे

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) की स्कीम है। इस Skill Certification scheme का उद्देश्य भारी संख्या में भारतीय नौजवानों को उद्योगों से सम्बन्धित कौशल प्रशिक्षण (Training) देना है। ताकि उनके जीवन स्तर को सुधारा एवं सुरक्षित किया जा सके। ऐसे व्यक्ति जिन्हें कार्यानुभव है या कार्य कर रहे हैं वो भी ट्रेनिंग करके प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री कौशल विकास की उपरोक्त योजनाओं के अतिरिक्त भविष्य में इलैक्ट्रीशियन असिस्टेण्ट तथा प्लम्बर के प्रशिक्षण हेतु भी योजना प्रस्तावित है।

Visitor's View

Date ....
Time...............

The whole campus is very impossible. It is ideal real knowledge and natural ambiance. Study can only generate in such atmosphere of peace and all round development of students. This Institute is its reflection.

Best wishes

5/3/16

DR R.K. BHATNAGAR IAS (RETD)
Secretary General I.G.S.C.
Meerut U.P.

Date ....
Time...............

Well maintained campus. Cleanliness superb, staff very cordial, every thing update and systematic. Very pleasant visit. Thanks to all Gyan Vidyalay ... trainer

5/3/16

R.P. Saxena I.G.S.C.
Mathura Chief Patron

Date ....
Time...............

ज्ञान महाविद्यालय शैक्षिक दृष्टि से एक श्रेष्ठ विद्यालय है। यहाँ पर बी.एड., बी.टी.सी. की कक्षाएं हैं आवश्यकता है एम.एड. की कक्षाओं की। मेरी शुभकामनाएं हैं इस महाविद्यालय के साथ सदैव हैं। मैं हर समय सेवा देने के लिए तत्पर रहूंगा।

डॉ. बी.एस. गुप्ता (एसो. प्रोफेसर) (सेनि.) धर्म समाज महाविद्यालय अलीगढ़
पूर्व डीन शिक्षा संकाय डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

Date ....
Time...............

I felt very honoured and elegant while visiting this College of Education. The congenial, easy going homely atmosphere of the college is worth praising. People (both staff students) and the H.O.D. Mrs. Dr. Rekha Krishn Johri are very efficient, nice and hard working. The Executive Director Y.K. Gupta, the director of this college is also good and effective person. May God bless the college & all people here with high dignity.

23/1/17

Nakhat Nasreen
D/O Education
A.M.U. Aligarh

अखबारों की नजर से...

NEWS

अमर उजाला | दैनिक जागरण | हिन्दुस्तान | DLA | पंजाब केसरी | आज | राजपथ | प्रावदा

बेटियों को शिक्षित करने के लिए किया जागरूक

शिविर

[illegible]

ज्ञान महाविद्यालय में पौधारोपण

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति ने संयुक्त रूप से पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्ञान महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया।

अलीगढ़। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई व ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से ज्ञान महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम हुआ। इसके मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान ग्राम हाजीपुर चौहट्टा यशवंत सिंह व कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल ने पौधारोपण किया। कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस डॉ. ललित उपाध्याय ने बताया कि एनएसएस के स्वयंसेवक व स्वयंसेविकाएं 11 जुलाई को पूरे प्रदेश में होने वाले महाअभियान में पौधारोपण कर सक्रिय सहयोग करेंगे। ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के प्रभारी डॉ. विवेक मिश्रा ने कहा कि यह कार्यक्रम महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गांवों में भी ग्रामवासियों के सहयोग से किया जाएगा।

हैंड राइटिंग में मेघाली की दिखी मेधा

ज्ञान महाविद्यालय में एनएसएस द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक व छात्राएं।

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से मतदाता जागरूकता अभियान के तहत सरस्वती भवन में हैंड राइटिंग प्रतियोगिता हुई। इसमें 225 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। ज्ञान महाविद्यालय के 175, धर्म समाज महाविद्यालय के 11, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय के 9, टीकाराम कन्या महाविद्यालय के 17, मदर टेरेसा वीमेंस कॉलेज लाला नगरी के 13 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। इसमें ज्ञान महाविद्यालय की मेघाली गुप्ता प्रथम, कविता राजपूत द्वितीय, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय के सिराजुद्दीन तृतीय स्थान पर रहे। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने शुभारंभ किया। उप प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल, मदर टेरेसा वीमेंस कॉलेज की प्रवक्ता डॉ. आराधना मिश्रा, डॉ. दुर्गेश शर्मा, डॉ. बीना अग्रवाल, डॉ. ज्योति सिंह, डॉ. मुकुल अनवर, डॉ. अमरीन सिद्दीकी, [illegible] [illegible] सिंह, डॉ. एसएस चौधरी, [illegible] आरके कुलश्रेष्ठ, वीरेंद्र सिंह का सहयोग रहा। निर्णायक मंडल में डॉ. [illegible], डॉ. विवेक मिश्रा और डॉ. ललित उपाध्याय रहे।

इंडिया हेरिटेज प्रतियोगिता थ्री डॉट्स स्कूल ने जीती

- ज्ञान महाविद्यालय में आयोजन, 11 स्कूलों के 102 प्रतिभागी शामिल

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित [illegible]

ज्ञान महाविद्यालय में बीएड में प्रवेश लेने वाले अभ्यर्थियों को [illegible] गए स्मार्ट फोन।

बीएड में प्रवेश लेने वालों ने जीते स्मार्टफोन

जागरण संवाददाता, अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ के [illegible] बीएड सत्र 2016–2018 में प्रवेश ले चुके विद्यार्थी [illegible]

शिविर में बताई डिजीटल भुगतान की जानकारी

अलीगढ़। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ के तत्वावधान में ग्राम पड़ियावली में दूसरे एक दिवसीय शिविर का आयोजन प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता की अध्यक्षता हुआ। कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस डॉ. ललित उपाध्याय ने ग्राम प्रधान वीरेंद्र पाल सिंह को डिजिटल भुगतान व मोबाइल बैंकिंग के लिए उनके मोबाइल में एप डाउनलोड कर डिजिटल भुगतान ग्रामीण जागरूकता अभियान का श्रीगणेश किया। उपप्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल ने बताया कि 22 दिसंबर को तीसरे एक दिवसीय शिविर ग्राम पड़ियावली में आयोजित किया जाएगा। इसमें मतदान जागरूकता रैली व स्वच्छता अभियान आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर [illegible] सिंह, डॉ. [illegible] सेंगर, डॉ. ज्योति सिंह, अनिल कुमार आदि मौजूद थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों संग मनाया स्थापना दिवस

अलीगढ़ | कार्यालय संवाददाता

शिक्षक सम्मान

- ज्ञान महाविद्यालय में किया गया कार्यक्रम का आयोजन।
- कार्यक्रम में 13 शिक्षकों को किया गया सम्मानित

[illegible]

रविवार को ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथिगण। • हिन्दुस्तान

[illegible]

ज्ञान महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने जगाई अलख

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवायोजन इकाई की ओर से सात दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन ग्राम पड़ियावली में किया गया है। सोमवार को प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। प्राचार्य डॉ. गुप्ता व उप प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल ने युवाओं को सामाजिक कार्य में आगे आने का आह्वान और मतदान के प्रति जागरूक किया। इस मौके पर राधे गुप्ता, वीरेंद्र सिंह, जतिन वार्ष्णेय, अमित यादव, टीकम सिंह, दीपक कुमार, मोहित बघेल, शमशाद मलिक, निखिल कौशानी, अंशु शर्मा, शिखा वार्ष्णेय, पूजा शर्मा आदि मौजूद रहीं।

संविधान में मौलिक अधिकारों पर की चर्चा

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के कला संकाय में राजनीति शास्त्र में अतिथि व्याख्यान हुआ। मुख्य वक्ता धर्म समाज महाविद्यालय के एसोसिएट प्रो. डॉ. एनके सिंह ने संविधान में मौलिक अधिकारों, मूल कर्तव्यों तथा राज्य के नीति निदेशक तत्वों की व्यावहारिकता एवं प्रासंगिकता के संबंध में चर्चा की। उन्होंने बताया कि राज्य के द्वारा व्यक्ति के अधिकारों को किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है। संविधान में समय-समय पर संशोधन करते हुए भी अधिकारों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा गया। मौलिक अधिकारों में संशोधन केवल संसद के द्वारा ही किया जा सकता है।

कक्ष निरीक्षक के रूप में ज्ञान महाविद्यालय के बीटीसी प्रशिक्षु

डॉ. ललित कुमार उपाध्याय के नेतृत्व में विवेक कुमार, अखिलेश कुमार, पुष्पेंद्र, ज्ञानेंद्र सिंह, दिशु कुमार, रवित माहेश्वरी आदि मौजूद रहे।

इंडक्शन मीटिंग में दी कोर्स की जानकारी

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में इग्नू की इंडक्शन मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें अलीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अमित चतुर्वेदी तथा सहायक निदेशक डॉ. वीपी सिंह ने ज्ञान महाविद्यालय में अध्ययन केन्द्र में एमए अर्थशास्त्र, सीआईजी, सीटीई, पीजीडीआरडी व सीईएस कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थी, केन्द्र के समन्वयक तथा काउंसलरों के साथ इंडक्शन मीटिंग की। डॉ. वीपी सिंह ने कहा कि इग्नू केन्द्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है, तथा नामांकन की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। जेल, विश्वविद्यालय तथा विभिन्न महाविद्यालय में इग्नू के अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है।

अखबारों की नजर से...

NEWS NEWS

अमर उजाला | दैनिक जागरण | हिन्दुस्तान | DLA | पंजाब केसरी | आज | राजपथ | प्रावदा

प्रतिभावान खिलाड़ियों का किया सम्मान

ज्ञान महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में छात्रा को पुरस्कृत करते अतिथि।

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया। महिला व बाल विकास के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने पर राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित प्रतिभा शर्मा मुख्य अतिथि थीं। शैक्षिक सत्र 2014-15 में आयोजित परीक्षाओं में महाविद्यालय में प्रथम स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक, साहित्यिक, एकेडमिक, सामाजिक कार्य व खेलकूद प्रतियोगिताओं में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों ने [illegible] वार्षिक पत्रिका ज्ञान पुष्प 2015-16 का विमोचन किया गया। कॉलेज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गई। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, उप प्राचार्य डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. ललित उपाध्याय, मधु कांत, डॉ. विवेक मिश्रा, [illegible] प्रबंधक मनोज यादव मौजूद थे। ज्ञान आईटीआई के निदेशक डॉ. गौतम गोयल व उनकी पत्नी रितिका गोयल [illegible] समिति [illegible] के 45 पदाधिकारियों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

विद्यार्थियों को दी डिजिटल इंडिया की जानकारी

अमर उजाला ब्यूरो

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को स्मार्टफोन दिए गए

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ के स्वागत समारोह में बीएड सत्र 2016-2018 में प्रवेश ले चुके विद्यार्थियों को डॉ. ललित उपाध्याय ने डिजीटल इंडिया के बारे में बताया। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल ने महाविद्यालय की अब तक की प्रगति तथा संस्कृति से सभी को अवगत कराया।

बीएड विभाग की प्रभारी शिवानी सारस्वत ने महाविद्यालय के बीएड विभाग की विशिष्ट उपलब्धियों के बारे में बताने के साथ-साथ यह भी बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त करने वाला हमारे महाविद्यालय का बीएड विभाग अलीगढ़ मंडल के महाविद्यालयों में एकमात्र महाविद्यालय है। इसके बाद क्रमशः पुरस्कार के लिए विचार तथा क्विज का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय प्रबन्धन की रितिका गोयल ने डिजीटल इंडिया कार्यक्रम से पर्यावरण के संरक्षण, भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जुड़ने एवं आम व खास लोगों को होने वाले लाभ बताए। साथ ही नवागंतुक विद्यार्थियों को ज्ञान परिवार का सदस्य बनने पर बधाई दी। क्विज प्रतियोगिता तथा क्विज के परिणामों के बाद बीएड में प्रवेश ले चुके विद्यार्थी [illegible] नीलम शर्मा, कु. [illegible] सारस्वत तथा [illegible] कुमार को स्मार्टफोन महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा दिया गया।

नोटबन्दी से आर्थिक समस्या में वित्तीय निर्णयन की भूमिका अहम

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में व्याख्यानमाला के तहत वाणिज्य संकाय के तत्वावधान में अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया। इसके मुख्य अतिथि एएमयू के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मोहम्मद शोएब थे। व्याख्यान माला के मुख्य वक्ता का इस मौके पर सम्मान भी किया गया। मुख्य वक्ता ने कहा कि नोटबंदी से आर्थिक समस्या में वित्तीय निर्णयन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने वर्तमान वर्तमान वित्तीय निर्णयन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह वर्तमान समय का महत्वपूर्ण विषय है। कार्यक्रम में उप प्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल, वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. आरके कुशवाहा आदि ने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. संध्या सेंगर ने किया। इस मौके पर डॉ.ललित उपाध्याय, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. चेतन गुप्ता आदि मौजूद थे।

ज्ञान महाविद्यालय ने जरूरतमंदों को कंबल बांटे

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति की ओर से शुक्रवार को एनएसएस के सहयोग से गोद लिए 14 गांवों के 70 जरूरतमंद लाभार्थियों को कंबल बांटे गए। मुख्य अतिथि इग्नू के क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. भानु प्रताप सिंह ने कहा कि ज्ञान सामाजिक सरोकार की यह अनूठी पहल है। अतिथि डॉ. गौतम गोयल, रितिका गोयल, सचिव मनोज यादव व उपप्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल उपस्थित रहे। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने महाविद्यालय की प्रगति के बारे में बताया। उन्होंने 24 दिसंबर को महाविद्यालय में पीएसआरआई दिल्ली के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की भी जानकारी दी। प्रभारी डॉ. विवेक मिश्रा ने ज्ञान महाविद्यालय के सामाजिक कार्यों के बारे में बताया। संचालन डॉ. ललित उपाध्याय ने किया।

हिंदी के पांव में पड़े छाले...

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में हिंदी पखवाड़े के तहत काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कवि अशोक अंजुम ने काव्य रचना 'हिंदी के पांव में पड़े छाले' सुनाकर हिंदी की वेदना को दर्शाया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने हिंदी के प्रति भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रेम का उदाहरण दिया। डॉ. ललित उपाध्याय ने कहा 'अब तो सोचो साथियों, अपना भी फर्ज निभाना है, संयुक्त राष्ट्र में गूंजी हिंदी, हिंदी का आया जमाना है... सुनाकर लोगों को जागरूक किया।

ज्ञान महाविद्यालय में रविवार को अभिभावक शिक्षक संवाद का आयोजन प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता के निर्देशन में हुआ। यहां अभिभावकों को नोटबंदी के चलते डिजिटल भुगतान के विषय में बताया गया। साथ ही डिजिटल ई-वॉलेट की जानकारी भी दी। इस मौके पर उप प्राचार्य डा. हीरेश गोयल, मुख्य अनुशासन अधिकारी आरपी सिंह, कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस डा. ललित उपाध्याय, डा. आरके कुशवाह, डा. एचएस चौधरी, डा. वीके वर्मा, डा. एके जौहरी आदि थे।

बोर्ड परीक्षा के टॉपरों का किया गया सम्मान

[illegible]

ज्ञान महाविद्यालय में पतंग प्रतियोगिता हुई

आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय में लोहड़ी व मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में खेल समिति की ओर से पतंग प्रतियोगिता हुई। शुभारम्भ प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता व प्रबन्धक मनोज यादव ने किया। प्रतियोगिता में सोमिल वार्ष्णेय, मधुर गुप्ता, गौरव वार्ष्णेय आदि विजयी रहे। वहीं सामाजिक सरोकार समिति द्वारा मदर टेरेसा अनाथालय में बच्चों के लिए दखिवड़ी दान की। इस अवसर पर उपप्राचार्य डॉ. हीरेश गोयल, खेल समिति के सदस्य वीरेन्द्र सिंह रहे।

ज्ञान महाविद्यालय की एनएसएस इकाई व ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति द्वारा पहल कार्यक्रम के तहत वस्त्र एकत्र कर गोद लिए 14 ग्रामों व मलिन बस्तियों में अति निर्धनों को गरम वस्त्र का वितरण किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. हीरेश गोयल व स्वयं सेवक आदि थे।

आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय की एनएसएस इकाई की ओर से रक्तदान शिविर महाविद्यालय में लगाया। शिविर का संयोजन व संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय ने किया। रक्तदान शिविर में 78 रक्तदाताओं ने पूरे जोश उत्साह के साथ रक्तदान किया। मुख्य अतिथि एडीएम सिटी श्याम बहादुर सिंह ने युवा स्वयं सेवकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि मानवता के लिए रक्तदान से बड़ा महादान कोई और नहीं है। एक रक्तदान चार लोगों की जान बचाता है।

नुक्कड़ नाटक से किया मतदान के लिए जागरूक

ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना में सम्मानित छात्राएं।

[illegible]

गीता फोगाट पर बनी फिल्म दंगल देखी

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के प्राध्यापकों व छात्र छात्राओं ने कॉमवेल्थ खेल में महिला कुश्ती में स्वर्ण पदक विजेता गीता फोगाट पर बनी फिल्म देखी। अप्सरा सिनेमाघर में प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता की अगुवाई में देखा इस फिल्म को देखा गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ ललित उपाध्याय ने बताया कि डिजिटल भुगतान को विद्यार्थियों में बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रेरणाप्रद महिला सशक्तिकरण की मिसाल खिलाड़ी गीता फोगाट पर बनी फिल्म दंगल को देखा। फिल्म से सीख मिली कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए आखिरी दम तक प्रयास करने चाहिए। उप प्राचार्य डॉ. हरिश गोयल, आरपी सिंह, डॉ. एके जौहरी, डॉ आरके कुशवाह, आरके शर्मा, डॉ. एचएस चौधरी, ऋत्विजा मित्तल, डॉ. विवेक मिश्रा आदि मौजूद रहे।

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद शिक्षक-शिक्षिकाएं।

आईटीआई के आने से बढ़ेगा रोजगार

अलीगढ़। नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट नई दिल्ली की ओर से ज्ञान प्राईवेट आईटीआई के प्रशिक्षुओं की दो दिवसीय पावर सिस्टम फैमिलीराइजेशन विषय पर कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। शुभारम्भ ज्ञान प्राईवेट आईटीआई के निदेशक डॉ. गौरव गोयल व एमके शर्मा सहायक निदेशक ने किया। [illegible]

ज्ञान महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भरे 'यूथ पार्लियामेंट' के आवेदन

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय के एनएसएस के स्वयंसेवकों ने युवा विद्यार्थियों से दैनिक जागरण डेमोक्रेसी की पाठशाला के आवेदन भरवाए। [illegible] इसमें 18 से 21 वर्ष की आयु के युवा भाग ले सकते हैं [illegible] 150 आवेदन भरे। [illegible]

छात्रा के विवाह में दी सिलाई मशीन

अलीगढ़। स्वराज्य स्वावलंबी योजना के गांव बढोली फतेह खां की ज्ञान महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रा पूनम कुमारी को विवाह पर सिलाई मशीन दी गई। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता के साथ कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस डॉ. ललित उपाध्याय आदि उपस्थित रहे।

विवाह पर छात्रा को दी सिलाई मशीन

[illegible]

ज्ञान महाविद्यालय में प्रतिभा परिचय समारोह

अलीगढ़। आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय के [illegible] बीएड प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्रतिभा परिचय सम्मेलन हुआ। [illegible]

ज्ञान महाविद्यालय में सेमिनार

[illegible]

कला एवं हस्त शिल्प प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

[illegible]

सत्र–2016–17 में महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम : एक नजर में

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
1.	महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव	13/02/16	***मुख्य अतिथि* :** डॉ अंजना बंसल, प्राचार्या, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ ***विशिष्ट अतिथि* :** महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित श्रीमती प्रतिभा शर्मा (मथुरा) वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति, मथुरा के 45 पदाधिकारी तथा सदस्य	महाविद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी, चेयरमेन श्री दीपक गोयल, कोषाध्यक्ष श्री असलूब अहमद, श्री अनिल खण्डेलवाल, ज्ञान आई. टी. आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल, श्रीमती रितिका गोयल, प्रबन्धक श्री मनोज यादव व महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गाँवों से अनेक ग्राम प्रधानों ने उत्सव में भाग लिया।
2.	भारत पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड के बॉटलिंग प्लांट सलेमपुर, जिला – हाथरस का भ्रमण	22/02/16	बी.पी.सी.एल. के सुरक्षा अधिकारी श्री तीर्थंकर मेन्ती तथा प्रादेशिक प्रबंधक श्री जे.सी. आहूजा ने भ्रमण पर गए दल को आवश्यक जानकारी दी।	हमारे महाविद्यालय के भ्रमण दल में डॉ. धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. ललित उपाध्याय तथा श्री पुष्पेन्द्र मोहन वार्ष्णेय शामिल थे।
3.	बी.एड. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	25/02/16	बी.एड. सत्र 2015–17 के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी अपने विभाग की प्रभारी श्रीमती शिवानी सारस्वत, श्रीमती आभाकृष्ण जौहरी, श्रीगिर्राज किशोर, श्री लखमी चन्द्र व सुश्री भावना सारस्वत के साथ एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण हेतु मथुरा– वृन्दावन गए।	अनेक मन्दिर तथा दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कर उनके ऐतिहासिक, धार्मिक तथा शैक्षिक महत्व पर विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों ने सामूहिक चर्चा की।
4.	महिला उत्पीड़न पर गोष्ठी का आयोजन	27/02/16	***मुख्य वक्ता* :** श्रीमती एम.डी. तौमर, प्रभारी निरीक्षक, जिला महिला थाना, अलीगढ़ ***अन्य वक्ता* :** श्री आर.पी. सिंह, प्रशासनिक अधिकारी, ज्ञान म.वि.	महाविद्यालय की छात्र–छात्राएँ, शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों ने गोष्ठी में भाग लिया।
5.	बी.एड. विभाग मे अतिथि व्याख्यान	02/03/16	***अतिथि वक्ता* :** डॉ. जे.पी. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़	व्याख्यान का विषय, "Value Crisis and Models for Students"

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
6.	कालिज के विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को 'नीरजा' फिल्म दिखाई गई।	03/03/16	बी.एड. तथा बी.टी.सी. के विद्यार्थी, प्राध्यापक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के कर्मचारी	द ग्रेट वेल्यू मॉल (पी.वी.आर.) सिनेमाघर, अलीगढ़
7.	इण्टरनेशनल गुड-विल सोसाइटी ऑफ इण्डिया की रीजनल गोष्ठी का आयोजन	05/03/16	***मथुरा चेप्टर :*** **अ.** श्री आर.पी. सक्सेना **ब.** श्री आलोक कृष्ण गोस्वामी **स.** श्री सुरेश चन्द्र सक्सेना **द.** दीपक गोयल ***बुलन्दशहर चेप्टर :*** **अ.** श्री विपिन जी ***अलीगढ़ चेप्टर :*** **अ.** डॉ. ए. के. तौमर **ब.** डॉ. धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना ***मेरठ चेप्टर :*** **अ.** डॉ. आर. के. भटनागर (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)	हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य तथा अनेक प्राध्यापकों ने गोष्ठी में प्रतिभाग किया।
8.	बी.एड. के विद्यार्थियों हेतु पाँच दिवसीय स्काउट गाइड शिविर का आयोजन	15/03/16 से 19/03/16 तक	**1.** श्री यतेन्द्र सक्सैना, जिला संगठन अधिकारी, स्काउट – गाइड, अलीगढ़ **2.** श्री फौरन सिंह, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, हाथरस **3.** श्री रवेन्द्र कुमार शर्मा डी.ओ. सी. स्काउट, हाथरस **4.** श्री ए. के. गुप्ता प्रधानाचार्य, हीरालाल बारहसैनी इण्टर कॉलिज, अलीगढ़ **5.** श्री संजय वार्ष्णेय, प्रवक्ता, हीरालाल बारहसैनी इण्टर कॉलिज, अलीगढ़	हमारे महाविद्यालय के बी.एड. के विद्यार्थियों ने शिविर में प्रतिभाग किया।
9.	जीव जन्तु रक्षा अभियान में सक्रिय सहयोग	15/03/16	....	महाविद्यालय परिसर स्थित सभी भवनों में पक्षियों के लिए दाना-पानी के पात्र रखे गए। पिछले कई वर्षों से यह कार्य लगातार किया जा रहा है।
10.	गोरैया दिवस कार्यक्रम में स्वेच्छा-सेवियों का प्रतिभाग	20/03/16	**1.** श्री अवधेश तिवारी ए.डी.एम. सिटी **2.** श्री अनुपम गुप्ता डी. एफ. ओ.	जिला प्रशासन, वन विभाग व हरीतिमा संस्था द्वारा अलीगढ़ शहर के जवाहर उद्यान में

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
			3. श्रीविवेक बंसल Ex. MLC **4.** श्री सुबोध नन्दन शर्मा पर्यावरण विद् **5.** कवि डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ **6.** श्री ज्ञानेन्द्र मिश्र अध्यक्ष, उड़ान सोसाइटी	आयोजित कार्यक्रम में डॉ. धर्मेन्द्र कुमार अस्थाना व डॉ. ललित उपाध्याय के साथ कालिज की एन.एस.एस. इकाई के 25 स्वेच्छासेवियों ने प्रतिभाग किया।
11.	बी.एड. विभाग में अतिथि व्याख्यान	05/04/16	***अतिथि वक्ता :*** डॉ. बी.एस. गुप्ता, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़	व्याख्यान का विषय, **''क्रियात्मक अनुसंधान''**
12.	पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन	04/06/16	***निर्णायक मण्डल के सदस्य :*** **1.** डॉ. रेखा आर्या, अध्यक्षा, वनस्पति विज्ञान विभाग, टीकाराम कन्या कालिज **2.** डॉ. प्रबोध कुमार श्रीवास्तव, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, धर्म समाज कालिज	हमारे महाविद्यालय के बी.टी.सी. बैच 2013 व 2014 के प्रशिक्षुओं ने इस प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।
13.	पर्यावरण जन चेतना रैली	05/06/16	ग्राम प्रधान, श्रीमती पार्वती देवी	बी.टी.सी. बैच 2013-14 के प्रशिक्षुओं ने गाँव-मंदिर का नगला में स्थानीय ग्रामीण, महाविद्यालय के प्राचार्य व शिक्षकों के साथ रैली निकाली।
14.	इण्डरमीडिएट बोर्ड की परीक्षा में अलीगढ़ जिले में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों का सम्मान	07/06/16	ब्रज भूमि सेवा संस्थान, मथुरा के प्रतिनिधि **1.** श्री दीपक गोयल **2.** डॉ. गौतम गोयल **3.** श्रीमती रितिका गोयल, उड़ान सोसाइटी के प्रतिनिधि श्री ज्ञानेन्द्र मिश्र, यूथ फॉर नेशन के प्रतिनिधि डॉ. बैरिन्दम गुणाकर	महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता व पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों के साथ उनके माता - पिता आदि भी उपस्थित थे। आयोजन स्थानीय होटल पॉम ट्री. में किया गया।
15.	मेधावी छात्र - छात्रा सम्मान समारोह	19/06/16	***मुख्य अतिथि :*** डॉ. कौशल कुमार, जिला उद्यान अधिकारी, अलीगढ़ ***विशिष्ट अतिथि :*** **1.** प्रोफेसर अब्दुल वाहिद	ब्रज भूमि सेवा संस्थान, मथुरा, उड़ान सोसाइटी, अलीगढ़ तथा यूथ फॉर नेशन, अलीगढ़ के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इण्टरमीडिएट के उ.प्र. बोर्ड की

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
			समाज शास्त्र विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय **2.** श्री संतोष कुमार सिंह बहु-राष्ट्रीय कम्पनी के रीजनल मैनेजर।	परीक्षा में 75% या अधिक अंक पाने वाले तथा सी.बी.एस.ई. परीक्षा में 80% या अधिक अंक पाने वाले अलीगढ़ जिले के लगभग 200 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इसका आयोजन ज्ञान महाविद्यालय में हुआ।
16.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन	21/06/16	पतंजलि योग पीठ के प्रशिक्षक श्री हरिओम जी तथा श्री चन्द्रपाल सिंह ने उपस्थित व्यक्तियों को योगासन कराये।	महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल, ज्ञान आई.टी.आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल तथा महाविद्यालय प्रबंधन की श्रीमती रितिका गोयल के साथ महाविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित थे।
17.	बी.एड. के प्रथम चरण में प्रवेश लेने वालों को डिजीटल इण्डिया क्विज प्रतियोगिता द्वारा स्मार्ट फोन वितरित	03/07/16	महाविद्यालय प्रबंधन की श्रीमती रितिका गोयल	विजेता विद्यार्थियों को एक-एक स्मार्ट फोन पुरस्कार में दिया गया।
18.	वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारम्भ	08/07/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री चन्द्रपाल सिंह, पूर्व प्रधान, हाजीपुर चौहट्टा	महाविद्यालय परिसर के प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों ने पौधे लगाये।
19.	वृक्षारोपण का दूसरा चरण	11/07/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री दीपक गोयल, चेयरमेन, ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़	महाविद्यालय के बी.टी.सी. के प्रशिक्षु, एन.एस.एस. के स्वेच्छासेवी तथा प्राध्यापकों ने परिसर में वृक्षारोपण किया।
20.	निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर	23/07/16	पी.एस.आर.आई. हॉस्पीटल नई दिल्ली के विशेषज्ञ	डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल फाउण्डेशन के सहयोग से महाविद्यालय परिसर में शिविर लगाया गया। 191 मरीजों ने निःशुल्क जाँच एवं परामर्श का लाभ लिया। महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल एवं उनके परिजन शिविर में उपस्थित रहे।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
21.	बी.एड. के प्रशिक्षुओं द्वारा वृक्षारोपण	29/07/16	श्रीमती रितिका गोयल महाविद्यालय प्रबंधन की सदस्य	महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया।
22.	बी.एड. विभाग में मेंहदी व रंगोली प्रतियोगिता	04/08/16	....	बी.एड. के विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।
23.	प्रतिभा परिचय समारोह	10/08/16	....	बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपना-अपना परिचय दिया। इन विद्यार्थियों को महा-विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं तथा यहाँ की संस्कृति से परिचित कराया गया। चेयरमेन श्री दीपक गोयल ने नवागन्तुकों को आशीर्वाद दिया।
24.	स्वतन्त्रता दिवस समारोह	15/08/16	....	महाविद्यालय परिसर में शिक्षक, विद्यार्थी तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों की उपस्थिति में प्राचार्य जी ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद का कार्यक्रम महाविद्यालय के स्वराज्य सभागार में हुआ।
25.	नव नियुक्त प्राध्या-पकों का तीन दिवसीय उन्मुखीकरण	23, 24 व 26 अगस्त 2016	....	महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों ने उन्मुखीकरण में विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिये। महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल ने भी नव नियुक्त प्राध्यापकों को संबोधित किया।
26.	इंटैक हैरिटेज क्विज 2016 का आयोजन	27/08/16	***अतिथि :*** श्री राज नारायण सिंह, दैनिक जागरण	इस आयोजन में अलीगढ़ जिले के 11 सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इंटैक के ब्रज भूमि रीजनल चैप्टर के संयोजक श्री दीपक गोयल के साथ महाविद्यालय प्रबंधन की श्रीमती रितिका गोयल भी उपस्थित थी।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
27.	फ्रैशर पार्टी का आयोजन	31/08/16	....	बी.एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को फ्रैशर पार्टी दी। चेयरमेन श्री दीपक गोयल तथा प्राध्यापकगण पार्टी में शामिल हुए।
28.	नवीन प्रशिक्षुओं का उन्मुखीकरण	03/09/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री दीपक गोयल, चेयरमेन ***विशिष्ट अतिथि :*** डॉ. गौतम गोयल एवं श्रीमती रितिका गोयल	ज्ञान आई.टी.आई. के नए प्रशिक्षुओं का उन्मुखीकरण किया गया।
29.	शिक्षक दिवस मनाया गया	05/09/16	....	शिक्षक तथा विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।
30.	शिक्षक दिवस पर डिजीटल इण्डिया क्विज व संगोष्ठी का आयोजन	05/09/16	....	बी.ए., बी.एस-सी., बी.कॉम., एम.कॉम., एम.एस-सी. तथा बी. एड. के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
31.	संस्थापक दिवस समारोह का आयोजन	11/09/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री वीरेन्द्र सिंह (I.A.S) पूर्व मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार **विशिष्ट अतिथि :** **1.** श्री बिजेन्द्र सिंह, पूर्व सांसद **2.** श्री रामवीरसिंह समाज सेवी **3.** श्री सतीश कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ पत्रकार **4.** श्री चन्द्रशेखर, वरिष्ठ पत्रकार **5.** श्री पाल शर्मा **6.** श्री राकेश भार्गव **7.** श्री वीरेन्द्र गोयल **8.** श्री बच्चन सिंह **9.** श्रीमती गीता सिंह	महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल, अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी, उपाध्यक्ष श्री अविप्रकाश मित्तल, इं. इंद्रेश कौशिक, प्रबंधक श्री मनोज यादव, प्राध्यापक गण, छात्र-छात्राएँ तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्ति आयोजन में सम्मिलित हुए।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
32.	डिजीटल इण्डिया के अन्तर्गत 4G सिम का वितरण	14/09/16	....	महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल ने इच्छुक प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों को रिलाइंस जियो (4G) सिम दी।
33.	हिन्दी दिवस का आयोजन	14/09/16	....	महाविद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों ने प्रतिभाग किया।
34.	व्यक्तित्व विकास तथा पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन	17/09/16	***मुख्य प्रशिक्षक*** **:** मुहम्मद नासिर तथा श्री नितिन कुमार, बी. लिंग्वा के इण्टर-नेशनल ट्रेनर, नोएडा जिला-गौतम बुद्धनगर	यह आयोजन महाविद्यालय परिसर स्थित ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट के तत्वावधान में हुआ।
35.	विश्वकर्मा दिवस मनाया गया	17/09/16	....	ज्ञान आई.टी.आई. में आयोजित कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षु तथा अनुदेशकों ने प्रतिभाग किया। महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता तथा आई.टी.आई. के प्रधानाचार्य श्री मनोज कुमार वार्ष्णेय भी पूजा में सम्मिलित हुए।
36.	ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट के तत्वाव-धान में ट्रेनिंग विशेषज्ञ द्वारा मार्ग दर्शन	21/09/16	***मुख्य प्रशिक्षक*** **:** श्री अब्दुल जब्बार, प्रमुख ट्रेनिंग मैनेजर, तकनीकी सेवा केन्द्र, राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, अलीगढ़	इस कार्यक्रम में बी.एड. के विद्यार्थियों के साथ उनके प्राध्यापकों ने भी भाग लिया।
37.	राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस का आयोजन	24/09/16	....	बी.ए., बी.एस-सी. तथा बी.कॉम. के विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्राचार्य, उप प्राचार्य तथा कार्यक्रम अधिकारी ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।
38.	पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता	30/09/16	....	**'स्वच्छ भारत अभियान'** व **'बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ'** विषय पर भी बी. एड. के विद्यार्थियों ने पोस्टर

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
39.	गांधी एवं शास्त्री जयन्ती का आयोजन	02/10/16	....	एन.एस.एस. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय तथा प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता के निर्देशन में स्वेच्छासेवियों ने विद्यालय परिसर की सफाई की तथा गांधीजी व शास्त्रीजी के सिद्धान्तों पर चलने का प्रण लिया।
40.	ज्ञान वोकेशनल इंस्टीट्यूट द्वारा संगोष्ठी का आयोजन	05/10/16	***मुख्य प्रशिक्षक :*** 1. श्रीमती रिचा बंसल 2. श्री कैलाश उपाध्याय (बी. लिंग्वा संस्थान)	**''व्यक्तित्व विकास व अंग्रेजी दक्षता''** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बी.ए., बी. एस–सी., बी.कॉम. के लगभग 200 विद्यार्थी तथा प्राध्यापक आयोजन में सम्मिलित हुए।
41.	ज्ञान ज्योति कार्यक्रम	27/10/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री अनिल सारस्वत, सचिव विवेकानन्द कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टैक्नॉलोजी, अलीगढ़	महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गाँवों के गरीब व्यक्तियों के घर तथा सरकारी भवनों पर दीपावली के अवसर पर दीपक जलाने के लिए इन गाँवों के महाविद्यालय से जुड़े व्यक्तियों को तेल, दीपक तथा बातियाँ दी गयीं। दीपावली की रात को वे दीपक जलवाए गए।
42.	बी. टी. सी. के विद्यार्थियों का प्रतिभा परिचय एवं विदाई समारोह	09/11/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री सुधीर सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता एवं कार्यवाहक प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मडराक, अलीगढ़	बी.टी.सी. 2015 बैच के विद्यार्थियों ने अपना–अपना परिचय दिया। 2013 बैच के विद्यार्थियों को विदाई दी गयी। मनोरंजक क्विज व टास्क गेम्स आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।
43.	अमर उजाला फेम मिस नार्थ इण्डिया 2016 का सिटी राउण्ड	16/11/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री दीपक गोयल, चेयरमेन, ज्ञान महाविद्यालय	आयोजन महाविद्यालय परिसर में हुआ। हमारे महाविद्यालय की छात्राओं ने अच्छी प्रस्तुति दी।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
44.	महाविद्यालय में सेमीनार का आयोजन	18/11/16	....	''आज का शिक्षक कैसा हो'' विषय पर बी.एड. विभाग ने संगोष्ठी का आयोजन कर छः छात्राओं का चयन किया।
45.	संविधान दिवस का आयोजन	18/11/16	....	बी.एड. विभाग में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बी.एड. के प्राध्यापकगण तथा विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।
46.	रक्तदान शिविर	19/11/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री श्याम बहादुर सिंह, ए.डी.एम. (सिटी) ***विशिष्ट अतिथि :*** डॉ. ए. के. राजवंशी, मलखान सिंह जिला चिकित्सालय, अलीगढ़	महाविद्यालय परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों ने कुल मिलाकर 78 यूनिट रक्तदान किया।
47.	Personality Grooming तथा English Speaking की Training	21/11/16	***मुख्य प्रशिक्षक :*** श्री कैलाश उपाध्याय	इस दो माह के प्रशिक्षण में बी. ए., बी. कॉम. तथा बी.एस–सी. के विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।
48.	ज्ञान आई.टी.आई. में दो दिवसीय कार्यशाला	21 तथा 22 नवम्बर 2016	***प्रशिक्षक :*** **1.** श्री एम. के. शर्मा सहायक निदेशक, नेशनल पावर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट **2.** श्री अतीक अहमद (S.D.O.) सिंचाई विभाग **3.** श्री जवाहार लाल ई. ई. सिंचाई विभाग	इस कार्यशाला में आई.टी.आई. के 300 से अधिक प्रशिक्षु तथा अनुदेशकों ने भाग लिया। आई.टी.आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल तथा महा–विद्यालय प्रबंधन की डॉ. रितिका गोयल भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
49.	गणित विभाग में अतिथि व्याख्यान	23/11/16	***अतिथि वक्ता :*** डॉ. आसिफ खान, प्राध्यापक गणित विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़	***व्याख्यान का विषय :*** ''बेसिक नम्बर ऑफ थ्योरी''

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
50.	डॉ. कृष्णा गुप्ता मैमोरियल भाषण प्रतियोगिता	24/11/16	....	डॉ. कृष्णा गुप्ता के अलीगढ़ स्थित आवास पर आयोजित प्रतियोगिता में हमारे महा–विद्यालय की छः बी. एड. छात्राओं ने प्रतिभाग किया।
51.	स्टूडेन्टिंग ऐरा द्वारा रोजगार परक संगोष्ठी का आयोजन	28/11/16	***मुख्यवक्ता :*** 1. श्री राजादास गुप्ता मुख्य अधिशासी अधिकारी, 2. श्रीमती सरना, स्टूडेन्टिंग ऐरा	कला, वाणिज्य तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थी तथा प्राध्यापकों ने प्रतिभाग किया।
52.	महाविद्यालय की छात्राओं को सिलाई मशीन भेंट	28/11/16	....	28 नवम्बर व 11 दिसम्बर को स्वराज्य स्वावलम्बी योजना के तहत दो छात्राओं को उनके विवाह के अवसर पर एक–एक सिलाई मशीन भेंट की गई।
53.	हिन्दी विभाग में अतिथि व्याख्यान	29/11/16	***अतिथि वक्ता :*** डॉ. मंजू शर्मा, एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़	व्याख्यान का विषय, **'आज की युवा पीढ़ी में हिन्दी के प्रति उदासीनता'**
54.	स्टूडेन्टिंग ऐरा द्वारा द्वितीय चर्चा का आयोजन	01/12/16	***मुख्य प्रशिक्षक :*** 1. श्री अभिषेक जी 2. श्रीमती रुचिका शर्मा स्टूडेन्टिंग ऐरा	विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों को अच्छी नौकरियों में जाने हेतु मार्ग दर्शन किया गया।
55.	राजनीति शास्त्र विभाग में अतिथि व्याख्यान	01/12/16	***अतिथि वक्ता :*** डॉ. एन. के. सिंह, एसो. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़	व्याख्यान का विषय, **'भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों का महत्व'**
56.	कला एवं हस्त शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन	02/12/16	***निर्णायक मण्डल :*** 1. डॉ. ईश्वरचन्द्र गुप्ता एसो. प्रोफेसर, कला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय अलीगढ़ 2. डॉ. (श्रीमती) मनीषा शर्मा, प्राध्यापिका, कला विभाग टी. आर. कालिज, अलीगढ़	महाविद्यालय के कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा शिक्षक शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों ने अनेक प्रकार की पेन्टिंग रंगोली, चार्ट तथा हस्त शिल्प सम्बंधी वस्तुएँ निर्मित की।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
57.	वाणिज्य विभाग में अतिथि व्याख्यान	03/12/16	***अतिथि वक्ता :*** डॉ. मुहम्मद शोएब सहायक प्रोफेसर वाणिज्य संकाय अ.मु. विश्वविद्यालय अलीगढ़	***व्याख्यान का विषय :*** "Strategic Financial Decision Making"
58.	विज्ञान संकाय का शैक्षिक भ्रमण	03/12/16	....	विज्ञान संकाय के विद्यार्थी एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण हेतु अपने प्राध्यापकों के साथ आगरा गये।
59.	निर्धनों को गरम कपड़ों का वितरण	09/12/16	....	महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गाँवों के जरूरतमंद व्यक्तियों को पुराने गरम कपड़ों का वितरण सामाजिक सरोकार समिति के सदस्यों ने किया।
60.	अभिभावक – शिक्षक संवाद का आयोजन	10/12/16	....	कला, वाणिज्य, विज्ञान, प्रबन्धन तथा शिक्षक शिक्षा संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थी तथा उनके माता – पिता/अभिभावकों को बुलाकर सम्बंधित प्राध्यापकों ने उन्हें विद्यार्थी से सम्बंधित प्रगति से अवगत कराया।
61.	गोद लिए गए 14 गाँवों के निर्धन व्यक्तियों को कम्बल दिए गए	16/12/16	**मुख्य अतिथि :** डॉ. भानु प्रताप सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, (IGNOU) केन्द्र, अलीगढ़	प्रत्येक गाँव के पॉच-पॉच व्यक्तियों को एक-एक कम्बल महाविद्यालय प्रबंधन ने दिया।
62.	सामान्य ज्ञान प्रति-योगिता का आयोजन	20/12/16	....	बी.ए., बी.एस-सी., बी.कॉम. के 427 विद्यार्थी प्रतियोगिता में शामिल हुए। इसमें ओ. एम. आर. सीट का प्रयोग किया गया।

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
63.	राष्ट्रीय सेवा योजना के एक-एक दिवसीय तीन शिविरों का आयोजन	14, 19 और 22 दिसम्बर 2016	***मुख्य अतिथि :*** श्री यतेन्द्र पाल सिंह, ग्राम प्रधान, पड़ियावली	पड़ियावली गाँव में तीन शिविर लगाये। कार्यक्रम अधिकारी के साथ महाविद्यालय के प्राचार्य, उप प्राचार्य व प्राध्यापकों ने शिविर में सहयोग किया।
64.	बी.एड. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	23/12/16	....	बी. एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थी अपने प्राध्यापकों के साथ मथुरा – वृन्दावन गए।
65.	नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन	24/12/16	***मुख्य अतिथि :*** श्री वी. के. सिंह अपर आयुक्त, अलीगढ़ मण्डल	(PSRI) हॉस्पीटल, नई दिल्ली के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने हमारे महाविद्यालय में आकर 216 लोगों के स्वास्थ्य की जाँच कर नि:शुल्क परामर्श भी दिया।
66.	बी.टी.सी. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	28/12/16	....	बी.टी.सी. बैच 2014 के प्रशिक्षु अपने प्राध्यापकों के साथ मथुरा – वृन्दावन गए, वहाँ उन्होंने अनेक मंदिर तथा अन्य धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया।
67.	वाणिज्य संकाय का शैक्षिक भ्रमण	29/12/16	....	वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी अपने प्राध्यापकों के साथ मथुरा –वृन्दावन गये, अनेक मंदिरों व धार्मिक स्थलों को दिखाने के साथ–साथ विद्यार्थियों को अक्षय पात्र तथा फूड प्रोसेसिंग यूनिट के प्रबन्धकीय एवं वाणिज्यिक पक्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराया।
68.	सहभोज कार्यक्रम	02/01/17	....	महाविद्यालय के प्राध्यापक, विद्यार्थी, शिक्षणेत्तर वर्ग आदि के व्यक्ति अपने–अपने घरों से खाना लेकर आए। महाविद्यालय की संतोष वाटिका में सभी ने मिल बॉटकर एक दूसरे का खाना खाया

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
				तथा नव वर्ष का आनन्द मनाया। महाविद्यालय के चेयरमेन श्री दीपक गोयल व प्रबन्धक श्री मनोज यादव भी इस उत्सव में शामिल हुए।
69.	दंगल फिल्म दिखाई गई	05/01/17	....	महाविद्यालय प्रबन्धन ने सभी प्राध्यापक, विद्यार्थी तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों को स्थानीय अप्सरा टाकीज में प्रेरणा दायक दंगल फिल्म दिखवाई।
70	पतंग उड़ान प्रतियोगिता एवं अनाथालय को दाल–चावल दिए गए	13/01/17	....	महविद्यालय के सभी संकायों के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के खेल मैदान में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया। स्थानीय मदर टेरेसा अनाथालय में महाविद्यालय प्रबन्धन ने कच्चे चावल तथा दाल सहयोग के रूप में दिए। प्राध्यापकों ने अनाथालय जाकर चावल–दाल की बोरियाँ अनाथालय प्रबन्धन को दीं।
71.	राष्ट्रीय मतदाता दिवस के संदर्भ हैण्डराइटिंग प्रति–योगिता का आयोजन	18/01/17	....	अन्तर्महाविद्यालय स्तर की प्रतियोगिता में 5 कॉलेजों के 225 विद्यार्थियों ने भाग लिया: **प्रथम :** मेघाली गुप्ता (ज्ञान महाविद्यालय) **द्वितीय :** कविता राजपूत (ज्ञान महाविद्यालय) **तृतीय :** सिराजुद्दीन (एस. वी. महाविद्यालय)
72.	बी.एड. विभाग में अतिथि व्याख्यान	23/01/17	***अतिथि वक्ता :*** प्रोफेसर नक्खत नसरीन, शिक्षक शिक्षा विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	***व्याख्यान का विषय :*** **'शिक्षण कौशल, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक'**

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
73.	मतदाता जागरूकता पर महाविद्यालय प्रांगण में मानव श्रृंखला का आयोजन	24/01/17	....	एन.एस.एस. इकाई द्वारा **'मतदान 11 फरवरी, 2017'** नारा विद्यार्थियों द्वारा मानव श्रृंखला के साथ लिखा गया।
74.	राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जिला प्रशासन के आह्वान पर मानव श्रृंखला	24/01/17	....	एन.एस.एस. इकाई द्वारा सभी संकायों के सहयोग से सासनी गेट के रूसा हॉस्पीटल तक मतदान जागरूकता हेतु मानव श्रृंखला का आयोजन।
75.	मतदाता जागरूकता पर सम्मान	25/01/17	....	मण्डलायुक्त श्री सुभाष चन्द्र शर्मा व डी.एम. श्री हृरिकेश भास्कर द्वारा बी.एड. की छात्रा मेघाली गुप्ता व कार्यक्रम अधिकारी एन.एस.एस. डॉ. ललित उपाध्याय का सम्मान।
76.	गणतन्त्र दिवस समारोह	26/01/17	प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण।	विद्यार्थी, प्राध्यापक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों की उपस्थिति में प्राचार्य जी ने महाविद्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण किया।
77.	राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय आवासीय विशेष शिविर का आयोजन (ग्राम–पड़ियावली)	30/01/17 से 05/02/17 तक	**शुभारम्भ–** प्राचार्य व उप–प्राचार्य के द्वारा **समापन –** 1. श्री यतेन्द्रपाल सिंह ग्राम प्रधान, पड़ियावली 2. श्री दीपक गोयल सचिव 3. डॉ. गौतम गोयल 4. डॉ. वाई. के. गुप्ता के द्वारा	ग्राम पड़ियावली शिविर में मतदाता जागरूकता रैली, नुक्कड़ नाटक, डिजिटल इंडिया, स्वच्छता आदि विषयों पर व्याख्यान व पेन्टिंग एवं भाषण प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं दीवार स्लोगन लेखन, श्रमदान का आयोजन

स्व. श्री ब्रजेन्द्र मलिक

श्रद्धा सुमन

12 अगस्त, 2016 को ज्ञान महाविद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य **श्री ब्रजेन्द्र मलिक जी** का असामयिक निधन हो गया। ज्ञान परिवार इनके निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है तथा दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोक संतृप्त परिवार को इस असीम को दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने हेतु परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

ज्ञान महाविद्यालय की सहयोगी संस्था

ज्ञान प्राईवेट औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

(एन.सी.वी.टी. व श्रम मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त)

आगरा रोड, अलीगढ़ – 202002 (उ.प्र.)

(Graded by CARE Pvt. Ltd.)

Mob. : 9219419446 इलैक्ट्रीशियन एवं फिटर E-mail.: gyanitc@hotmail.com

ज्ञान प्राईवेट औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान प्राचार्य एवं स्टाफ

बढ़ते कदम

ज्ञान महाविद्यालय की सहयोगी संस्था

ज्ञान दीप प्राईवेट औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

(एन.सी.वी.टी. व श्रम मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त)

रूहेरी, अलीगढ़ रोड, हाथरस - 204101 (उ.प्र.)

इलैक्ट्रीशियन फिटर

Mob.: 9927091830, 9520513007 E-mail : gautamgoel123@hotmail.com

Tel.: +91-92194-19405
E-mail : gyanmv@gmail.com
Visit us : www.gyanmahavidhyalaya.com
gyanparivar

मुद्रक : नवमान आफसैट प्रिन्टर्स – 09358251032